

الْبَصِّ ① كِتَابٌ أَنْزَلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ

ऐ महबूब एक किताब तुम्हारी तरफ़ उतारी गई तो तुम्हारा जी इस से न रुके²

لِتُنذِرَ بِهِ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ② اِتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ إِلَيْكُم مِّنْ

इस लिये कि तुम इस से डर सुनाओ और मुसलमानों को नसीहत ऐ लोगो उस पर चलो जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब के पास

رَبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ③ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ④ وَكَمْ

से उतरा³ और उसे छोड़ कर हाकिमों के पीछे न जाओ बहुत ही कम समझते हो और कितनी

مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا أَوْ هُمْ قَائِلُونَ ⑤ فَمَا

ही बस्तियां हम ने हलाक कीं⁴ तो उन पर हमारा अज़ाब रात में आया या जब वोह दो पहर को सोते थे⁵ तो उन

كَانَ دَعْوَاهُمْ إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا إِلَّا أَنْ قَالُوا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ⑥

के मुंह से कुछ न निकला जब हमारा अज़ाब उन पर आया मगर येही बोले कि हम ज़ालिम थे⁶

فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ ⑦ فَلَنَقْصَنَّ

तो बेशक ज़रूर हमें पूछना है उन से जिन के पास रसूल गए⁷ और बेशक ज़रूर हमें पूछना है रसूलों से⁸ तो ज़रूर हम उन को

عَلَيْهِمْ بَعْلِمٍ وَمَا كُنَّا غَائِبِينَ ⑧ وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ⑨ فَنُنْزِلُ

बता देंगे⁹ अपने इल्म से और हम कुछ गाइब न थे और उस दिन तोल ज़रूर होनी है¹⁰ तो जिन

2 : ब ई खयाल कि शायद लोग न मानें और इस से ए'राज करें और इस की तक्ज़ीब के दरपै हों । 3 : या'नी कुरआन शरीफ़, जिस में हिदायत व नूर का बयान है । जज़्जाज ने कहा कि इत्तिबाअ करो कुरआन का और उस चीज़ का जो नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ लाए क्यूं कि येह सब **AL-BAHAR** का नाज़िल किया हुवा है जैसा कि कुरआन शरीफ़ में फ़रमाया : مَا كُنَّا نَسْأَلُكُمْ الرُّسُولَ فَخُذُوهُ...الآيَةَ या'नी जो कुछ रसूल तुम्हारे पास लाएँ उसे अख़ज़ (कबूल) करो और जिस से मन्अ फ़रमाएँ उस से बाज़ रहो । 4 : अब हुक्मे इलाही का इत्तिबाअ तर्क करने और उस से ए'राज करने के नताइज पिछली कौमों के हालात में दिखाए जाते हैं । 5 : मा'ना येह हैं कि हमारा अज़ाब ऐसे वक़्त आया जब कि उन्हें खयाल भी न था या तो रात का वक़्त था और वोह आराम की नींद सोते थे या दिन में कैलूला का वक़्त था और वोह मसरूफ़े राह़त थे न अज़ाब के नुज़ूल की कोई निशानी थी न क़रीना कि पहले से आगाह होते अचानक आ गया । इस से कुफ़्फ़ार को मुतनब्बेह किया जाता है कि वोह अस्बाबे अम्नो राह़त पर मगरूर न हों अज़ाबे इलाही जब आता है तो दफ़अतन आ जाता है । 6 : अज़ाब आने पर उन्हीं ने अपने ज़ुर्म का ए'तिराफ़ किया और उस वक़्त ए'तिराफ़ भी फ़ाएदा नहीं देता । 7 : कि उन्हीं ने रसूलों की दा'वत का क्या जवाब दिया और उन के हुक्म की क्या ता'मील की । 8 : कि उन्हीं ने अपनी उम्मतों को हमारे पयाम पहुंचाए और उन उम्मतों ने उन्हीं क्या जवाब दिया । 9 : रसूलों को भी और उन की उम्मतों को भी कि उन्हीं ने दुन्या में क्या किया । 10 : इस तरह कि **AL-BAHAR** **عُرُوبِل** एक मीज़ान काइम फ़रमाएगा जिस का हर एक पल्ला इतनी वुस्अत रखेगा जैसी मशरिफ़ व मगरिब के दरमियान वुस्अत है । इब्ने जूज़ी ने कहा कि हदीस में आया है कि हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَامُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में मीज़ान देखने की दरख़्वास्त की जब मीज़ान दिखाई गई और आप ने उस के पल्लों की वुस्अत देखी तो अर्ज़ किया : या रब ! किस का मक्दूर है कि इन को नेकियों से भर सके । इशाद हुवा कि ए दावूद मैं जब अपने बन्दों से राजी होता हूँ तो एक खज़ूर से इस को भर देता हूँ या'नी थोड़ी नेकी भी मक्बूल हो जाए तो फ़ज़ले इलाही से इतनी बढ़ जाती है कि मीज़ान को भर दे ।

ثَقُلْتُ مَوَازِينَهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمَفْلُحُونَ ٨ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ

के पल्ले भारी हुए¹¹ वोही मुराद को पहुंचे और जिन के पल्ले हलके हुए¹²

فَأُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ٩ وَ

तो वोही हैं जिन्होंने ने अपनी जान घाटे में डाली उन ज़ियादतियों का बदला जो हमारी आयतों पर करते थे¹³ और

لَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ٥ قَلِيلًا مَّا

बेशक हम ने तुम्हें ज़मीन में जमाव [ठिकाना] दिया और तुम्हारे लिये इस में ज़िन्दगी के अस्बाब बनाए¹⁴ बहुत ही कम

تَشْكُرُونَ ٦ وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ

शुक्र करते हो¹⁵ और बेशक हम ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक्शे बनाए फिर हम ने मलाएका से फ़रमाया कि

اسْجُدُوا لِلْآدَمَ ٧ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ٨ لَمْ يَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ٩

आदम को सज्दा करो तो वोह सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस यह सज्दे वालों में न हुवा

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ١٠ قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِي

फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि तू ने सज्दा न किया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया था¹⁶ बोला मैं उस से बेहतर हूँ तू ने मुझे

مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ١١ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ

आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया¹⁷ फ़रमाया तो यहाँ से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहाँ

تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّغِيرِينَ ١٢ قَالَ أَنظِرْنِي إِلَى يَوْمِ

रह कर गुरुर करे निकल¹⁸ तू है ज़िल्लत वालों में¹⁹ बोला मुझे फुरसत दे उस दिन तक कि

11 : नेकियां ज़ियादा हुई 12 : और उन में कोई नेकी न हुई, येह कुपफ़ार का हाल होगा जो ईमान से महरूम हैं और इस वजह से उन का कोई अमल मक्बूल नहीं। 13 : कि उन को छोड़ते थे झुटलाते थे और उन की इताअत से मुंह मोड़ते थे। 14 : और अपने फज़ल से तुम्हें राहतें दीं बा वुजूद इस के तुम 15 : शुक्र की हकीकत नेमत का तसव्वुर और उस का इज़हार है और ना शुक्र नेमत को भूल जाना और उस को छुपाना। 16 मस्अला : इस से साबित होता है कि अम्र वुजूब के लिये होता है और सज्दा न करने का सबब दरयाफ़्त फ़रमाना तौबीख के लिये है और इस लिये कि शैतान की मुआनदत (दुश्मनी) और उस का कुफ़्र व किब्र और अपनी अस्ल पर मुफ़्तख़िर (फ़ख़ करने वाला) होना और हज़रते आदम عليه السلام के अस्ल की तहकीर करना जाहिर हो जाए। 17 : इस से उस की मुराद येह थी कि आग मिट्टी से अफ़ज़लो आ'ला है तो जिस की अस्ल आग होगी वोह उस से अफ़ज़ल होगा जिस की अस्ल मिट्टी हो और उस ख़बीस का येह खयाल ग़लत व वातिल है क्यूं कि अफ़ज़ल वोह है जिसे मालिको मौला फ़ज़ीलत दे, फ़ज़ीलत का मदार अस्ल व जौहर पर नहीं बल्कि मालिक की इताअत व फ़रमां बरदारी पर है और आग का मिट्टी से अफ़ज़ल होना येह भी सहीह नहीं क्यूं कि आग में तैश व तेज़ी और तरफ़फ़ेअ (ऊपर की तरफ़ उठना) है येह सबब इस्तिक़वार (तक़व्वुर व गुरुर पैदा करने) का होता है और मिट्टी से वकार, हिलमो हया व सब्र हासिल होते हैं मिट्टी से मुल्क आबाद होते हैं, आग से हलाक, मिट्टी अमानत दार है जो चीज़ उस में रखी जाए उस को महफूज़ रखे और बढ़ाए, आग फना कर देती है, बा वुजूद इस के लुत्फ़ येह है कि मिट्टी आग को बुझा देती है और आग मिट्टी को फना नहीं कर सकती, इलावा बर्री हमाक़त व शकावत इब्लीस की येह कि उस ने नस्स के मौजूद होते हुए इस के मुकाबिल क़ियास किया और जो क़ियास कि नस्स के ख़िलाफ़ हो वोह ज़रूर मरदूद। 18 : जन्त से कि येह जगह इताअत व तवाजोअ वालों की है मुन्किर व सरकश की नहीं। 19 : कि इन्सान तेरी मज़म्मत करेगा और हर ज़बान

يُبْعَثُونَ ﴿١٣﴾ قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿١٥﴾ قَالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي

लोग उठाए जाएं फरमाया तुझे मोहलत है²⁰ बोला तो कसम इस की कि तू ने मुझे गुमराह किया

لَا قُعدَانٌ لَهُمْ صِرَاطُكَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿١٦﴾ ثُمَّ لَا تَيَبَّهُمْ مِّنْ بَيْنِ

में ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर उन की ताक में बैठूंगा²¹ फिर ज़रूर मैं उन के पास आऊंगा

أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ

उन के आगे और पीछे और दाहने और बाएं से²² और तू उन में

أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿١٤﴾ قَالَ أَخْرَجَ مِنْهَا مَذْعُورًا كَسُنَّ

अक्सर को शुक गुज़ार न पाएगा²³ फरमाया यहां से निकल जा रद किया गया रांदा (धुत्कारा) हुवा ज़रूर जो

تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَا مُلْكَ لَهُمْ مِنْكُمْ أَجْعَلِينَ ﴿١٨﴾ وَيَا آدَمُ اسْكُنْ

उन में से तेरे कहे पर चला मैं तुम सब से जहन्नम भर दूंगा²⁴ और ऐ आदम तू और

أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ

तेरा जोड़²⁵ जन्नत में रहो तो उस में से जहां चाहो खाओ और उस पेड़ के पास न जाना

فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾ فَسُوسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا

कि हृद से बढ़ने वालों में होंगे फिर शैतान ने उन के जी (दिल) में ख़तया डाला कि उन पर खोल दे

مَا وَرَآئَهُمَا مِنْ سَوَاتِيهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ

उन की शर्म की चीज़ें²⁶ जो उन से छुपी थीं²⁷ और बोला तुम्हें तुम्हारे रब ने इस

तुझ पर ला'नत करेगी और येही तकबुर वाले का अन्जाम है। 20 : और मुदत इस मोहलत की सूरए हिज़्र में बयान फरमाई गई "إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ٥ إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ" (तो तू मोहलत वालों में है उस जाने हुए वक़्त के दिन तक) और यह वक़्त नफ़ख़ए ऊला का है जब सब लोग मर जाएंगे शैतान ने मुर्दों के जिन्दा होने के वक़्त तक की मोहलत चाही थी और उस से उस का मतलब येह था कि मौत की सख़्ती से बच जाए येह क़बूल न हुवा और नफ़ख़ए ऊला तक की मोहलत दी गई। 21 : कि बनी आदम के दिल में वस्वसे डालूं और उन्हें बातिल की तरफ़ माइल करूं, गुनाहों की रबत दिलाऊं, तेरी इताअत और इबादत से रोकूं और गुमराही में डालूं। 22 : या'नी चारों तरफ़ से उन्हें घेर कर राहे रास्त से रोकूंगा। 23 : चूँकि शैतान बनी आदम को गुमराह करने और मुब्ललाए शहवात व क़बाएह करने में अपनी इन्तिहाई सई ख़र्च करने का अज़म कर चुका था इस लिये उसे गुमान था कि वोह बनी आदम को बहका लेगा। उन्हें फ़रेब दे कर खुदावन्दे आलम की ने'मतों के शुक़ और उस की इताअतों फ़रमां बरदारी से रोक देगा। 24 : तुझ को भी और तेरी जुरिय्यत को भी और तेरी इताअत करने वाले आदमियों को भी सब को जहन्नम में दाखिल किया जाएगा। शैतान को जन्नत से निकाल देने के बा'द हज़ुरते आदम को ख़िताब फ़रमाया जो आगे आता है। 25 : या'नी हज़ुरते हुवा 26 : या'नी ऐसा वस्वसा डाला कि जिस का नतीजा येह हो कि वोह दोनों आपस में एक दूसरे के सामने बरहना हो जाएं। इस आयत से येह मस्अला साबित हुवा कि वोह जिस्म जिस को औरत कहते हैं उस का छुपाना ज़रूरी और खोलना मन्अ है और येह भी साबित हुवा कि इस का खोलना हमेशा से अक़ल के नज़दीक मज़मूम और तबीअतों को ना गवार रहा है। 27 : इस से मा'लूम हुवा कि इन दोनों साहिबों ने अब तक एक दूसरे का सत्र न देखा था।

الشَّجَرَةَ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ ٢٠ وَقَاسَمَهُمَا

पेड़ से इसी लिये मन्अ फ़रमाया है कि कहीं तुम दो फ़िरिश्ते हो जाओ या हमेशा जीने वाले²⁸ और उन से कसम खाई

إِنِّي لَكُمَا مِنَ الصَّحِيحِينَ ٢١ فَذَلُّهُمَا بَعْرُورًا فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ

कि मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूँ तो उतार लाया उन्हें फ़रेब से²⁹ फिर जब उन्होंने ने वोह पेड़ चखा

بَدَتْ لَهُمَا سَاوَاتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَاقِ الْجَنَّةِ ٢٢ وَ

उन पर उन की शर्म की चीज़ें खुल गई³⁰ और अपने बदन पर जन्नत के पत्ते चिपटाने लगे और

نَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَأَقُلْتُ لَكُمَا إِنِ

उन्हें उन के रब ने फ़रमाया क्या मैं ने तुम्हें उस पेड़ से मन्अ न किया और न फ़रमाया था कि

الشَّيْطَانُ لَكُمْ آدُوٌّ مُبِينٌ ٢٣ قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ

शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है दोनों ने अर्ज की ऐ रब हमारे हम ने अपना आप बुरा किया तो अगर तू

تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ٢٤ قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ

हमें न बख़्शे और हम पर रहम न करे तो हम ज़रूर नुक़सान वालों में हुए फ़रमाया उतरो³¹ तुम में एक

لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ٢٥ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ٢٦ قَالَ

दूसरे का दुश्मन और तुम्हें ज़मीन में एक वक़्त तक ठहरना और बरतना है फ़रमाया

فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ ٢٧ يَبْنِيٰ آدَمَ قَدًّا

उसी में जियोगे और उसी में मरोगे और उसी में से उठाए जाओगे³² ऐ आदम की औलाद बेशक

أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِي سَوْآتِكُمْ وَرِيشًا ٢٨ وَ لِبَاسِ التَّقْوَىٰ ٢٩

हम ने तुम्हारी तरफ़ एक लिबास वोह उतारा कि तुम्हारी शर्म की चीज़ें छुपाए और एक वोह कि तुम्हारी आराइश हो³³ और परहेज़ ग़ारी का लिबास

28 : कि जन्नत में रहे और कभी न मरो । 29 : मा'ना येह हैं कि इब्लीस मलज़न ने झूटी कसम खा कर हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को धोका दिया और पहला झूटी कसम खाने वाला इब्लीस ही है, हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को गुमान भी न था कि कोई **اَبْلَاح** की कसम खा कर झूट बोल सकता है इस लिये आप ने उस की बात का ए'तिबार किया । 30 : और जन्नती लिबास जिस्म से जुदा हो गए और उन में एक दूसरे से अपना बदन छुपा न सका, उस वक़्त तक इन साहिबों में से किसी ने खुद भी अपना सत्र न देखा था और न उस वक़्त तक उन्हें इस की हाज़त पेश आई थी । 31 : ऐ आदम व हव्वा ! मज़ अपनी जुरिय्यत के जो तुम में है 32 : रोज़े कियामत हिसाब के लिये । 33 : या'नी एक लिबास तो वोह है जिस से बदन छुपाया जाए और सत्र किया जाए और एक लिबास वोह है जिस से ज़ीनत हो और येह भी गरज़ सहीह है ।

ذٰلِكَ خَيْرٌ ۙ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٣٤﴾ يٰبَنِي اٰدَمَ

वोह सब से भला³⁴ येह अल्लाह की निशानियों में से है कि कहीं वोह नसीहत माने ऐ आदम की औलाद³⁵

لَا يَفْتِنٰكُمْ الشَّيْطٰنُ كَمَا اَخْرَجَ اٰبَوَيْكُمْ مِنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا

खबरदार तुम्हें शैतान फितने में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बिहिश्त से निकाला उतरवा दिये उन

لِبَاسِهٖمَا لِيُرِيَهُمَا سَوَاتِيَهُمَا ۙ اِنَّهٗ يَرٰكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ

के लीबास कि उन की शर्म की चीजें उन्हें नज़र पड़ें बेशक वोह और उस का कुम्बा तुम्हें वहां से देखते हैं कि

لَا تَرَوْهُمْ ۙ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيْطٰنَ اَوْلِيَّاءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٥﴾

तुम उन्हें नहीं देखते³⁶ बेशक हम ने शैतानों को उन का दोस्त किया है जो ईमान नहीं लाते

وَ اِذَا فَعَلُوْا فَاِحْسَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَا اٰبَاءَنَا وَ اللّٰهُ اَمْرًا نَّابِهًا ۙ

और जब कोई बे हयाई करे³⁷ तो कहते हैं हम ने इस पर अपने बाप दादा को पाया और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया³⁸

قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ۙ اتَّقُوْا اللّٰهَ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

तुम फ़रमाओ बेशक अल्लाह बे हयाई का हुक्म नहीं देता क्या अल्लाह पर वोह बात लगाते हो जिस की तुम्हें खबर नहीं

قُلْ اَمْرًا رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۙ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ

तुम फ़रमाओ मेरे रब ने इन्साफ़ का हुक्म दिया है और अपने मुंह सीधे करो हर नमाज़ के वक़्त और उस की इबादत करो

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ كَمَا بَدَا لَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَرِيْقًا هٰدِي

निरे [ख़ालिस] उस के बन्दे हो कर जैसे उस ने तुम्हारा आगाज़ किया वैसे ही पलटोगे³⁹ एक फ़िके को राह दिखाई⁴⁰

34 : परहेज़ गारी का लीबास ईमान, हया, नेक ख़स्लतें, नेक अमल हैं येह बेशक लीबासे ज़ीनत से अफ़ज़ल व बेहतर हैं। 35 : शैतान की कय्यादी (मक्कारी) और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ उस की अ़दावत का बयान फ़रमा कर बनी आदम को मुतनब्बेह और होशियार किया जाता है कि वोह शैतान के वस्वसे और इग़वा (बहकावे) और उस की मक्कारियों से बचते रहें, जो हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ ऐसी फ़रेब कारी कर चुका है वोह उन की औलाद के साथ कब दर गुज़र करने वाला है। 36 : अल्लाह तआला ने जिनों को ऐसा इद्राक दिया है कि वोह इन्सानों को देखते हैं और इन्सानों को ऐसा इद्राक नहीं मिला कि वोह जिनों को देख सकें। हदीस शरीफ़ में है कि शैतान इन्सान के जिस्म में ख़ून की राहों में पैर (समा) जाता है। हज़रते ज़ुनून رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने फ़रमाया कि अगर शैतान ऐसा है कि वोह तुम्हें देखता है तुम उसे नहीं देख सकते तो तुम ऐसे से मदद चाहो जो उस को देखता हो और वोह उसे न देख सके या'नी अल्लाह करीम सत्तार रहीम गुफ़फ़ार से मदद चाहो। 37 : और कोई कबीह फ़े'ल या गुनाह उन से सादिर हो जैसा कि ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग मर्द व औरत नंगे हो कर का'बए मुअज़्ज़मा का त्वाफ़ करते थे। अता का कौल है कि बे हयाई शिक है और हकीकत येह है कि हर कबीह फ़े'ल और तमा मअ़ासी व कबाइर इस में दाख़िल हैं अगर्व येह आयत ख़ास नंगे हो कर त्वाफ़ करने के बारे में आई हो। जब कुफ़फ़ार की ऐसी बे हयाई के कामों पर उन की मज़म्मत की गई तो इस पर उन्होंने ने जो कहा वोह आगे आता है। 38 : कुफ़फ़ार ने अपने अफ़आले कबीहा के दो उज़्र बयान किये एक तो येह कि उन्होंने ने अपने बाप दादा को येही फ़े'ल करते पाया लिहाज़ा उन की इत्तिबाअ में येह भी करते हैं येह तो जाहिल बदकार की तक्लीद हुई और येह किसी साहिबे अक्ल के नज़्दीक जाइज़ नहीं। तक्लीद की जाती है अहले इल्मो तक्वा की न कि जाहिल गुमराह की। दूसरा

وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۗ إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ

और एक फिर्के की गुमराही साबित हुई⁴¹ उन्होंने ने **अल्लाह** को छोड़ कर शैतानों

دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُهْتَدُونَ ۚ ﴿٣٠﴾ يَبْنِي آدَمَ خُدُودًا زَيْنَتَكُمْ

को वाली बनाया⁴² और समझते येह हैं कि वोह राह पर हैं ऐ आदम की औलाद अपनी ज़ीनत लो

عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ

जब मस्जिद में जाओ⁴³ और खाओ और पियो⁴⁴ और हद से न बढ़ो बेशक हद से बढ़ने वाले

السُّرْفِينَ ۗ ﴿٣١﴾ قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ

उसे पसन्द नहीं तुम फ़रमाओ किस ने ह़राम की **अल्लाह** की वोह ज़ीनत जो उस ने अपने बन्दों के लिये निकाली⁴⁵ और पाक

مِنَ الرِّزْقِ ۗ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ

रिज़क⁴⁶ तुम फ़रमाओ कि वोह ईमान वालों के लिये है दुनिया में और क़ियामत में तो ख़ास

الْقِيَامَةِ ۗ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ۗ ﴿٣٢﴾ قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ

उन्हीं की है हम यूँही मुफ़स्सल आयतें बयान करते हैं⁴⁷ इल्म वालों के लिये⁴⁸ तुम फ़रमाओ मेरे

उज़्र उन का येह था कि **अल्लाह** ने उन्हें इन अफ़्आल का हुक्म दिया है येह महज़ इफ़्तिरा व बोहतान था। चुनान्चे **अल्लाह** तबारक व तआला रद फ़रमाता है **39** : या'नी जैसे उस ने तुम्हें नीस्त से हस्त किया ऐसे ही बा'दे मौत ज़िन्दा फ़रमाएगा, येह उख़वी ज़िन्दागी का इन्कार करने वालों पर हुज्जत है और इस से येह भी मुस्तफ़ाद होता है कि जब उसी की तरफ़ पलटना है और वोह आ'माल की जज़ा देगा तो ताआत व इबादात को उस के लिये ख़ालिस करना ज़रूरी है। **40** : ईमान व मा'रिफ़त की और उन्हें ताआत व इबादात की तौफ़ीक़ दी। **41** : वोह कुफ़्फ़ार हैं **42** : उन की इताआत की, उन के कहे पर चले, उन के हुक्म से कुफ़्र व मआसी को इख़्तियार किया। **43** : या'नी लिबासे ज़ीनत और एक कौल येह है कि कंधी करना, खुशबू लगाना दाख़िले ज़ीनत है। **मसआला** : और सुन्नत येह है कि आदमी बेहतर है अत के साथ नमाज़ के लिये हाज़िर हो क्यूं कि नमाज़ में रब से मुनाजात है तो इस के लिये ज़ीनत करना, इत्र लगाना मुस्तहब जैसा कि सत्रे औरत वाजिब है। **शाने नुजूल** : मुस्लिम शरीफ़ की ह़दीस में है कि ज़मानए जाहिलिय्यत में दिन में मर्द और रात में औरतें नंगे हो कर तवाफ़ करते थे। इस आयते करीमा में सत्र छुपाने और कपड़े पहनने का हुक्म दिया गया और इस में दलील है कि सत्रे औरत नमाज़ व तवाफ़ और हर हाल में वाजिब है। **44** **शाने नुजूल** : कलबी का कौल है कि बनी अमिर ज़मानए हज़ में अपनी ख़ूराक बहुत ही कम कर देते थे और गोशत और चिकनाई तो बिल्कुल खाते ही न थे और इस को हज़ की ता'ज़ीम जानते थे, मुसल्मानों ने उन्हें देख कर अर्ज़ किया : **या रसूलल्लाह!** हमें ऐसा करने का ज़ियादा हक़ है इस पर येह नाज़िल हुवा कि खाओ और पियो गोशत हो ख़्वाह चिकनाई हो और इसराफ़ न करो और वोह येह है कि सेर हो चुकने के बा'द भी खाते रहो या ह़राम की परवाह न करो और येह भी इसराफ़ है कि जो चीज़ **अल्लाह** तआला ने ह़राम नहीं की उस को ह़राम कर लो। हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने फ़रमाया : खा जो चाहे और पहन जो चाहे इसराफ़ और तकब्बुर से बचता रह। **मसआला** : आयत में दलील है कि खाने और पीने की तमाम चीज़ें हलाल हैं सिवाए उन के जिन पर शरीअत में दलीले हुरमत काइम हो क्यूं कि येह काइदा मुकर्ररा मुसल्लमा है कि अस्ल तमाम अश्या में इबाहत है मगर जिस पर शारेअ ने मुमानअत फ़रमाई हो और उस की हुरमत दलीले मुस्तक़िल से साबित हो। **45** : ख़्वाह लिबास हो या और सामाने ज़ीनत **46** : और खाने पीने की लज़ीज़ चीज़ें। **मसआला** : आयत अपने उमूम पर है हर खाने की चीज़ इस में दाख़िल है कि जिस की हुरमत पर नस्स वारिद न हुई हो। (نارن) तो जो लोग तोशए ग्यारहवीं शरीफ़, मीलाद शरीफ़, बुजुर्गी की फ़ातिहा, उर्स, मजालिसे शहादत वगैरा की शीरीनी, सबील के शरबत को मन्मूअ कहते हैं वोह इस आयत के ख़िलाफ़ कर के गुनहगार होते हैं और इस को मन्मूअ कहना अपनी राय को दीन में दाख़िल करना है और येही बिद्अत व ज़लालत है। **47** : जिन से हलाल व ह़राम के अहक़ाम मा'लूम हों। **48** : जो येह जानते हैं कि **अल्लाह** "واجِدًا لَشْرِيكَ لَه" है वोह जो ह़राम करे वोही ह़राम है।

رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ

रब ने तो वे हयाइयां हराम फरमाई हैं⁴⁹ जो उन में खुली हैं और जो छुपी और गुनाह और नाहक ज़ियादती

وَأَنْ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَنْ تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا

और येह⁵⁰ कि **اللَّهُ** का शरीक करो जिस की उस ने सनद न उतारी और येह⁵¹ कि **اللَّهُ** पर वोह बात कहे जिस

لَا تَعْلَمُونَ ۝ ٣٢ ۝ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجْلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ

का इल्म नहीं रखते और हर गुरौह का एक वा'दा है⁵² तो जब उन का वा'दा आएगा एक घड़ी न

سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ ۝ ٣٣ ۝ يُبَيِّنُ آدَمَ إِسْمًا يَأْتِيكُمْ رَسُولٌ مِّنْكُمْ

पीछे हो न आगे ऐ आदम की औलाद अगर तुम्हारे पास तुम में के रसूल आए⁵³

يُقِصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي ۖ فَسِنِ اتَّقِي وَأَصْلِحَ فَلَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

मेरी आयतें पढ़ते तो जो परहेज गारी करे⁵⁴ और संकरे⁵⁵ तो उस पर न कुछ खौफ और न

يَحْزَنُونَ ۝ ٣٥ ۝ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَٰئِكَ

कुछ गम और जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाई और उन के मुक़ाबिल तकबुर किया वोह

أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ ٣٦ ۝ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَىٰ

दोज़खी हैं उन्हें उस में हमेशा रहना तो उस से बड़ कर जालिम कौन जिस ने

اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۖ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِّنَ الْكِتَابِ ۖ

اللَّهُ पर झूट बांधा या उस की आयतें झुटलाई उन्हें उन के नसीब का लिखा पहुंचेगा⁵⁶

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ رَسُولُنَا يُوقِنُوهُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا كُنْتُمْ تَدْعُونَ

यहां तक कि जब उन के पास हमारे भेजे हुए⁵⁷ उन की जान निकालने आए तो उन से कहते हैं कहां हैं वोह जिन को तुम

49 : येह ख़िताब मुश्रिकीन से है जो बरहना हो कर खानए का'बा का तवाफ़ करते थे और **اللَّهُ** तआला की हलाल की हुई पाक चीज़ों को हराम कर लेते थे, उन से फ़रमाया जाता है कि **اللَّهُ** ने येह चीज़ें हराम नहीं कीं और उन से अपने बन्दों को नहीं रोका, जिन चीज़ों को उस ने हराम फ़रमाया वोह येह हैं जो **اللَّهُ** तआला बयान फ़रमाता है, उन में से वे हयाइयां हैं जो खुली हुई हों या छुपी हुई कौली हों या फ़े'ली । 50 : हराम किया 51 : हराम किया 52 : वक़्ते मुअय्यन जिस पर मोहलत ख़त्म हो जाती है । 53 : मुफ़स्सरीन के इस में दो कौल हैं : एक तो येह कि रसूल से तमाम मुर्सलीन मुराद हैं । दूसरा येह कि ख़ास सय्यिदे आलम ख़ातमूल अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَامُ** मुराद हैं जो तमाम ख़ल्क की तरफ़ रसूल बनाए गए हैं और सीगए जम्अ ता'ज़ीम के लिये है । 54 : मन्मूआत से बचे 55 : ताआत व इबादात बजा लाए 56 : या'नी जितनी उग्र और रोज़ी **اللَّهُ** ने उन के लिये लिख दी है उन को पहुंचेगी । 57 : मलकुल मौत और उन के आ'वान (दूसरे मददगार फ़िरिस्ते) उन लोगों की उम्रें और रोज़ियां पूरी होने के बा'द ।

مِنْ دُونَ اللَّهِ ط قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا عَلَيَّ اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوا

अल्लाह के सिवा पूजते थे कहते हैं वोह हम से गुम गए⁵⁸ और अपनी जानों पर आप गवाही देते हैं कि वोह

كُفْرَيْنَ ۝۲۷ قَالَ اَدْخُلُوْا فِيْ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ

काफिर थे अल्लाह उन से⁵⁹ फरमाता है कि तुम से पहले जो और जमाअतें जिन्न और आदमियों की

وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ط كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَعَنَتْ اُخْتَهَا ۗ حَتَّىٰ اِذَا

आग में गई उन्हीं में जाओ जब एक गुरोह⁶⁰ दाखिल होता है दूसरे पर ला'नत करता है⁶¹ यहां तक कि जब

اِذَا رَاكُوفِيْهَا جَمِيْعًا ۗ قَالَتْ اٰخِرُهُمْ لِاَوْلٰٓئِهِمْ رَبَّنَا هٰؤُلَاءِ اَضَلُّوْنَا

सब उस में जा पड़े तो पिछले पहलों को कहेंगे⁶² ऐ रब हमारे उन्हीं ने हम को बहकाया था

فَاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَبَاسٌ ۗ قَالَ لِكُلِّ ضِعْفٍ وَلٰكِنْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۲۸

तो उन्हें आग का दूना (दुगना) अज़ाब दे फरमाएगा सब को दूना है⁶³ मगर तुम्हें ख़बर नहीं⁶⁴

وَقَالَتْ اَوْلٰٓئِهِمْ لِاٰخِرِهِمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فذُوْقُوا

और पहले पिछलों से कहेंगे तो तुम कुछ हम से अच्छे न रहे⁶⁵ तो चखो

الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝۲۹ اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا

अज़ाब बदला अपने किये का⁶⁶ वोह जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाई

وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تَفْتَحْ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمٰوٰتِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ

और उन के मुक़ाबिल तकबुर किया उन के लिये आस्मान के दरवाज़े न खोले जाएंगे⁶⁷ और न वोह जन्नत में दाखिल हों

حَتَّىٰ يَدْبَجَ الْجَبَلَ فِيْ سَمِّ الْخِيَابِ ط وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ۝۳۰

जब तक सूई के नाके ऊंट न दाखिल हो⁶⁸ और मुजरिमों को हम ऐसा ही बदला देते हैं⁶⁹

58 : उन का कहीं नामो निशान ही नहीं 59 : उन काफ़िरों से रोज़े कियामत 60 : दोज़ख़ में 61 : जो उस के दीन पर था तो मुशिरक मुशिरकों पर ला'नत करेंगे और यहूद यहूदियों पर और नसारा नसारा पर 62 : या'नी पहलों की निस्बत अल्लाह तआला से कहेंगे 63 : क्यूं कि पहले खुद भी गुमराह हुए और उन्हीं ने दूसरों को भी गुमराह किया और पिछले भी ऐसे ही हैं कि खुद गुमराह हुए और गुमराहों का ही इत्तिबाअ करते रहे। 64 : कि तुम में से हर फ़रीक के लिये कैसा अज़ाब है। 65 : कुफ़्रो ज़लाल में दोनों बराबर हैं। 66 : कुफ़्र का और आ'माले ख़बीसा का। 67 : न उन के आ'माल के लिये न उन की अरवाह के लिये क्यूं कि उन के आ'माल व अरवाह दोनों ख़बीस हैं। हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने फ़रमाया कि कुफ़्र की अरवाह के लिये आस्मान के दरवाज़े नहीं खोले जाते और मोमिनीन की अरवाह के लिये खोले जाते हैं। इब्ने जुरैज ने कहा कि आस्मान के दरवाज़े न काफ़िरों के आ'माल के लिये खोले जाएं न अरवाह के लिये या'नी न जिन्दगी में उन का अमल ही आस्मान पर जा सकता है न बा'दे मौत रूह। इस आयत की तफ़सीर में एक कौल येह भी है कि आस्मान के दरवाज़े न खोले जाने के येह मा'ना हैं कि वोह ख़ैरो बरकत और रहमत के नुज़ूल से महरूम रहते हैं। 68 : और येह

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ط وَكَذَلِكَ نَجْزِي

उन्हें आग ही बिछोना और आग ही ओढ़ना⁷⁰ और ज़ालिमों को हम ऐसा ही

الظَّالِمِينَ ﴿٣١﴾ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا

बदला देते हैं और वोह जो ईमान लाए और ताकत भर अच्छे काम किये हम किसी पर ताकत से ज़ियादा

وَسُعَهَا ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٢﴾ وَنَزَعْنَا مَا

बोझ नहीं रखते वोह जन्नत वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना और हम ने उन के

فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غَلٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ إِلَّا نُهْرُجُ وَقَالُوا الْحُكْدُ لِلَّهِ

सीनों में से कीने खींच लिये⁷¹ उन के नीचे नहरें बहेगी और कहेंगे⁷² सब खूबियां **اللَّهُ** को

الَّذِي هَدَيْنَا هَذَا ۖ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَيْنَا اللَّهُ لَقَدْ

जिस ने हमें उस की राह दिखाई⁷³ और हम राह न पाते अगर **اللَّهُ** न दिखाता बेशक

جَاءَتْ رُسُلٌ رَّبِّنَا بِالْحَقِّ ط وَنُودُوا أَنْ تِلْكَمُ الْجَنَّةُ أَوْرَثْتُمُوهَا

हमारे रब के रसूल हक़ लाए⁷⁴ और निदा हुई कि येह जन्नत तुम्हें मीरास मिली⁷⁵

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٣٣﴾ وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَنْ قَدْ

सिला तुम्हारे आ'माल का और जन्नत वालों ने दोज़ख़ वालों को पुकारा कि

وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا

हमें तो मिल गया जो सच्चा वा'दा हम से हमारे रब ने किया था⁷⁶ तो क्या तुम ने भी पाया जो तुम्हारे रब ने⁷⁷ सच्चा वा'दा तुम्हें दिया था बोले

मुहाल तो कुफ़र का जन्नत में दाख़िल होना मुहाल क्यूं कि मुहाल पर जो मौक़ूफ़ हो वोह मुहाल होता है, इस से साबित हुवा कि कुफ़र का जन्नत से महरूम रहना कर्द् है। 69 : मुजरमीन से यहां कुफ़र मुराद हैं क्यूं कि ऊपर इन की सिफ़त में आयाते इलाहियह की तक़ीब और उन से तक़बुर करने का बयान हो चुका है। 70 : या'नी ऊपर नीचे हर तरफ़ से आग उन्हें घेरे हुए है। 71 : जो दुन्या में उन के दरमियान थे और तबीअतें साफ़ कर दी गईं और उन में आपस में न बाकी रही मगर महब्वत व मुवद्दत (प्यार)। हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा **رضي الله عنه** ने फ़रमाया कि येह हम अहले बद्र के हक़ में नाज़िल हुवा और येह भी आप से मरवी है कि आप ने फ़रमाया : मुझे उम्मीद है कि मैं और उस्मान और तल्हा और जुबैर उन में से हों जिन के हक़ में **اللَّهُ** तआला ने "وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غَلٍ" फ़रमाया। हज़रत अलिय्ये मुर्तज़ा के इस इशार्द ने रिफ़ज़ (राफ़िज़ियों के अक़ीदे) की बेखो बुन्याद का क़लअ क़म्अ कर दिया। 72 : मोमिनीन जन्नत में दाख़िल होते वक़्त 73 : और हमें ऐसे अमल की तौफ़ीक़ दी जिस का येह अज़्रो सवाब है और हम पर फ़ज़लो रद्दमत फ़रमाई और अपने करम से अज़ाबे जहन्नम से महफूज़ किया। 74 : और जो उन्होंने ने हमें दुन्या में सवाब की ख़बरें दीं वोह सब हम ने इयां देख लीं, उन की हिदायत हमारे लिये कमाले लुत्फ़ो करम था। 75 : मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है : जब जन्ती जन्नत में दाख़िल होंगे एक निदा करने वाला पुकारेगा तुम्हारे लिये जिन्दगानी है कभी न मरोगे, तुम्हारे लिये तन्दुरुस्ती है कभी बीमार न होगे, तुम्हारे लिये ऐश है कभी तंगहाल न होगे। जन्नत को मीरास फ़रमाया गया इस में इशारा है कि वोह महज़ **اللَّهُ** के फ़ज़ल से हासिल हुई। 76 : और रसूलों ने फ़रमाया था कि ईमान व ताअत पर अज़्रो सवाब पाओगे। 77 : कुफ़र व ना फ़रमानी पर अज़ाब का।

نَعَمْ ۚ فَادْنُ مَوْذِنٌ بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۴﴾ الَّذِيْنَ

हां और बीच में मुनादी ने पुकार दिया कि **अल्लाह** की ला'नत ज़ालिमों पर जो

يُصَدُّوْنَ عَنِ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عَوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ

अल्लाह की राह से रोकते हैं⁷⁸ और उसे कजी चाहते हैं⁷⁹ और आखिरत का

كُفْرُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ

इन्कार रखते हैं और जन्नत व दोज़ख के बीच में एक पर्दा है⁸⁰ और आ'राफ़ पर कुछ मर्द होंगे⁸¹ कि दोनों फ़रीक को

كَلَّا بِسِيْئِهِمْ ۚ وَنَادَوُا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ اَنْ سَلِّمْ عَلَيَّكُمْ لَمْ

उन की पेशानियों से पहचानेंगे⁸² और वोह जन्नतियों को पुकारेंगे कि सलाम तुम पर येह⁸³

يَدُ خُلُوْهَا وَهُمْ يَطْبَعُوْنَ ﴿۳۶﴾ وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تَلَقَّاءُ اَصْحٰبِ

जन्नत में न गए और इस की तमअ रखते हैं और जब उन की⁸⁴ आंखें दोज़खियों की तरफ़

النّٰرِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۳۷﴾ وَنَادٰى اَصْحٰبُ

फिरेंगी कहेंगे ऐ हमारे रब हमें ज़ालिमों के साथ न कर और आ'राफ़ वाले

الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْئِهِمْ قَالُوْا مَا اَغْنٰى عَنْكُمْ جَبْعُكُمْ

कुछ मर्दों को⁸⁵ पुकारेंगे जिन्हें उन की पेशानी से पहचानते हैं कहेंगे तुम्हें क्या काम आया तुम्हारा जथ्था

78 : और लोगों को इस्लाम में दाखिल होने से मन्अ करते हैं। **79 :** या'नी येह चाहते हैं कि दीने इलाही को बदल दें और जो तरीका **अल्लाह** तआला ने अपने बन्दों के लिये मुकर्रर फरमाया है उस में तगय्युर डाल दें। **80 :** जिस को आ'राफ़ कहते हैं। **81 :** येह किस तबके के होंगे इस में बहुत मुख्तलिफ़ अक्वाल हैं : एक कौल तो येह है कि येह वोह लोग होंगे जिन की नेकियां और बदियां बराबर हों वोह आ'राफ़ पर ठहरे रहेंगे जब अहले जन्नत की तरफ़ देखेंगे तो उन्हें सलाम करेंगे और दोज़खियों की तरफ़ देखेंगे तो कहेंगे या रब ! हमें ज़ालिम कौम के साथ न कर। आखिर कार जन्नत में दाखिल किये जाएंगे, एक कौल येह है कि जो लोग जिहाद में शहीद हुए मगर उन के वालिदैन उन से नाराज़ थे वोह आ'राफ़ में ठहराए जाएंगे, एक कौल येह है : जो लोग ऐसे हैं कि उन के वालिदैन में से एक उन से राज़ी हो, एक नाराज़ वोह आ'राफ़ में रखे जाएंगे। इन अक्वाल से मा'लूम होता है कि अहले आ'राफ़ का मर्तबा अहले जन्नत से कम है। मुजाहिद का कौल येह है : आ'राफ़ में सुलहा, फुकरा, उलमा होंगे और उन का वहां कियाम इस लिये होगा कि दूसरे उन के फज़्लो शरफ़ को देखें। और एक कौल येह है कि आ'राफ़ में अम्बिया होंगे और वोह इस मकाने आली में तमाम अहले कियामत पर मुमताज़ किये जाएंगे और उन की फज़ीलत और रुत्बए आलिया का इज़हार किया जाएगा ताकि जन्नती और दोज़खी उन को देखें और वोह उन सब के अहवाल और सवाब व अज़ाब के मिक्दार व अहवाल का मुआयना करें। इन कौलों पर अस्हाबे आ'राफ़ जन्नतियों में से अफज़ल लोग होंगे क्यूं कि वोह बाकियों से मर्तबे में आ'ला हैं। इन तमाम अक्वाल में कुछ तनाकुज़ (टकराव) नहीं है इस लिये कि येह हो सकता है कि हर तबके के लोग आ'राफ़ में ठहराए जाएं और हर एक के ठहराने की हिकमत जुदागाना हो। **82 :** दोनों फ़रीक़ से जन्नती और दोज़खी मुराद हैं, जन्नतियों के चेहरे सफेद और तर्रो ताज़ा होंगे और दोज़खियों के चेहरे सियाह और आंखें नीली, येही उन की अलामतें हैं। **83 :** आ'राफ़ वाले अभी तक **84 :** आ'राफ़ वालों की **85 :** कुपफ़ार में से

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ ﴿٣٨﴾ اَهْوَلَاءِ الَّذِينَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَبَالُهُمُ اللّٰهُ

और वोह जो तुम गुरुर करते थे⁸⁶ क्या येह हैं वोह लोग⁸⁷ जिन पर तुम कसमें खाते थे कि **अल्लाह** उन को अपनी रहमत कुछ

بِرَحْمَةٍ اَدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا اَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٣٩﴾

न करेगा⁸⁸ उन से तो कहा गया कि जन्नत में जाओ न तुम को अन्देशा न कुछ ग़म

وَنَادَى اَصْحَابُ النَّارِ اَصْحَابَ الْجَنَّةِ اَنْ اَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ

और दोज़खी बिहिश्तियों को पुकारेंगे कि हमें अपने पानी का कुछ फ़ैज़ दो

اَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ط قَالُوا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهَا عَلَي الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٠﴾

या उस खाने का जो **अल्लाह** ने तुम्हें दिया⁸⁹ कहेंगे बेशक **अल्लाह** ने इन दोनों को काफ़िरों पर ह़राम किया है

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلِعْبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ج

जिन्हों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया⁹⁰ और दुनिया की ज़िस्त ने उन्हें फ़रेब दिया⁹¹

فَالْيَوْمَ نُنَسِّهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا وَّمَا كَانُوْا بِآيٰتِنَا

तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे जैसा उन्होंने ने उस दिन के मिलने का खयाल छोड़ा था और जैसा हमारी आयतों से

يَجْحَدُوْنَ ﴿٤١﴾ وَّلَقَدْ جِئْتُم بِكِتٰبٍ فَصَلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدٰى وَّرٰحْمَةٍ

इन्कार करते थे और बेशक हम उन के पास एक किताब लाए⁹² जिसे हम ने एक बड़े इल्म से मुफ़स्सल किया हिदायत व रहमत

لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤٢﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهُ ط يَوْمَ يٰٓأْتِي تَاْوِيْلَهُ

ईमान वालों के लिये काहे की राह देखते हैं मगर उस की, कि इस किताब का कहा हुवा अन्जाम सामने आए जिस दिन इस का बताया अन्जाम वाक़ेअ़ होगा⁹³

يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلٌ رَّبِّنَا بِالْحَقِّ ج

बोल उठेंगे वोह जो इसे पहले से भुलाए बैठे थे⁹⁴ कि बेशक हमारे रब के रसूल हक़ लाए थे

86 : और अहले आ'राफ़ ग़रीब मुसलमानों की तरफ़ इशारा कर के कुफ़्फ़र से कहेंगे 87 : जिन को तुम दुनिया में हक़ीर समझते थे और 88 : अब देख लो कि जन्नत के दाइमी ऐशो राहत में किस इज़्जतो एहतिराम के साथ हैं । 89 : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنهما से मरवी है कि जब आ'राफ़ वाले जन्नत में चले जाएंगे तो दोज़खियों को भी तमअ़ दामनगीर होगी और वोह अर्ज़ करेंगे : या रब ! जन्नत में हमारे रिश्तेदार हैं इजाज़त फ़रमा कि हम उन्हें देखें उन से बात करें, इजाज़त दी जाएगी तो वोह अपने रिश्तेदारों को जन्नत की ने'मतों में देखेंगे और पहचानेंगे लेकिन अहले जन्नत उन दोज़खी रिश्तेदारों को न पहचानेंगे क्यूं कि दोज़खियों के मुंह काले होंगे, सूरतें बिगड़ गई होंगी तो वोह जन्नतियों को नाम ले ले कर पुकारेंगे कोई अपने बाप को पुकारेगा, कोई भाई को और कहेगा मैं जल गया मुझ पर पानी डालो और तुम्हें **अल्लाह** ने दिया है खाने को दो, इस पर अहले जन्नत 90 : कि हलाल व ह़राम में अपनी हवाए नफ़स के ताबेअ़ हुए, जब ईमान की तरफ़ उन्हें दा'वत दी गई मस्ख़रगी करने लगे । 91 : उस की लज़्जतों में आख़िरत को भूल गए । 92 : कुरआन शरीफ़ 93 : और वोह रोजे क़ियामत है । 94 : न उस पर ईमान लाते थे न उस के मुताबिक़ अमल

فَهَلْ لَنَا مِنْ شَفَعَاءٍ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلْ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا

तो हैं कोई हमारे सिफारिशी जो हमारी शफाअत करें या हम वापस भेजे जाएं कि पहले कामों के खिलाफ

نَعْمَلُ ٥٣ قَدْ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ٥٤

काम करें⁹⁵ बेशक उन्होंने ने अपनी जाने नुकसान में डालीं और उन से खोए गए जो बोहतान उठाते थे⁹⁶

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ

बेशक तुम्हारा रब **اللَّهُ** है जिस ने आस्मान और ज़मीन⁹⁷ छ⁶ दिन में बनाए⁹⁸ फिर

اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشَى اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ

अर्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसा उस की शान के लाइक है⁹⁹ रात दिन को एक दूसरे से ढांकता है कि जल्द उस के पीछे लगा आता है और सूरज

وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ٥٥ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ٥٦ تَبَارَكَ

और चांद और तारों को बनाया सब उस के हुक्म के देबे हुए सुन लो उसी के हाथ है पैदा करना और हुक्म देना बड़ी बरकत

اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ٥٣ أَدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ٥٤ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ

वाला है **اللَّهُ** रब सारे जहान का अपने रब से दुआ करो गिड़गिड़ाते और आहिस्ता बेशक हृद से बढ़ने वाले

الْمُعْتَدِينَ ٥٥ وَلَا تَقْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ

उसे पसन्द नहीं¹⁰⁰ और ज़मीन में फ़साद न फैलाओ¹⁰¹ इस के संवरने के बा'द¹⁰² और उस से दुआ करो

करते थे। 95 : या'नी बजाए कुफ़्र के ईमान लाएं और बजाए मा'सियत और ना फ़रमानी के ताअत और फ़रमां बरदारी इख़्तियार करें मगर न उन्हें शफ़ाअत मुयस्सर आएगी न दुन्या में वापस भेजे जाएंगे। 96 : और झूट बकते थे कि बुत खुदा के शरीक हैं और अपने पुजारियों की शफ़ाअत करेंगे अब आख़िरत में उन्हें मा'लूम हो गया कि उन के येह दा'वे झूटे थे। 97 : मअ उन तमाम चीज़ों के जो इन के दरमियान हैं जैसा कि दूसरी आयत में वारिद हुवा : "وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ"। 98 : छ⁶ दिन से दुन्या के छ⁶ दिनों की मिक्दार मुराद है क्यूं कि येह दिन तो उस वक़्त थे नहीं, आप्ताब ही न था जिस से दिन होता और **اللَّهُ** तआला कादिर था कि एक लम्हे में या इस से कम में पैदा फ़रमाता लेकिन इतने अर्से में उन की पैदाइश फ़रमाना ब तकाज़ाए हिकमत है और इस से बन्दों को अपने कामों में तदरीज इख़्तियार करने का सबक़ मिलता है। 99 : येह इस्तवा मुतशाबहात में से है हम इस पर ईमान लाते हैं कि **اللَّهُ** की इस से जो मुराद है हक़ है। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** ने फ़रमाया कि इस्तवा मा'लूम है और इस की कैफ़ियत मज्हूल और इस पर ईमान लाना वाजिब। हज़रत मुतज़िम **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** ने फ़रमाया : या इस के मा'ना येह हैं कि आप्रीनिश (काएनात) का ख़ातिमा अर्श पर जा ठहरा। 100 : दुआ **اللَّهُ** तआला से ख़ैर तलब करने को कहते हैं और येह दाख़िले इबादत है क्यूं कि दुआ करने वाला अपने आप को आज़िज व मोहताज और अपने परवर्दगार को हकीक़ी कादिर व हाजत रवा ए'तिकाद करता है, इसी लिये हदीस शरीफ़ में वारिद हुवा : "اللُّدْعَاءُ مُخِ الْعِبَادَةِ" (या'नी दुआ इबादत का मज़ है) तज़रोंअ से इज़्हारे इज्ज व खुशूअ मुराद है और अदब दुआ में येह है कि आहिस्ता हो। हसन **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** का कौल है कि आहिस्ता दुआ करना अलानिया दुआ करने से सत्तर दरजे ज़ियादा अफ़ज़ल है। मस्अला : इस में उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि इबादत में इज़्हार अफ़ज़ल है या इख़फ़ा, बा'ज कहते हैं कि इख़फ़ा अफ़ज़ल है क्यूं कि वोह रिया से बहुत दूर है, बा'ज कहते हैं कि इज़्हार अफ़ज़ल है इस लिये कि इस से दूसरों को रबते इबादत पैदा होती है। तिरमिज़ी ने कहा कि अगर आदमी अपने नफ़्स पर रिया का अन्देशा रखता हो तो उस के लिये इख़फ़ा अफ़ज़ल है और अगर क़ल्ब साफ़ हो अन्देशा रिया न हो तो इज़्हार अफ़ज़ल है। बा'ज हज़रत येह फ़रमाते हैं कि फ़र्ज इबादतों में इज़्हार अफ़ज़ल है, नमाज़ फ़र्ज मस्जिद ही में बेहतर है और ज़कात

خَوْفًا وَطَمَعًا ۗ إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾ وَهُوَ

डरते और तमअ करते बेशक **اللَّهُ** की रहमत नेकों से क़रीब है और वोही है

الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۗ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ

कि हवाएं भेजता है उस की रहमत के आगे मुज्दा सुनाती¹⁰³ यहां तक कि जब उठा जाए

سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ

भारी बादल हम ने उसे किसी मुर्दा शहर की तरफ़ चलाया¹⁰⁴ फिर उस से पानी उतारा फिर उस से

مِّنْ كُلِّ الشَّجَرِ ۗ كَذَلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

तरह तरह के फल निकाले इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे¹⁰⁵ कहीं तुम नसीहत मानो

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرِجُ نَبَاتَهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۗ وَالَّذِي خَبِثَ لَا يَخْرِجُ

और जो अच्छी ज़मीन है उस का सब्जा **اللَّهُ** के हुक्म से निकलता है¹⁰⁶ और जो ख़राब है उस में नहीं निकलता

إِلَّا نَكِدًا ۗ كَذَلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ لِّيَشْكُرُوا ۗ لَقَدْ أَرْسَلْنَا

मगर थोड़ा ब मुश्किल¹⁰⁷ हम यूँही तरह तरह से आयतें बयान करते हैं¹⁰⁸ उन के लिये जो एहसान मानें बेशक हम ने

نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ لِقَوْمٍ أُعْبِدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ ۗ

नूह को उस की कौम की तरफ़ भेजा¹⁰⁹ तो उस ने कहा ऐ मेरी कौम **اللَّهُ** को पूजो¹¹⁰ उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं¹¹¹

का इज़हार कर के देना ही अफ़ज़ल है और नफ़ल इबादात में ख़्वाह वोह नमाज़ हो या सदका वग़ैरा उन में इख़्फ़ा अफ़ज़ल है। दुआ में हद से बढ़ना कई तरह होता है उस में से एक येह भी है कि बहुत बुलन्द आवाज़ से चीखे। 101 : कुफ़्रो मा'सियत व जुल्म कर के 102 : अम्बिया के तशरीफ़ लाने, हक़ की दा'वत फ़रमाने, अहक़ाम बयान करने, अदल काइम फ़रमाने के बा'द। 103 : बारिश का। और रहमत से यहां माँह मुराद है। 104 : जहां बारिश न हुई थी सब्जा न जमा था। 105 : या'नी जिस तरह मुर्दा ज़मीन को वीरानी के बा'द जिन्दगी अता फ़रमाता और उस को सर सब्ज और शादाब फ़रमाता है और उस में खेती दरख़्त फल फूल पैदा करता है ऐसे ही मुर्दों को कब्रों से जिन्दा कर के उठाएगा क्यूं कि जो खुश्क लकड़ी से तरो ताज़ा फल पैदा करने पर कादिर है उसे मुर्दों का जिन्दा करना क्या बईद है, कुदरत की येह निशानी देख लेने के बा'द अक़िल, सलीमुल हवास को मुर्दों के जिन्दा किये जाने में कुछ तरहद बाक़ी नहीं रहता। 106 : येह मोमिन की मिसाल है जिस तरह उम्दा ज़मीन पानी से नफ़अ पाती है और उस में फूल फल पैदा होते हैं इसी तरह जब मोमिन के दिल पर कुरआनी अन्वार की बारिश होती है तो वोह उस से नफ़अ पाता है ईमान लाता है ताआत व इबादात से फलता फूलता है। 107 : येह काफ़िर की मिसाल है कि जैसे ख़राब ज़मीन बारिश से नफ़अ नहीं पाती ऐसे ही काफ़िर कुरआने पाक से मुन्तफ़अ (फ़ाएदा हासिल करने वाला) नहीं होता। 108 : जो तौहीद व ईमान पर हुज्जत व बुरहान हैं। 109 : हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** के वालिद का नाम लमक है वोह मुतवशिलख़ के वोह अख़ूख़ **عَلَيْهِ السَّلَام** के फ़रजन्द हैं अख़ूख़ हज़रते इदरीस **عَلَيْهِ السَّلَام** का नाम है, हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** चालीस या पचास साल की उम्र में नुबुव्वत से सरफ़राज़ फ़रमाए गए। आयाते बाला में **اللَّهُ** तआला ने अपने दलाइले कुदरत व ग़राइबे सन्अत बयान फ़रमाए जिन से उस की तौहीद व रबूबियत साबित होती है और मरने के बा'द उठने और जिन्दा होने की सिद्दहत पर दलाइले कातेआ काइम किये इस के बा'द अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** का ज़िक्र फ़रमाता है और उन के उन मुआमलात का जो उन्हीं उम्मतों के साथ पेश आए। इस में नबिये करीम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तसल्लती है कि फकत् आप ही की कौम ने कबूले हक़ से ए'राज़ नहीं किया बल्कि पहली उम्मतें भी ए'राज़ करती रहीं और अम्बिया की तक्ज़ीब करने वालों का

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا

बेशक मुझे तुम पर बड़े दिन के अज़ाब का डर है¹¹² उस की कौम के सरदार बोले बेशक हम

لَنُرِكَ فِي ضَلَلٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾ قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَكِنِّي

तुम्हें खुली गुमराही में देखते हैं कहा ऐ मेरी कौम मुझ में गुमराही कुछ नहीं

رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾ أُبَلِّغُكُمْ رِيسَالَ رَبِّي وَأَنْصَحُ لَكُمْ

में तो रब्बुल आलमीन का रसूल हूँ तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता और तुम्हारा भला चाहता

وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾ أَوْ عَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن

और मैं **अल्लाह** की तरफ से वोह इल्म रखता हूँ जो तुम नहीं रखते और क्या तुम्हें इस का अचम्भा (तअज्जुब) हुवा कि तुम्हारे पास

رَبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾

तुम्हारे रब की तरफ से एक नसीहत आई तुम में के एक मर्द की मा'रिफ़त¹¹³ कि वोह तुम्हें डराए और तुम डरो और कहीं तुम पर रहम हो

فَكَذَّبُوا فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلِكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا

तो उन्होंने ने उसे¹¹⁴ झुटलाया तो हम ने उसे और जो¹¹⁵ उस के साथ कश्ती में थे नजात दी और अपनी आयतें झुटलाने वालों को

بِأَيْتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا عَمِينَ ﴿٦٤﴾ وَإِلَىٰ عَادٍ آخَاهُمْ هُودًا ﴿٦٥﴾ قَالَ

डुबो दिया बेशक वोह अन्धा गुरोह था¹¹⁶ और आद की तरफ¹¹⁷ उन की बिरादरी से हूद को भेजा¹¹⁸ कहा

يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرُهُ ﴿٦٥﴾ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾ قَالَ

ऐ मेरी कौम **अल्लाह** की बन्दगी करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं तो क्या तुम्हें डर नहीं¹¹⁹ उस

अन्जाम दुन्या में हलाक और आखिरत में अज़ाबे अज़ीम है, इस से जाहिर है कि अम्बिया की तक्ज़ीब करने वाले ग़ज़बे इलाही के सज़ावार होते हैं जो शख्स सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की तक्ज़ीब करेगा उस का भी येही अन्जाम होगा। अम्बिया के इन तक्ज़िरो में सय्यिदे आलम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की नुबुव्वत की ज़बर दस्त दलील है क्यूं कि हुज़ूर **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** उम्मी थे फिर आप का इन वाकिआत को तफ़सीलन बयान फ़रमाना बिल खुसूस ऐसे मुल्क में जहां अहले किताब के उलमा ब कसरत मौजूद थे और सरगमें मुखालफ़त भी थे ज़रा सी बात पाते तो बहुत शोर मचाते वहां हुज़ूर का इन वाकिआत को बयान फ़रमाना और अहले किताब का साकित व हैरान रह जाना सरीह दलील है कि आप नबिय्ये बरहक हैं और परवर्दगारे आलम ने आप पर उलूम के दरवाजे खोल दिये हैं। 110 : वोही मुस्तहिक्के इबादत है 111 : तो उस के सिवा किसी को न पूजो। 112 : रोज़े क्रियामत का या रोज़े तूफ़ान का अगर तुम मेरी नसीहत कबूल न करो और राहे रास्त पर न आओ। 113 : जिस को तुम ख़ूब जानते और उस के नसब को पहचानते हो 114 : या'नी हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** को 115 : उन पर ईमान लाए और 116 : जिसे हक़ नज़र न आता था। हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि उन के दिल अन्धे थे, नूरे मा'रिफ़त से उन को बहरा न था। 117 : यहां आदे उला मुराद है येह हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** की कौम है और आदे सानिया हज़रते सालेह **عَلَيْهِ السَّلَام** की कौम है उसी को समूद कहते हैं, इन दोनों के दरमियान सो बरस का फ़ासिला है। (म) 118 : हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** ने 119 : **अल्लाह** के अज़ाब का।

الْمَلَأَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِيَّاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَنْظُرُكَ

की कौम के सरदार बोले बेशक हम तुम्हें बे वुकूफ़ समझते हैं और बेशक हम तुम्हें झूठों

مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ٢٦ قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ بِسَفَاهَةٍ وَلٰكِنِّي رَاسُوْلٌ مِّنْ

में गुमान करते हैं¹²⁰ कहा ऐ मेरी कौम मुझे बे वुकूफी से क्या अलाका (तअल्लुक) मैं तो परवर्दगारे

رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ٢٧ اُبَلِّغُكُمْ رَاسُوْلِيْ وَاِنَّا لَكُمْ نٰصِحٌ اَمِيْنٌ ٢٨

आलम का रसूल हूं तुम्हें अपने रब की रिसालतें पहुंचाता हूं और तुम्हारा मो'तमद खैर ख़्वाह हूं¹²¹

اَوْعَجِبْتُمْ اَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنذِرَكُمْ

और क्या तुम्हें इस का अचम्भा (तअज्जुब) हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक नसीहत आई तुम में के एक मर्द की मा'रिफ़त कि वोह तुम्हें डराए

وَازْكُرُوْا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ

और याद करो जब उस ने तुम्हें कौमे नूह का जा नशीन किया¹²² और तुम्हारे बदन का फैलाव

بِصَطَّةٍ فَاذْكُرُوْا الْاٰءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تَفْلِحُوْنَ ٢٩ قَالُوْا اٰجْتَنَّا النُّعُوْدَ

बढ़ाया¹²³ तो **اللّٰهُ** की ने'मतें याद करो¹²⁴ कि कहीं तुम्हारा भला हो बोले क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो¹²⁵ कि

اللّٰهِ وَحُدٰةً وَّنٰذِرًا مَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا فَاْتَيْنَا بِمَآعِدِنَا اِنْ كُنْتُمْ

हम एक **اللّٰهُ** को पूजें और जो¹²⁶ हमारे बाप दादा पूजते थे उन्हें छोड़ दें तो लाओ¹²⁷ जिस का हमें वा'दा दे रहे हो अगर

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ٣٠ قَالَ قَدْ وُقِعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَبِّكُمْ رَجْسٌ وَّغَضَبٌ

सच्चे हो कहा¹²⁸ ज़रूर तुम पर तुम्हारे रब का अज़ाब और ग़ज़ब पड़ गया¹²⁹

120 : या'नी रिसालत के दा'वे में सच्चा नहीं जानते । 121 : कुफ़र का हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** की जनाब में येह गुस्ताख़ाना कलाम कि तुम्हें बे वुकूफ़ समझते हैं झूठा गुमान करते हैं इन्तिहा दरजे की बे अदबी और कमीनगी थी और वोह मुस्तहिक़ इस बात के थे कि उन्हें सख़्त तरीन जवाब दिया जाता मगर आप ने अपने अख़्लाक़ो अदब और शाने हिल्म से जो जवाब दिया उस में शाने मुकाबला ही न पैदा होने दी और उन की जहालत से चश्म पोशी फ़रमाई । इस से दुन्या को सबक़ मिलता है कि सुफ़हा (बे वुकूफ़) और बद ख़िसाल (बुरे) लोगों से इस तरह़ मुखातबा (कलाम) करना चाहिये **مَعَ هٰذَا** (इस के साथ) आप ने अपनी रिसालत और ख़ैर ख़्वाही व अमानत का ज़िक़र फ़रमाया । इस से येह मस्अला मा'लूम हुआ कि अहले इल्मो कमाल को ज़रूरत के मौक़अ पर अपने मन्सबो कमाल का इज़हार जाइज़ है । 122 : येह उस का कितना बड़ा एहसान है 123 : और बहुत ज़ियादा कुव्वत व तूले कामत इनायत किया 124 : और ऐसे मुन्डम (ने'मत अता फ़रमाने वाले) पर इमान लाओ और ताआत व इबादात बजा ला कर उस के एहसान की शुक्र गुजारी करो 125 : या'नी अपने इबादात खाने से । हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** अपनी कौम की बस्ती से अलाहदा एक तन्हाई के मक़ाम में इबादात किया करते थे, जब आप के पास वह्य आती तो कौम के पास आ कर सुना देते । 126 : बुत 127 : वोह अज़ाब 128 : हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** ने 129 : और तुम्हारी सरकशी से तुम पर अज़ाब आना वाजिब व लाज़िम हो गया ।

اَتَجَادِلُوْنِي فِيْ اَسْمَاءِ سَيِّمُوْهَا اَنْتُمْ وَاَبَا وَاُمِّكُمْ مَا نَزَّلَ اللهُ بِهَا

क्या मुझ से खाली उन नामों में झगड़ रहे हो जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये¹³⁰ **اللَّهُ** ने उन की कोई

مِنْ سُلْطٰنٍ ۙ فَاَنْتَظِرُوْا اِنِّيْ مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٤١﴾ فَاَنْجِيْهُ

सनद न उतारी तो रास्ता देखो¹³¹ मैं भी तुम्हारे साथ देखता हूँ तो हम ने उसे और उस

وَالَّذِيْنَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَاۤ اِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا

के साथ वालों को¹³² अपनी एक बड़ी रहमत फ़रमा कर नज़ात दी¹³³ और जो हमारी आयतों झुटलाते¹³⁴ थे उन की जड़ काट दी¹³⁵ और वोह

كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِلٰى شُوْدٍ اٰخَاهُمْ صٰلِحًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوْا

ईमान वाले न थे और समूद की तरफ¹³⁶ उन की बिरादरी से सालेह को भेजा कहा ऐ मेरी कौम **اللَّهُ** को

130 : और उन्हें पूजने लगे और मा'बूद मानने लगे बा वुजूदे कि इन की कुछ हकीकत ही नहीं है और उलूहियत के मा'ना से कलून खाली व आरी हैं। **131** : अज़ाबे इलाही का **132** : जो उन के मुत्तबेअ थे और उन पर ईमान लाए थे **133** : उस अज़ाब से जो कौमे हूद पर उतरा। **134** : और हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** की तक्ज़ीब करते **135** : और इस तरह हलाक कर दिया कि उन में एक भी न बचा। मुख्तसर वाकिआ यह है कि कौमे आद अहकाफ में रहती थी जो उमान व हज़रत के दरमियान अलाकए यमन में एक रेगिस्तान है, इन्होंने ज़मीन को फिस्क से भर दिया था और दुनिया की कौमों को अपनी जफ़ाकारियों से अपने ज़ोरे कुव्वत के जो'म में पामाल कर डाला था, यह लोग बुत परस्त थे उन के एक बुत का नाम सुदाअ, एक का सुमूद, एक का हवाअ था। **اللَّهُ** तआला ने इन में हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** को मक्कस फ़रमाया, आप ने उन्हें तौहीद का हुक्म दिया शिर्क व बुत परस्ती और जुल्मो जफ़ाकारी की मुमानअत की, इस पर वोह लोग मुक्किर हुए आप की तक्ज़ीब करने लगे और कहने लगे : हम से ज़ियादा जोर आवर कौन है, चन्द आदमी उन में से हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** पर ईमान लाए वोह थोड़े थे और अपना ईमान छुपाए रहते थे, उन मोमिनीन में से एक शख्स का नाम मरसद इब्ने सा'द बिन उफ़ैर था वोह अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे, जब कौम ने सरकशी की और अपने नबी हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** की तक्ज़ीब की और ज़मीन में फ़साद किया और सितम गारियों में ज़ियादती की और बड़ी मजबूत इमारतें बनाई मा'लूम होता था कि उन्हें गुमान है कि वोह दुनिया में हमेशा ही रहेंगे, जब उन की नौबत यहां तक पहुंची तो **اللَّهُ** तआला ने बारिश रोक दी तीन साल बारिश न हुई अब वोह बहुत मुसीबत में मुब्तला हुए और उस ज़माने में दस्तूर यह था कि जब कोई बला या मुसीबत नाज़िल होती थी तो लोग बैतुल्लाहिल हुराम में हाज़िर हो कर **اللَّهُ** तआला से उस के दफ़अ की दुआ करते थे, इसी लिये उन लोगों ने एक वफ़द बैतुल्लाह को रवाना किया उस वफ़द में कौल बिन अज़ा और नईम बिन हज़्ज़ाल और मरसद बिन सा'द थे येह वोही साहिब हैं जो हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** पर ईमान लाए थे और अपना ईमान मख़्फ़ी रखते थे, उस ज़माने में मक्कए मुकर्रमा में अमालीक की सुकूनत थी और इन लोगों का सरदार मुआविया बिन बक्र था इस शख्स का नानिहाल कौमे आद में था इसी अलाके (तअल्लुक) से येह वफ़द मक्कए मुकर्रमा के हवाली (गिदों नवाह) में मुआविया बिन बक्र के यहां मुक़ीम हुवा, उस ने इन लोगों का बहुत इक्राम किया निहायत ख़ातिरो मदारात की, येह लोग वहां शराब पीते और बांदियों का नाच देखते थे, इस तरह इन्होंने नेशों नशात में एक महीना बसर किया मुआविया को खयाल आया कि येह लोग तो राहत में पड़ गए और कौम की मुसीबत को भूल गए जो वहां गिरिफ़्तारे बला है मगर मुआविया बिन बक्र को येह खयाल भी था कि अगर वोह इन लोगों से कुछ कहे तो शायद वोह येह खयाल करें कि अब इस को मेज़बानी गिरां गुज़रने लगी है इस लिये उस ने गाने वाली बांदी को ऐसे अशआर दिये जिन में कौमे आद की हाजत का तज़्किरा था, जब बांदी ने वोह नज़्म गाई तो उन लोगों को याद आया कि हम उस कौम की मुसीबत की फ़रियाद करने के लिये मक्कए मुकर्रमा भेजे गए हैं, अब उन्हें खयाल हुवा कि हरम शरीफ़ में दाखिल हो कर कौम के लिये पानी बरसने की दुआ करें, उस वक़्त मरसद बिन सा'द ने कहा कि **اللَّهُ** की कसम ! तुम्हारी दुआ से पानी न बरसेगा लेकिन अगर तुम अपने नबी की इत्ताअत करो और **اللَّهُ** तआला से तौबा करो तो बारिश होगी और उस वक़्त मरसद ने अपने इस्लाम का इज़हार कर दिया, उन लोगों ने मरसद को छोड़ दिया और खुद मक्कए मुकर्रमा जा कर दुआ की, **اللَّهُ** तआला ने तीन अब्र (बादल) भेजे एक सफ़ेद एक सुख़्ख़ एक सियाह और आस्मान से निदा हुई कि ऐ कौल ! अपने और अपनी कौम के लिये इन में से एक अब्र इख़्तियार कर। उस ने अब्रे सियाह को इख़्तियार किया ब ई खयाल कि इस से बहुत पानी बरसेगा। चुनान्चे वोह अब्र कौमे आद की तरफ चला और वोह लोग उस को देख कर बहुत खुश हुए, मगर उस में से एक हवा चली वोह इस शिहत की थी कि ऊंटों और आदमियों को उड़ा उड़ा कर कहीं से कहीं ले जाती थी, येह देख कर वोह लोग घरों में दाखिल हुए और अपने दरवाजे बन्द कर लिये मगर हवा की तेजी से बच न सके उस ने दरवाजे भी उखेड़ दिये और उन लोगों को हलाक भी कर दिया और कुदरते इलाही से सियाह परिन्दे नुमूदार हुए जिन्होंने उन की लाशों को उठा कर समुन्दर में फेंक दिया, हज़रते हूद मोमिनीन को ले कर कौम से जुदा हो गए थे इस लिये वोह सलामत रहे, कौम के हलाक होने

اللّٰهُ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهِ غَيْرِهٖ ۗ قَدْ جَاءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ هٰذِهٖ

पूजो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से¹³⁷ रोशन दलील आई¹³⁸ यह

نٰقَةٌ اَللّٰهُ لَكُمْ اٰيَةٌ فَنذَرُوْهَا تٰتًا كُلٌّ فِىْ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَسُوْهُ اِسْوَاءٌ

अल्लाह का नाका है¹³⁹ तुम्हारे लिये निशानी तो इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए और इसे बुराई से हाथ न लगाओ¹⁴⁰

فِيَا خُذْكُمْ عَذَابُ الْيَمِّ ۙ وَاذْكُرُوْا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِنْۢ بَعْدِ

कि तुम्हें दर्दनाक अज़ाब आ लेगा और याद करो¹⁴¹ जब तुम को आद का जा नशीन

عَادٍ وَّ بَوَّأَكُمْ فِى الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّا تَنْحِتُوْنَ

किया और मुल्क में जगह दी कि नर्म ज़मीन में महल बनाते हो¹⁴² और पहाड़ों में

الْجِبَالِ يُّوْتًا ۗ فَاذْكُرُوْا الْاِثْمَ اللّٰهِ وَلَا تَعْتَوْا فِى الْاَرْضِ

मकान तराशते हो¹⁴³ तो अल्लाह की ने'मतें याद करो¹⁴⁴ और ज़मीन में फ़साद मचाते

مُّفْسِدِيْنَ ۙ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لِلَّذِيْنَ

न फिरो उस की कौम के तकबुर वाले कमजोर

اسْتَضَعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ اَتَعْلَبُوْنَ اَنْۢ صَلِحًا مَّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۗ

मुसल्मानों से बोले क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब के रसूल हैं

قَالُوْا اِنَّا بَاۤءَاۤ اُرْسِلَ بِهٖ مُّؤْمِنُوْنَ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا اِنَّا

बोले वोह जो कुछ ले कर भेजे गए हम उस पर ईमान रखते हैं¹⁴⁵ मुतकब्बिर बोले जिस

بِالَّذِيۡۤ اٰمَنْتُمْ بِهٖ كُفِرُوْنَ ۙ فَعَقَرُوْا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنۢ اَمْرِ رَّبِّهٖمۡ

पर तुम ईमान लिए हमें उस से इन्कार है पस¹⁴⁶ नाका की कूचें (क़दम) काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की

के बा'द ईमानदारों को साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा तशरीफ़ लिए और आखिर उम्र शरीफ़ तक वहीं अल्लाह तआला की इबादत करते रहे । 136 : जो हिजाज़ व शाम के दरमियान सर ज़मीने हिज़्र में रहते थे । 137 : मेरे सिदके नुबुव्वत पर 138 : जिस का बयान यह है कि 139 : जो न किसी पीठ में रहा न किसी पेट में, न किसी नर से पैदा हुवा न मादा से, न हम्मल में रहा न इस की खिल्कत तदरीजन (दरजा ब दरजा पैदाइश) कमाल को पहुंची, बल्कि त्रीकए आदिया के खिलाफ़ वोह पहाड़ के एक पथ्थर से दफ़अतन पैदा हुवा, इस की यह पैदाइश मो'जिजा है, फिर वोह एक दिन पानी पीता है और तमाम कबीलेए समूद एक दिन । यह भी मो'जिजा है कि एक नाका एक कबीले के बराबर पी जाए इस के इलावा उस के पीने के रोज़ उस का दूध दोहा जाता था और वोह इतना होता था कि तमाम कबीले को काफ़ी हो और पानी के काइम मक़ाम हो जाए यह भी मो'जिजा और तमाम बुहश व हैवानात उस की बारी के रोज़ पानी पीने से बाज़ रहते थे यह भी मो'जिजा । इतने मो'जिजात हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام के सिदके नुबुव्वत की ज़बर दस्त हुज्जते हैं । 140 : न मारो न हकाओ अगर ऐसा किया तो येही नतीजा होगा 141 : ऐ कौमे समूद ! 142 : मौसिमे गरमा में आराम करने के लिये 143 : मौसिमे सरमा के लिये 144 : और उस का शुक्र बजा लाओ । 145 : उन के दीन को कबूल करते हैं उन की रिसालत को मानते हैं । 146 : कौमे समूद ने

وَقَالُوا يُصْلِحُ امْتِنَابَاتِعِدْنَا إِن كُنْتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٤٧﴾

और बोले ऐ सालेह हम पर ले आओ¹⁴⁷ जिस का तुम वा'दा दे रहे हो अगर तुम रसूल हो

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جِثِيَيْنَ ﴿٤٨﴾ فَتَوَلَّى عَنْهُمْ

तो उन्हें जल्जले ने आ लिया तो सुब्ह को अपने घरों में औंधे रह गए तो सालेह ने उन से मुंह फेरा¹⁴⁸

وَقَالَ يَقَوْمٍ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا

और कहा ऐ मेरी कौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम

تُحِبُّونَ النَّصِيحِينَ ﴿٤٩﴾ وَلَوْ طَآ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ

खैर ख्वाहों के गरजी [पसन्द करने वाले] ही नहीं और लूत को भेजा¹⁴⁹ जब उस ने अपनी कौम से कहा क्या वोह बे ह्याई करते हो

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٥٠﴾ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ

जो तुम से पहले जहान में किसी ने न की तुम तो मर्दों के पास

شَهْوَةً مِنْ دُونِ النِّسَاءِ ۗ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ﴿٥١﴾ وَمَا كَانَ

शहवत से जाते हो¹⁵⁰ औरतें छोड़ कर बल्कि तुम लोग हद से गुजर गए¹⁵¹ और उस की

جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ

कौम का कुछ जवाब न था मगर येही कहना कि इन¹⁵² को अपनी बस्ती से निकाल दो येह

147 : वोह अज़ाब **148 :** जब कि उन्होंने ने सरकशी की। मन्कूल है कि उन लोगों ने चहार शम्बा (बुध) को नाका की कूचें काटी थीं तो हज़रते सालेह عليه السلام ने फरमाया कि तुम इस के बा'द तीन रोज़ जिन्दा रहोगे पहले रोज़ तुम्हारे सब के चेहरे जर्द हो जाएंगे दूसरे रोज़ सुख् तीसरे रोज़ सियाह चौथे रोज़ अज़ाब आएगा। चुनान्चे ऐसा ही हुवा और यक शम्बा (इतवार) को दोपहर के करीब आस्मान से एक होलनाक आवाज़ आई जिस से उन लोगों के दिल फट गए और सब हलाक हो गए। **149 :** जो हज़रते इब्राहीम عليه السلام ने शाम की तरफ़ हिजरत की तो हज़रते इब्राहीम عليه السلام ने सर ज़मीने फिलिस्तीन में नुजूल फरमाया और हज़रते लूत عليه السلام उर्दुन में उतरे **अब्लुह** तअलाला ने आप को अहले सदूम की तरफ़ मब़स किया आप उन लोगों को दीने हक़ की दा'वत देते थे और फे'ले बद से रोकते थे जैसा कि आयत शरीफ़ में जिक्र आता है। **150 :** या'नी उन के साथ बद फे'ली करते हो **151 :** कि हलाल को छोड़ कर हराम में मुब्तला हुए और ऐसे खबीस फे'ल का इरतिकाब किया। इन्सान को शहवत बकाए नस्ल और दुन्या की आबादी के लिये दी गई है और औरतें महल्ले शहवत व मौज़ए नस्ल बनाई गई हैं कि उन से ब तरीकए मा'रूफ़ हस्बे इजाज़ते शरअ औलाद हासिल की जाए, जब आदमियों ने औरतों को छोड़ कर उन का काम मर्दों से लेना चाहा तो वोह हद से गुजर गए और उन्होंने ने इस कुव्वत के मक्सदे सहीह को फ़ौत कर दिया क्यूं कि मर्द को न हम्ल रहता है न वोह बच्चा जनता है, तो इस के साथ मशगूल होना सिवाए शैतानियत के और क्या है। उलमाए सियर व अख़बार का बयान है कि कौमे लूत की बस्तियां निहायत सर सब्ज़ो शादाब थीं और वहां गल्ले और फल ब कसरत पैदा होते थे ज़मीन का दूसरा ख़ि़त्ता उस का मिस्ल न था इस लिये जा बजा से लोग यहां आते थे और उन्हें परेशान करते थे, ऐसे वक़्त में इब्लीसे लईन एक बूढ़े की सूरत में नुमूदार हुवा और उन से कहने लगा कि अगर तुम मेहमानों की इस कसरत से नजात चाहते हो तो जब वोह लोग आए तो उन के साथ बद फे'ली करो, इस तरह येह फे'ले बद उन्होंने ने शैतान से सीखा और उन में राइज हुवा। **152 :** या'नी हज़रते लूत और उन के मुतबईन।

اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُونَ ﴿٨٢﴾ فَاَنْجَيْنَاهُ وَاَهْلَهُ اِلَّا امْرَاَتَهُ ۗ كَانَتْ مِنَ

लोग तो पाकीजगी चाहते हैं¹⁵³ तो हम ने उसे¹⁵⁴ और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औरत वोह रह जाने

الْغَابِرِينَ ﴿٨٣﴾ وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطْرًا ۗ فَاَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

वालों में हुई¹⁵⁵ और हम ने उन पर एक मीह बरसाया¹⁵⁶ तो देखो कैसा अन्जाम हुवा

الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾ وَاِلَى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۗ قَالَ يَقَوْمِ اَعْبُدُوا

मुजरिमों का¹⁵⁷ और मद्यन की तरफ उन की बिरादरी से शुऐब को भेजा¹⁵⁸ कहा ऐ मेरी कौम **अल्लाह** की इबादत

اللَّهِ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهُ ۗ قَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَبِّكُمْ ۗ فَاقْبُوا

करो उस के सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से रोशन दलील आई¹⁵⁹ तो

الْكَيْلَ وَالْيِزَانَ وَلَا تَبْخُسُوا النَّاسَ اَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَفْسِدُوا فِي

नाप और तोल पूरी करो और लोगों की चीजें घटा कर न दो¹⁶⁰ और ज़मीन में

الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ۗ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾ وَ

इन्तिजाम के बा'द फ़साद न फैलाओ येह तुम्हारा भला है अगर ईमान लाओ और

لَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ مَنْ

हर रास्ते पर यू न बैठो कि राहगीरों को डराओ और **अल्लाह** की राह से उन्हें रोको¹⁶¹ जो

اٰمَنَ بِهٖ وَتَبِعُوْنَهَا عَوْجًا ۗ وَاذْكُرُوْا اِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَرَكُمْ

उस पर ईमान लाए और इस में कज़ी चाहो (टेढ़ा रास्ता ढूंढो) और याद करो जब तुम थोड़े थे उस ने तुम्हें बढ़ा दिया¹⁶²

وَاَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ

और देखो¹⁶³ फ़सादियों का कैसा अन्जाम हुवा और अगर तुम में एक गुरौह

153 : और पाकीजगी ही अच्छी होती है वोही क़ाबिले मदह है लेकिन उस कौम का जौक इतना ख़राब हो गया था कि उन्होंने ने इस सिफ़ते मदह को ऐब करार दिया । **154** : या'नी हज़रते लूत **عَلَيْهِ السَّلَام** को **155** : वोह काफ़िरा थी और उस कौम से महब्वत रखती थी । **156** : अज़ीब तरह का जिस में ऐसे पथ्थर बरसे कि गन्धक और आग से मुरक्कब थे । एक कौल येह है कि बस्ती में रहने वाले जो वहां मुक़ीम थे वोह तो ज़मीन में धंसा दिये गए और जो सफ़र में थे वोह उस बारिश से हलाक किये गए । **157** : मुजाहिद ने कहा कि हज़रते जिब्रील थे वोह तो ज़मीन में धंसा दिये गए और जो सफ़र में थे वोह उस बारिश से हलाक किये गए । **158** : हज़रते शुऐब **عَلَيْهِ السَّلَام** ने **159** : जिस से मेरी नुबुव्वत व रिसालत यक़ीनी तौर पर साबित होती है, इस दलील से मो'जिज़ा मुराद है । **160** : उन के हक़ दियानत दारी के साथ पूरे पूरे अदा करो । **161** : और दीन का इत्तिबाअ करने में लोगों के लिये सदे राह (रुकावट) न बनो । **162** : तुम्हारी ता'दाद ज़ियादा

امَّنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَافَةُ لَمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ

उस पर ईमान लाया जो मैं ले कर भेजा गया और एक गुरौह ने न माना¹⁶⁴ तो ठहरे रहो यहां तक कि

يُحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٤﴾

अल्लाह हम में फैसला करे¹⁶⁵ और **अल्लाह** का फैसला सब से बेहतर¹⁶⁶

कर दी तो उस की ने'मत का शुक्र करो और ईमान लाओ। 163 : ब निगाहे इब्रत पिछली उम्मतों के अहवाल और गुजरे हुए ज़मानों में सरकशी करने वालों के अन्जाम व मअाल देखो और सोचो 164 : या'नी अगर तुम मेरी रिसालत में इख़िलाफ़ कर के दो फ़िर्के हो गए एक फ़िर्के ने माना और एक मुन्किर हुवा 165 : कि तस्दीक करने वाले ईमानदारों को इज़्ज़त दे और उन की मदद फ़रमाए और झुटलाने वाले मुन्किरीन को हलाक करे और उन्हें अज़ाब दे। 166 : क्यूं कि वोह हाकिमे हकीकी है।



قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَشْعِيبُ وَالَّذِينَ

उस की कौम के मुतकब्बिर सरदार बोले ऐ शुऐब कसम है कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथ वाले

أَمْؤًا مَعَكَ مِنْ قَرِيْبِنَا أَوْ لَتَعُوْدَنَّ فِي مِلَّتِنَا قَالَ أَوْ لَوْ كُنَّا

मुसल्मानों को अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारे दीन में आ जाओ कहा¹⁶⁷ क्या अगर्चे हम

كُرْهِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ بَعْدَ إِدْ

बेज़ार हों¹⁶⁸ ज़रूर हम अल्लाह पर झूट बांधेंगे अगर तुम्हारे दीन में आ जाएं बा'द इस के कि

نَجْنَاءَ اللَّهِ مِنْهَا وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُوْدَ فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ

अल्लाह ने हमें इस से बचाया है¹⁶⁹ और हम मुसल्मानों में किसी का काम नहीं कि तुम्हारे दीन में आए मगर येह कि अल्लाह चाहे¹⁷⁰

رَبَّنَا وَسِعَ رَبَّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا افْتَحْ

जो हमारा रब है हमारे रब का इल्म हर चीज़ को मुहीत (घेरे हुए) है हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया¹⁷¹ ऐ रब हमारे हम में

بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ

और हमारी कौम में हक़ फैसला कर¹⁷² और तेरा फैसला सब से बेहतर और उस की कौम के

الَّذِيْنَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لِيَتَّبِعْتُمْ شُعَيْبًا إِنْ كُنْتُمْ إِدَّاءُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾

काफ़िर सरदार बोले कि अगर तुम शुऐब के ताबेअ हुए तो ज़रूर तुम नुकसान में रहोगे

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جِثِيْمِيْنَ ﴿٩١﴾ الَّذِينَ كَذَبُوا

तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया तो सुब्द अपने घरों में औंधे पड़े रह गए¹⁷³ शुऐब को झुटलाने

167 : हज़रते शुऐब عليه السلام ने 168 : हासिले मतलब येह है कि हम तुम्हारा दीन न कबूल करेंगे और अगर तुम ने हम पर ज़ब्र किया जब भी न मानेंगे क्यूं कि 169 : और तुम्हारे दीने बातिल के कुब्द (ऐब) व फ़साद का इल्म दिया है । 170 : और उस को हलाक करना मन्ज़ूर हो और ऐसा ही मुकद्दर हो । 171 : अपने तमाम उमूर में वोही हमें ईमान पर साबित रखेगा वोही ज़ियादते ईकान (ईमान व यकीन में इजाफे) की तौफ़ीक़ देगा । 172 : ज़ज्जाज ने कहा कि इस के येह मा'ना हो सकते हैं कि ऐ रब हमारे अन्न को ज़ाहिर फ़रमा दे, मुराद इस से येह है कि इन पर ऐसा अज़ाब नाज़िल फ़रमा जिस से इन का बातिल पर होना और हज़रते शुऐब عليه السلام और इन के मुत्तबिईन का हक़ पर होना ज़ाहिर हो । 173 : हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله عنهما ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने उस कौम पर जहन्नम का दरवाज़ा खोला और उन पर दोज़ख़ की शदीद गरमी भेजी जिस से सांस बन्द हो गए, अब न उन्हें साया काम देता था न पानी, इस हालत में वोह तहख़ाने में दाख़िल हुए ताकि वहां उन्हें कुछ अम्म मिले लेकिन वहां बाहर से ज़ियादा गरमी थी । वहां से निकल कर जंगल की तरफ़ भागे अल्लाह तआला ने एक अब्र (बादल) भेजा जिस में निहायत सर्द और खुश गवार हवा थी उस के साए में आए और एक ने दूसरे को पुकार पुकार कर जम्अ कर लिया, मर्द औरते बच्चे सब मुत्तमअ हो गए तो वोह ब हुक्मे इलाही आग बन कर भडक उठा और वोह इस तरह जल गए जैसे भाड़ (भट्टी) में कोई चीज़ भुन जाती है । क़तादा का कौल है कि अल्लाह तआला ने हज़रते शुऐब عليه السلام को अस्हाबे ऐका की तरफ़ भी मब्क़स फ़रमाया था और अहले मद्यन की तरफ़ भी, अस्हाबे ऐका तो अब्र से हलाक किये गए और अहले मद्यन ज़लज़ले में गिरिफ़्तार हुए और एक होलनाक आवाज़ से हलाक हो गए ।

شُعَيْبًا كَانُوا لَمْ يَعْنُوا فِيهَا ۗ الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ

वाले गोया उन घरों में कभी रहे ही न थे शुऐब को झुटलाने वाले वोही

الْخُسْرَيْنِ ۙ فَتَوَلَّىٰ عَنْهُمْ وَقَالَ يَاقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَتِ رَبِّي

तबाही में पड़े तो शुऐब ने उन से मुंह फेरा¹⁷⁴ और कहा ऐ मेरी कौम मैं तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा चुका

وَنصَحْتُ لَكُمْ فَكَيْفَ آسَىٰ عَلَىٰ قَوْمٍ كَافِرِينَ ۙ وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ

और तुम्हारे भले को नसीहत की¹⁷⁵ तो क्यूंकर गम करूं काफ़िरों का और न भेजा हम ने किसी बस्ती में

مِّنْ نَّبِيٍّ إِلَّا آخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضُرَّعُونَ ۙ

कोई नबी¹⁷⁶ मगर यह कि उस के लोगों को सख्ती और तकलीफ में पकड़ा¹⁷⁷ कि वोह किसी तरह ज़ारी (अजिजी) करें¹⁷⁸

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّىٰ عَفَوا ۗ وَقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا

फिर हम ने बुराई की जगह भलाई बदल दी¹⁷⁹ यहां तक कि वोह बहुत हो गए¹⁸⁰ और बोले बेशक हमारे बाप दादा को

الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۙ وَلَوْ أَنَّ

रज्ज व राहत पहुंचे थे¹⁸¹ तो हम ने उन्हें अचानक उन की गफ़लत में पकड़ लिया¹⁸² और अगर

أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا فَفَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَ

बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते¹⁸³ तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें

الْأَرْضِ وَلَكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۙ أَفَأَمِّنَ أَهْلُ

खोल देते¹⁸⁴ मगर उन्होंने ने तो झुटलाया¹⁸⁵ तो हम ने उन्हें उन के किये पर गिरिफ्तार किया¹⁸⁶ क्या बस्तियों वाले¹⁸⁷

174 : जब उन पर अज़ाब आया। 175 : मगर तुम किसी तरह ईमान न लाए। 176 : जिस को उस की कौम ने न झुटलाया हो। 177 : फ़क़्रो तंगदस्ती और मरज़ व बीमारी में गिरिफ़्तार किया। 178 : तक़बुर छोड़ें, तौबा करें, हुक्मे इलाही के मुतीअ़ बनें। 179 : कि सख्ती व तकलीफ़ के बा'द राहतो आसाइश पहुंचना और बदनी व माली ने'मते मिलना इताअ़त व शुक्र गुज़ारी का मुस्तद्दू (चाहने वाला) है। 180 : उन की ता'दाद भी ज़ियादा हुई और माल भी बढ़े। 181 : या'नी ज़माने का दस्तूर ही येह है कि कभी तकलीफ़ होती है कभी राहत, हमारे बाप दादा पर भी ऐसे अहवाल गुज़र चुके हैं, इस से उन का मुद्आ येह था कि पिछला ज़माना जो सख्त्रियों में गुज़रा है वोह **अल्लाह** तआला की तरफ़ से कुछ उक़ूबत व सज़ा न था तो अपना दीन तर्क करना न चाहिये। न उन लोगों ने शिद्दत व तकलीफ़ से कुछ नसीहत हासिल की न राहतो आराम से उन में कोई ज़ब्बए शुक्रो ताअ़त पैदा हुवा वोह ग़फ़लत में सरशार रहे। 182 : जब कि उन्हें अज़ाब का ख़याल भी न था। इन वाक़िआत से इन्नत हासिल करनी चाहिये और बन्दों को गुनाह व सरकशी तर्क कर के अपने मालिक का रिज़ा जू (रिज़ा मन्दी चाहने वाला) होना चाहिये। 183 : और खुदा और रसूल की इताअ़त इख़्तियार करते और जिस चीज़ को **अल्लाह** और रसूल ने मन्अ़ फ़रमाया उस से बाज़ रहते। 184 : हर तरफ़ से उन्हें ख़ैर पहुंचती, वक़्त पर नाफ़ेअ़ और मुफ़ीद बारिशें होतीं, ज़मीन से खेती फ़ल व कसरत पैदा होते, रिज़क़ की फ़राख़ी होती, अम्नो सलामती रहती, आफ़तों से महफूज़ रहते। 185 : **अल्लाह** के रसूलों को। 186 : और अन्वाए अज़ाब में मुब्तला किया। 187 : कुपफ़ार ख़्वाह वोह मक्कए मुकर्रमा के रहने वाले हों या गिर्दो पेश के या और कहीं के।

الْقَرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسًا بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٩٧﴾ أَوْ مِنْ أَهْلِ الْقَرَىٰ

नहीं डरते कि उन पर हमारा अज़ाब रात को आए जब वोह सोते हैं या बस्तियों वाले नहीं डरते कि

أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسًا ضَعْفَىٰ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾ أَفَأَمِنُوا مَكْرَ اللَّهِ فَلَا يَأْمَنُ

उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आए जब वोह खेल रहे हैं¹⁸⁸ क्या **अल्लाह** की खफ़ी तदबीर से निडर हैं¹⁸⁹ तो **अल्लाह** की खफ़ी तदबीर

مَكْرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمَ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرْتُؤَنَ

से निडर नहीं होते मगर तबाही वाले¹⁹⁰ और क्या वोह जो ज़मीन के मालिकों के बा'द उस के

الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصَبْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَ

वारिस हुए उन्हें इतनी हिदायत न मिली कि हम चाहें तो उन्हें उन के गुनाहों पर आफ़त पहुंचाएं¹⁹¹ और

نَطَبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾ تِلْكَ الْقَرَىٰ نَقُصُّ

हम उन के दिलों पर मोहर करते हैं कि वोह कुछ नहीं सुनते¹⁹² येह बस्तियां हैं¹⁹³ जिन के

عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِهَا ۗ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا

अहवाल हम तुम्हें सुनाते हैं¹⁹⁴ और बेशक उन के पास उन के रसूल रोशन दलीलें¹⁹⁵ ले कर आए तो वोह¹⁹⁶

كَانُوا الْيَوْمَ مُؤْمِنًا ۖ كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۖ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ

इस काबिल न हुए कि वोह उस पर ईमान लाते जिसे पहले झुटला चुके थे¹⁹⁷ **अल्लाह** यूँही छाप (मोहर) लगा देता है काफ़ि़रों

الْكَافِرِينَ ﴿١٠١﴾ وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۗ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ

के दिलों पर¹⁹⁸ और उन में अक्सर को हम ने क़ौल (वा'दे) का सच्चा न पाया¹⁹⁹ और ज़रूर उन में अक्सर को

لَفَسِقِينَ ﴿١٠٢﴾ ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَ

वे हुक्म ही पाया फिर उन²⁰⁰ के बा'द हम ने मूसा को अपनी निशानियों²⁰¹ के साथ फ़िरऔन और उस के दरबारियों

188 : और अज़ाब के आने से गाफ़िल हों 189 : और उस के ढील देने और दुन्यवी ने'मत देने पर मग़रूर हो कर उस के अज़ाब से बे फ़िक्र हो गए हैं 190 : और उस के मुख़्लिस बन्दे उस का ख़ौफ़ रखते हैं। रबीअ बिन ख़ैसम की साहिब जादी ने उन से कहा क्या सबब है मैं देखती हूँ सब लोग सोते हैं और आप नहीं सोते हैं? फ़रमाया ऐ नूरे नज़र तेरा बाप शब को सोने से डरता है। या'नी येह कि गाफ़िल हो कर सो जाना कहीं सबबे अज़ाब न हो। 191 : जैसा कि हम ने उन के मूरिसों (विरसा छोड़ने वालों) को उन की ना फ़रमानों के सबब हलाक किया। 192 : और कोई पन्दो नसीहत नहीं मानते। 193 : कौमे हज़रते नूह और आद व समूद और कौमे हज़रते लूत व कौमे हज़रते शुऐब की। 194 : ताकि मा'लूम हो कि हम अपने रसूलों की और उन पर ईमान लाने वालों की अपने दुश्मनों या'नी काफ़ि़रों के मुकाबले में मदद किया करते हैं। 195 : या'नी मो'जिज़ाते बाहिरात (ज़बर दस्त मो'जिज़ात) 196 : ता दमे मर्ग 197 : अपने कुफ़्रो तक्ज़ीब पर जमे ही रहे। 198 : जिन की निस्वत उस के इल्म में है कि कुफ़्र पर काइम रहेंगे और कभी ईमान न लाएंगे। 199 : उन्होंने ने **अल्लाह** के अहद पूरे न किये, उन पर जब

مَلَأٍ بِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۚ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾ وَقَالَ

की तरफ भेजा तो उन्होंने ने उन निशानियों पर ज़ियादती की²⁰² तो देखो कैसा अन्जाम हुवा मुफ़्सदों (फ़साद करने वालों) का और मूसा

مُوسَىٰ يَفِرُّعُونَ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٣﴾ حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا

ने कहा ऐ फ़िरऔन मैं परवर्दगारे आलम का रसूल हूँ मुझे सज़ावार (मुनासिब येही) है कि

أَقُولُ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ ۗ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ

अब्लास पर न कहूँ मगर सच्ची बात²⁰³ मैं तुम सब के पास तुम्हारे रब की तरफ़ से निशानी ले कर आया हूँ²⁰⁴ तो तू बनी इसराईल को

مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ۗ قَالَ إِن كُنْتَ جِئْتَ بِآيَةٍ فَآتِ بِهَا إِن كُنْتَ

मेरे साथ छोड़ दे²⁰⁵ बोला अगर तुम कोई निशानी ले कर आए हो तो लाओ अगर

مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾ فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾ وَنَزَعْنَا

सच्चे हो तो मूसा ने अपना असा डाल दिया वोह फ़ौरन एक ज़ाहिर अज़्दहा हो गया²⁰⁶ और अपना हाथ गिरेबान में डाल कर निकाला

فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۗ قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَذَا

तो वोह देखने वालों के सामने जगमगाने लगा²⁰⁷ कौमे फ़िरऔन के सरदार बोले येह तो एक

لَسِحْرٍ عَلَيْنَا ۗ يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿١١٠﴾

इल्म वाला जादूगर है²⁰⁸ तुम्हें तुम्हारे मुल्क²⁰⁹ से निकाला चाहता है तो तुम्हारा क्या मशवरा है

قَالُوا أَرْجَاهُ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ ﴿١١١﴾ يَا تَوَكُّلْ بِكُلِّ

बोले उन्हें और उन के भाई²¹⁰ को ठहरा और शहरों में लोग जम्अ करने वाले भेज दे कि हर इल्म वाले

कभी कोई मुसीबत आती तो अहद करते कि या रब ! तू अगर इस से हमें नजात दे तो हम ज़रूर ईमान लाएंगे, फिर जब नजात पाते अहद से

फिर जाते । (सः) 200 : अम्बियाए मज़क़रीन 201 : या'नी मो'जिजाते वाज़ेहात मिस्ले यदे बैजा व असा वगैरा 202 : उन्हें झुटलाया और

कुफ़्र किया । 203 : क्यूँ कि रसूल की येही शान है, वोह कभी ग़लत बात नहीं कहते और तबलीग़े रिसालत में इन का किज़ब मुम्किन नहीं ।

204 : जिस से मेरी रिसालत साबित है और वोह निशानी मो'जिजात हैं । 205 : और अपनी कैद से आज़ाद कर दे ताकि वोह मेरे साथ अर्जे

मुक़द्दसा में चले जाएँ जो उन का वतन है । 206 : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने असा

डाला तो वोह एक बड़ा अज़्दहा बन गया ज़र्द रंग मुंह खोले हुए ज़मीन से एक मील ऊंचा अपनी दुम पर खड़ा हो गया और एक जबड़ा

उस ने ज़मीन पर रखा और एक क़स्से शाही की दीवार पर फिर उस ने फ़िरऔन की तरफ़ रुख़ किया तो फ़िरऔन अपने तख़्त से कूद कर भागा

और डर से उस की रीह निकल गई और लोगों की तरफ़ रुख़ किया तो ऐसी भाग पड़ी कि हज़ारों आदमी आपस में कुचल कर मर गए

फ़िरऔन घर में जा कर चीखने लगा : ऐ मूसा ! तुम्हें उस की क़सम जिस ने तुम्हें रसूल बनाया इस को पकड़ लो मैं तुम पर ईमान लाता हूँ

और तुम्हारे साथ बनी इसराईल को भेजे देता हूँ । हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को उठा लिया तो वोह मिस्ले साबिक़ असा था । 207 : और

उस की रोशनी और चमक नूरे आफ़ताब पर गालिब हो गई । 208 : जिस ने जादू से नज़र बन्दी की और लोगों को असा अज़्दहा नज़र आने

लगा और गन्दुमी रंग का हाथ आफ़ताब से ज़ियादा रोशन मा'लूम होने लगा । 209 : मिस्र 210 : हज़रते हारून ।

سُحْرٍ عَلِيمٍ ١١٢ ﴿١١٢﴾ وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِن كُنَّا

जादूगर को तेरे पास ले आएँ²¹¹ और जादूगर फिरऔन के पास आए बोले कुछ हमें इन्आम मिलेगा अगर

نَحْنُ الْغَالِبِينَ ١١٣ ﴿١١٣﴾ قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ١١٣ ﴿١١٣﴾ قَالُوا يٰمُوسَىٰ

हम गालिब आएँ बोला हां और उस वक्त तुम मुकर्रब हो जाओगे बोले ऐ मूसा

إِمَّا أَنْ تُلْقَىٰ وَإِمَّا أَنْ نَكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ ١١٥ ﴿١١٥﴾ قَالَ الْقَوَا فَلَئِمَّا

या तो²¹² आप डालें या हम डालने वाले हैं²¹³ कहा तुम्हीं डालो²¹⁴ जब

الْقَوَا سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءُوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ ١١٦ ﴿١١٦﴾ وَ

उन्होंने ने डाला²¹⁵ लोगों की निगाहों पर जादू कर दिया और उन्हें डरा दिया और बड़ा जादू लाए और

أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ١١٧ ﴿١١٧﴾ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ١١٧ ﴿١١٧﴾

हम ने मूसा को वहुय फरमाई कि अपना असा डाल तो नागाह वोह उन की बनावटों को निगलने लगा²¹⁶

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ١١٨ ﴿١١٨﴾ فَعُلبُوا هٰنَالِكَ وَانْقَلَبُوا

तो हक़ साबित हुवा और उन का काम बातिल हुवा तो यहां वोह मग़लूब पड़े और ज़लील

صَغِيرِينَ ١١٩ ﴿١١٩﴾ وَالْقَىٰ السَّحَرَةُ سُجْدِينَ ١٢٠ ﴿١٢٠﴾ قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ١٢٠ ﴿١٢٠﴾

हो कर पलटे और जादूगर सज्दे में गिरा दिये गए²¹⁷ बोले हम ईमान लाए जहान के रब पर

رَبِّ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ١٢١ ﴿١٢١﴾ قَالَ فِرْعَوْنُ اءَمْتُمْ بِهِ قَبْلَ أَنْ اذِنَ لَكُمْ ١٢١ ﴿١٢١﴾

जो रब है मूसा और हारून का फिरऔन बोला तुम इस पर ईमान ले आए कब्ल इस के कि मैं तुम्हें इजाज़त दूँ

211 : जो सेहर में माहिर हो और सब से फ़ाइक़, चुना-चे लोग रवाना हुए और अतराफ़ व बिलाद में तलाश कर के जादूगरों को ले आए ।

212 : पहले अपना असा 213 : जादूगरों ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का यह अदब किया कि आप को मुक़द्दम किया और बिगैर आप की

इजाज़त के अपने अमल में मशगूल न हुए, इस अदब का इवज़ (बदला) उन्हें येह मिला कि **alccius** तआला ने उन्हें ईमान व हिदायत के

साथ मुशर्रफ़ किया । 214 : येह फ़रमाना हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का इस लिये था कि आप उन की कुछ परवाह नहीं करते थे और ए'तिमादे

कामिल रखते थे कि उन के मो'जिज़े के सामने सेहर नाकाम व मग़लूब होगा । 215 : अपना सामान जिस में बड़े बड़े रस्से और शहतीर थे

तो वोह अज़्दहे नज़र आने लगे और मैदान उन से भरा मा'लूम होने लगा । 216 : जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना असा डाला तो वोह

एक अज़ीमुशशान अज़्दहा बन गया । इब्ने ज़ैद का कौल है कि येह इज़्तिमाअ इस्कन्दरिया में हुवा था और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के अज़्दहे की

दुम समुन्दर के पार पहुंच गई थी वोह जादूगरों की सेहर कारियों को एक एक कर के निगल गया और तमाम रस्से व लठ्ठे जो उन्होंने ने जम्अ

किये थे जो तीन सो ऊंट का बार थे सब का ख़ातिमा कर दिया, जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उस को दस्ते मुबारक में लिया तो पहले की तरह

असा हो गया और उस का हज़्म और वज़्म अपने हाल पर रहा, येह देख कर जादूगरों ने पहचान लिया कि असाए मूसा सेहर नहीं और कुदरते

बशरी ऐसा करिश्मा नहीं दिखा सकती, ज़रूर येह अम्र समावी है, येह बात समझ कर वोह "اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" (हम ईमान लाए जहान के रब

पर) कहते हुए सज्दे में गिर गए । 217 : या'नी येह मो'जिज़ा देख कर उन पर ऐसा असर हुवा कि वोह बे इख़्तियार सज्दे में गिर गए, मा'लूम

होता था कि किसी ने पेशानियां पकड़ कर ज़मीन पर लगा दीं ।

إِنَّ هَذَا الْمَكْرُ مَكْرٌ تَوَّاهٌ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا فَسَوْفَ

येह तो बड़ा जा'ल (मक्रो फ़रेब) है जो तुम सब ने²¹⁸ शहर में फैलाया है कि शहर वालों को इस से निकाल दो²¹⁹ तो अब

تَعْلَبُونَ ﴿١٢٣﴾ لَا قِطْعَنَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلُكُمْ مِنْ خِلَافٍ شَمًّا لَا صَلْبَبَكُمْ

जान जाओगे²²⁰ कसम है कि मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पाउं काटूंगा फिर तुम सब को

أَجْعِلِينَ ﴿١٢٣﴾ قَالُوا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿١٢٥﴾ وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ

सूली दूंगा²²¹ बोले हम अपने रब की तरफ़ फिरने वाले हैं²²² और तुझे हमारा क्या बुरा लगा येही ना कि

أَمْثَابًا يَتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْ نُنَاطُ رَبَّنَا أَفِرِّغُ عَلَيْكَ نَاصِبًا وَأَتَوْفَّنَا

हम अपने रब की निशानियों पर ईमान लाए जब वोह हमारे पास आई ऐ रब हमारे हम पर सब्र उंडेल दे²²³ और हमें

مُسْلِبِينَ ﴿١٢٦﴾ وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَىٰ وَقَوْمَهُ

मुसल्मान उठा²²⁴ और कौमे फिरऔन के सरदार बोले क्या तू मूसा और उस की कौम को इस लिये छोड़ता है

لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَالصَّهْتَ ط قَالَ سَنُقْتِلُ أَبْنَاءَهُمْ

कि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाए²²⁵ और मूसा तुझे और तेरे ठहराए हुए मा'बूदों को छोड़ दे²²⁶ बोला अब हम इन के बेटों को क़त्ल करेंगे

وَنَسْتَحْيِ نِسَاءَهُمْ ؕ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ ﴿١٢٧﴾ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ

और इन की बेटियां ज़िन्दा रखेंगे और हम बेशक इन पर ग़ालिब हैं²²⁷ मूसा ने अपनी कौम से फ़रमाया

218 : या'नी तुम ने और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने सब ने मुत्तफ़ि़क़ हो कर 219 : और खुद इस पर मुसल्लत हो जाओ । 220 : कि मैं तुम्हारे साथ किस तरह पेश आता हूँ । 221 : नील के किनारे । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि दुनिया में पहला सूली देने वाला पहला हाथ पाउं काटने वाला फिरऔन है । फिरऔन की इस गुफ़्तगू पर जादूगरों ने येह जवाब दिया जो अगली आयत में मज़कूर है : 222 : तो हमें मौत का क्या ग़म, क्यूं कि मर कर हमें अपने रब की लिका (मुलाक़ात व दीदार) और उस की रहमत नसीब होगी और जब सब को उसी की तरफ़ रूजूअ करना है तो वोह खुद हमारे तेरे दरमियान फ़ैसला फ़रमा देगा । 223 : या'नी हम को सब्रे कामिल ताम अता फ़रमा और इस कसरत से अता फ़रमा जैसे पानी किसी पर उंडेल दिया जाता है । 224 : हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : येह लोग दिन के अव्वल वक़्त में जादूगर थे और उसी रोज़ आख़िर वक़्त में शहीद । 225 : या'नी मिस्र में तेरी मुख़ालफ़त करें और वहां के बाशिन्दों का दीन बदलें और येह उन्होंने ने इस लिये कहा था कि साहिरों के साथ छ⁶ लाख आदमी ईमान ले आए थे । (मार) 226 : कि न तेरी इबादत करें न तेरे मुक़रर किये हुए मा'बूदों की । सुद्दी का कौल है कि फिरऔन ने अपनी कौम के लिये बुत बनवा दिये थे और उन की इबादत करने का हुक्म देता था और कहता था कि मैं तुम्हारा भी रब हूँ और इन बुतों का भी । बा'ज मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि फिरऔन दहरी था या'नी "सानेए आलम के वुजूद का मुन्किर" उस का ख़याल था कि आलमे सिफ़ली के मुदाब्बर कवाकिब हैं इसी लिये उस ने सितारों की सूतों पर बुत बनवाए थे, उन की खुद भी इबादत करता था और दूसरों को भी उन की इबादत का हुक्म देता था और अपने आप को मुताअ व मख़्डूम (सरदार व मालिक) ज़मीन का कहता था इसी लिये "أَنَا رَبُّكُمْ الْأَعْلَىٰ" (मैं तुम्हारा सब से ऊंचा रब हूँ) कहता था । 227 : कौमे फिरऔन के सरदारों ने फिरऔन से येह जो कहा था कि क्या तू मूसा और उस की कौम को इस लिये छोड़ता है कि वोह ज़मीन में फ़साद फैलाए, इस से उन का मतलब फिरऔन को हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के और आप की कौम के क़त्ल पर उभारना था, जब उन्होंने ने ऐसा किया तो मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन को नुज़ूले अज़ाब का ख़ौफ़ दिलाया और फिरऔन अपनी कौम की ख़्बाहिश पर कुदरत नहीं रखता था क्यूं कि वोह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़े की कुव्वत से मरऊब हो चुका था इसी लिये उस ने अपनी कौम से येह कहा कि हम बनी इसराईल के लडकों को क़त्ल करेंगे

اَسْتَعِيْزُوا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ قَدْ يُورِثُهَا مَنْ يَّشَاءُ مِنْ

अल्लाह की मदद चाहो²²⁸ और सब करो²²⁹ बेशक ज़मीन का मालिक अल्लाह है²³⁰ अपने बन्दों में जिसे चाहे

عِبَادِهِ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾ قَالُوْا اَوْ ذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاتِيْنَا وَ

वारिस बनाए²³¹ और आखिर मैदान परहेज गारों के हाथ है²³² बोले हम सताए गए आप के आने से पहले²³³ और

مِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۗ قَالَ عَسَى رَبُّكُمْ اَنْ يُهْلِكَ عَدُوْكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ

आप के तशरीफ़ लाने के बाद²³⁴ कहा करीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक करे और उस की जगह

فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۗ وَ لَقَدْ اَخَذْنَا اِلٰلَ فِرْعَوْنَ

ज़मीन का मालिक तुम्हें बनाए फिर देखे कैसे काम करते हो²³⁵ और बेशक हम ने फिरऔन वालों को

بِالسِّنِيْنَ وَنَقَصِ مِنَ الشَّجَرِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٣٠﴾ فَاِذَا جَاءَتْهُمْ

बरसों के क़हत और फलों के घटाने से पकड़ा²³⁶ कि कहीं वोह नसीहत माने²³⁷ तो जब उन्हें भलाई

الْحَسَنَةَ قَالُوْا النَّاهِزَةُ ۗ وَاِنْ تَصِبُّهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيْرُ وَاِبْرٰوْسٰى وَمَنْ

मिलती²³⁸ कहते यह हमारे लिये है²³⁹ और जब बुराई पहुंचती तो मूसा और उस के साथ वालों से

مَعَهُ ۗ اِلَّا اِنَّمَا طٰرَهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَلٰكِنَّا كَثَرْتُمْ لَا يَعْلمُوْنَ ﴿١٣١﴾ وَقَالُوْا

बद शुगुनी लेते²⁴⁰ सुन लो उन के नसीबे (मुकद्दर) की शामत तो अल्लाह के यहां है²⁴¹ लेकिन उन में अक्सर को खबर नहीं और बोले

लड़कियों को छोड़ देंगे, इस से उस का मतलब यह था कि इस तरह कौमै हज़रत मूसा عليه السلام की ता'दाद घटा कर उन की कुव्वत कम करेंगे और अ़वाम में अपना भरम रखने के लिये यह भी कह दिया कि हम बेशक उन पर गालिब हैं, लेकिन फिरऔन के इस कौल से कि हम बनी इसराईल के लड़कों को क़त्ल करेंगे बनी इसराईल में कुछ परेशानी पैदा हो गई और उन्होंने ने हज़रते मूसा عليه السلام से इस की शिकायत की, इस के जवाब में हज़रते मूसा عليه السلام ने यह फ़रमाया (जो इस के बाद आता है) 228 : वोह काफी है 229 : मुसीबतों और बलाओं पर और घबराओ नहीं 230 : और ज़मीने मिस्र भी इस में दाख़िल है। 231 : यह फ़रमा कर हज़रते मूसा عليه السلام ने बनी इसराईल को तवक्कोअ (उम्मीद) दिलाई कि फिरऔन और उस की कौम हलाक होगी और बनी इसराईल उन की ज़मीनों और शहरों के मालिक होंगे। 232 : उन्हीं के लिये फ़त्हो ज़फ़र है और उन्हीं के लिये आक़िबते महमूदा। 233 : कि फिरऔन और फिरऔनियों ने तरह तरह की मुसीबतों में मुब्तला कर रखा था और लड़कों को बहुत ज़ियादा क़त्ल किया था 234 : कि अब वोह फिर हमारी औलाद के क़त्ल का इरादा रखता है तो हमारी मदद कब होगी और यह मुसीबतें कब दफ़्फ़ की जाएंगी। 235 : और किस तरह शुक्रे ने'मत बजा लाते हो। 236 : और फ़क्को फ़ाका की मुसीबत में गिरिफ़्तार किया 237 : और कुफ़्रो मा'सियत से बाज़ आए। फिरऔन ने अपनी चार सो बरस की उम्र में से तीन सो बीस साल तो इस आराम के साथ गुज़ारे थे कि इस मुद्दत में कभी दर्द या बुख़ार या भूक में मुब्तला ही नहीं हुवा अब क़हत साली की सख़्खी उन पर इस लिये डाली गई कि वोह इस सख़्खी ही से खुदा को याद करें और उस की तरफ़ मुतवज्जेह हों, लेकिन वोह कुफ़्र में इस क़दर रासिख़ (पुख़्ता) हो चुके थे कि इन तकलीफ़ों से भी उन की सरकशी ही बढ़ती रही। 238 : और अरज़ानी व फ़राखी (या'नी फ़लों की कसरत) व अन्नो आफ़िय्यत होती 239 : या'नी हम इस के मुस्तहिक़ ही हैं और इस को अल्लाह का फ़ज़्ल न जानते और शुक्रे इलाही न बजा लाते। 240 : और कहते कि यह बलाएं उन की वज्ह से पहुंचीं अगर यह न होते तो यह मुसीबतें न आतीं। 241 : जो उस ने मुक़द्दर किया है वोही पहुंचता है और यह उन के कुफ़्र के सबब है। बा'ज मुफ़स्सरीन फ़रमाते हैं : मा'ना यह है कि बड़ी शामत तो वोह है जो उन के लिये अल्लाह के यहां है या'नी अज़ाबे दोज़ख़।

مَهَاتَاتٍ تَابِهِ مِنْ آيَةٍ لَتَسْحَرَنَّا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

तुम कैसी भी निशानी ले कर हमारे पास आओ कि हम पर उस से जादू करो हम किसी तरह तुम पर ईमान लाने वाले नहीं²⁴²

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالْدَّمَ

तो भेजा हम ने उन पर तूफान²⁴³ और टीड़ी (टिट्टी) और घुन (किलनी या जूँ) और मेंडक और खून

242 : जब उन की सरकशी यहां तक पहुंची तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन के हक में बद दुआ की, आप मुस्तजाबुद्दा'वात थे, दुआ कबूल हुई। **243 :** जब जादूगरों के ईमान लाने के बाद भी फिरऔनी अपने कुफ़्रो सरकशी पर जमे रहे तो उन पर आयाते इलाहियह पयापे (लगातार) वारिद होने लगीं क्यूं कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ की थी कि या रब फिरऔन ज़मीन में बहुत सरकश हो गया और इस की क़ौम ने अहद शिकनी की, इन्हें ऐसे अज़ाब में गिरिफ़्तार कर जो इन के लिये सज़ा हो और मेरी क़ौम और बाद वालों के लिये इब्रत, तो **अल्लाह** तआला ने तूफ़ान भेजा अन्न आया, अंधेरा हुवा, कसरत से बारिश होने लगी, क़िब्ज़ियों के घरों में पानी भर गया, यहां तक कि वोह उस में खड़े रह गए और पानी उन की गरदनो की हंस्तियों तक आ गया, उन में से जो बैठा डूब गया, न हिल सकते थे न कुछ काम कर सकते थे। सनीचर से सनीचर (या'नी एक हफ़्ते से अगले हफ़्ते) तक सात रोज़ तक इसी मुसीबत में मुब्तला रहे और बा वुजूद इस के कि बनी इसराईल के घर उन के घरों से मुत्तसिल थे उन के घरों में पानी न आया, जब येह लोग आज़िज़ हुए तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अर्ज़ किया : हमारे लिये दुआ फ़रमाइये कि येह मुसीबत रफ़ू हो तो हम आप पर ईमान लाएं और बनी इसराईल को आप के साथ भेज दें। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ फ़रमाई तूफ़ान की मुसीबत रफ़ू हुई, ज़मीन में वोह सर सब्जी व शादाबी आई जो पहले न देखी थी, खेतियां खूब हुई, दरख़्त खूब फले तो फिरऔनी कहने लगे येह पानी तो ने'मत था और ईमान न लाए। एक महीना तो आफ़ियत से गुज़रा फिर **अल्लाह** तआला ने टिट्टी भेजी, वोह खेतियां और फल, दरख़्तों के पत्ते, मकानों के दरवाजे, छतें, तख़्ते, सामान हत्ता कि लोहे की कीलें तक खा गईं और क़िब्ज़ियों के घरों में भर गईं और बनी इसराईल के यहां न गईं, अब क़िब्ज़ियों ने परेशान हो कर फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से दुआ की दरख़्वास्त की, ईमान लाने का वा'दा किया, इस पर अहदो पैमान किया, सात रोज़ या'नी शम्बा से शम्बा तक टिट्टी की मुसीबत में मुब्तला रहे, फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ से नजात पाई खेतियां और फल जो कुछ बाक़ी रह गए थे उन्हें देख कर कहने लगे येह हमें काफ़ी हैं, हम अपना दीन नहीं छोड़ते, चुनान्वे ईमान न लाए, अहद वफ़ा न किया और अपने आ'माले ख़बीसा में मुब्तला हो गए। एक महीना आफ़ियत से गुज़रा फिर **अल्लाह** तआला ने कुम्मल भेजे। इस में मुफ़स्सरीन का इख़िलाफ़ है बा'ज कहते हैं कुम्मल घुन है, बा'ज कहते हैं जूँ, बा'ज कहते हैं एक और छोटा सा कीड़ा है, उस कीड़े ने जो खेतियां और फल बाक़ी रहे थे वोह खा लिये, कपड़ों में घुस जाता था और जिल्द को काटता था, खाने में भर जाता था, अगर कोई दस बोरी गेहूँ चक्की पर ले जाता तो तीन सेर वापस लाता, बाक़ी सब कीड़े खा जाते। येह कीड़े फिरऔनियों के बाल, भवें, पलकें चाट गए। जिस्म पर चेचक की तरह भर जाते, सोना दुश्वार कर दिया था, इस मुसीबत से फिरऔनी चीख़ पड़े और उन्होंने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अर्ज़ किया हम तौबा करते हैं, आप इस बला के दफ़ू होने की दुआ फ़रमाइये, चुनान्वे सात रोज़ के बाद येह मुसीबत भी हज़रत की दुआ से रफ़ू हुई लेकिन फिरऔनियों ने फिर अहद शिकनी की और पहले से ज़ियादा ख़बीस तर अमल शुरू किये। एक महीना अन्न में गुज़रने के बाद फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बद दुआ की तो **अल्लाह** तआला ने मेंडक भेजे और येह हाल हुवा कि आदमी बैठता था तो उस की मजलिस में मेंडक भर जाते थे, बात करने के लिये मुंह खोलता तो मेंडक कूद कर मुंह में पहुंचता। हांडियों में मेंडक, खानों में मेंडक, चूल्हों में मेंडक भर जाते थे आग बुझ जाती थी, लैटते थे तो मेंडक ऊपर सुवार होते थे, इस मुसीबत से फिरऔनी रो पड़े और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से अर्ज़ किया अब की बार हम पक्की तौबा करते हैं, हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने उन से अहदो पैमान ले कर दुआ की तो सात रोज़ के बाद येह मुसीबत भी दफ़ू हुई और एक महीना आफ़ियत से गुज़रा लेकिन फिर उन्होंने अहद तोड़ दिया और अपने कुफ़्र की तरफ़ लौटे, फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बद दुआ फ़रमाई तो तमाम कूओं का पानी नहरों और चश्मों का पानी दरियाए नील का पानी गरज हर पानी उन के लिये ताज़ा खून बन गया। उन्होंने फिरऔन से इस की शिकायत की तो कहने लगा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने जादू से तुम्हारी नज़र बन्दी कर दी, उन्होंने कहा : कैसी नज़र बन्दी ? हमारे बरतनों में खून के सिवा पानी का नामो निशान ही नहीं। फिरऔन ने हुक्म दिया कि क़िब्ज़ी बनी इसराईल के साथ एक ही बरतन से पानी लें तो जब बनी इसराईल निकालते तो पानी निकलता क़िब्ज़ी निकालते तो उसी बरतन से खून निकलता, यहां तक कि फिरऔनी औरतें प्यास से आज़िज़ हो कर बनी इसराईल की औरतों के पास आईं और उन से पानी मांगा तो वोह पानी उन के बरतन में आते ही खून हो गया। तो फिरऔनी औरत कहने लगी कि तू पानी अपने मुंह में ले कर मेरे मुंह में कुल्ली कर दे, जब तक वोह पानी इसराईली औरत के मुंह में रहा पानी था जब फिरऔनी औरत के मुंह में पहुंचा खून हो गया। फिरऔन खुद प्यास से मुज़्तर (बेचैन) हुवा तो उस ने तर दरख़्तों की रतूबत चूसी वोह रतूबत मुंह में पहुंचते ही खून हो गई। सात रोज़ तक खून के सिवा कोई चीज़ पीने की मुयस्सर न आई तो फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से दुआ की दरख़्वास्त की और ईमान लाने

اٰیٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۚ فَاسْتَكْبَرُوْا وَاكٰنُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۱۳۲﴾ وَّلَبَّآ وَقَع

जुदा जुदा निशानियां²⁴⁴ तो उन्होंने ने तकबुर किया²⁴⁵ और वोह मुजरिम कौम थी और जब

عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا اَيُّوْسَىٰ اَدْعُنَا رَبَّكَ بِمَا عٰهَدَ عِنْدَكَ ۗ لٰكِنۡ

उन पर अज़ाब पड़ता कहते ऐ मूसा हमारे लिये अपने रब से दुआ करो उस अहद के सबब जो उस का तुम्हारे पास है²⁴⁶ बेशक अगर

كَشَفْتَعَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَاَلَنْرُسِدَنَّ مَعَكَ بَنِيۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۳۳﴾

तुम हम पर से अज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और बनी इसराईल को तुम्हारे साथ कर देंगे

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلَىٰ اَجَلٍ هُمْ بَلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَبْتَئِثُوْنَ ﴿۱۳۵﴾

फिर जब हम उन से अज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिये जिस तक उन्हें पहुंचना है जभी वोह फिर जाते

فَانْتَقَبْنَا مِنْهُمْ فَاَعْرَقْتُهُمْ فِي الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِآيٰتِنَا وَاكٰنُوْا عٰنٰهَا

तो हम ने उन से बदला लिया तो उन्हें दरिया में डुबो दिया²⁴⁷ इस लिये कि हमारी आयतें झुटलाते और उन से

غٰفِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾ وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كٰنُوْا يَسْتَضَعِفُوْنَ مَسٰرِقَ

बे खबर थे²⁴⁸ और हम ने उस कौम को²⁴⁹ जो दबा ली (कमज़ोर समझी) गई थी इस ज़मीन²⁵⁰ के पूरब

الْاَرْضِ وَمَعَارِبِهَا الَّتِيۤ اَبْرٰكْنَا فِيْهَا ۗ وَتَبَّتْ كَلِمٰتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى

पश्चिम (मशरिफ़ो मगरिब) का वारिस किया जिस में हम ने बरकत रखी²⁵¹ और तेरे रब का अच्छा वा'दा

عَلَىٰ بَنِيۤ اِسْرَآءِيْلَ ۗ بِمَا صَبَرُوْا ۗ وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَا

बनी इसराईल पर पूरा हुवा बदला उन के सब्र का और हम ने बरबाद कर दिया²⁵² जो कुछ फिराउन और

قَوْمَهُ وَاٰنۡرَآءُ مَا كٰنُوْا يَعْرِشُوْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَجُوْرًا بِبَنِيۤ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوٰ

उस की कौम बनाती और जो चुनाइयां उठाते (ता'मीर करते) थे और हम ने²⁵³ बनी इसराईल को दरिया पार उतारा तो उन का गुज़र

का वा'दा किया। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ ने दुआ फ़रमाई, येह मुसीबत भी रफ़अ हुई मगर ईमान फिर भी न लाए। 244 : एक के बा'द

दूसरी और हर अज़ाब एक हफ़ता काइम रहता और दूसरे अज़ाब से एक महीने का फ़ासिला होता। 245 : और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَامُ पर

ईमान न लाए। 246 : कि वोह आप की दुआ क़बूल फ़रमाएगा। 247 : या'नी दरियाए नील में। जब बार बार उन्हें अज़ाबों से नजात दी

गई और वोह किसी अहद पर काइम न रहे और ईमान न लाए और कुफ़्र न छोड़ा तो वोह मीआद पूरी होने के बा'द जो उन के लिये मुकर्र

फ़रमाई गई थी उन्हें **alwaaḥ** तआला ने ग़र्क कर के हलाक कर दिया। 248 : अस्लन तदबुर व इल्लिफ़ात (अन्जाम पर गौर व तबज्जोह)

न करते थे। 249 : या'नी बनी इसराईल को 250 : या'नी मिस्र व शाम 251 : नहरों, दरख़्तों, फ़लों, खेतियों और पैदावार की कसरत से

252 : उन तमाम इमारतों और ऐवानों और बाग़ों को 253 : फिराउन और उस की कौम को दसवाँ मुहर्रम को ग़र्क करने के बा'द।

عَلَىٰ قَوْمٍ يَعْكُفُونَ عَلَىٰ أَصْنَامٍ لَهُمْ ۚ قَالُوا يَا مُوسَىٰ اجْعَلْ لَنَا إِلَهًا كَمَا

एक ऐसी कौम पर हुवा कि अपने बुतों के आगे आसन मारे (इबादत के लिये जम कर बैठे) थे²⁵⁴ बोले ऐ मूसा हमें एक खुदा बना दे जैसा

لَهُمُ الْإِلَهَةُ ۗ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾

इन के लिये इतने खुदा हैं बोला तुम ज़रूर जाहिल लोग हो²⁵⁵ यह हाल तो बरबादी का है जिस में

فِيهِ وَبُطْلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾ قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَهًا وَهُوَ

येह²⁵⁶ लोग हैं और जो कुछ कर रहे हैं निरा (बिल्कुल) बातिल है कहा क्या अल्लाह के सिवा तुम्हारा और कोई खुदा तलाश करूं हालां कि उस ने

فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤٠﴾ وَإِذْ أَنْجَيْنَاكَ مِنَ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكَ

तुम्हें ज़माने भर पर फ़ज़ीलत दी²⁵⁷ और याद करो जब हम ने तुम्हें फ़िरऔन वालों से नजात बख़्शी कि तुम्हें

سُوءَ الْعَذَابِ ۚ يَقْتُلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ۗ وَفِي ذَلِكُمْ

बुरी मार देते तुम्हारे बेटे ज़ह् करते और तुम्हारी बेटियां बाकी रखते और इस में

بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ ﴿١٤١﴾ وَوَعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَاهَا

तुम्हारे रब का बड़ा फ़ज़ल हुवा²⁵⁸ और हम ने मूसा से²⁵⁹ तीस रात का वा'दा फ़रमाया और उन में²⁶⁰ दस और

بِعَشْرَةٍ مِّمَّاتٍ رَّابِعَةَ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ۗ وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هَارُونَ

बढ़ा कर पूरी कीं तो उस के रब का वा'दा पूरी चालीस रात का हुवा²⁶¹ और मूसा ने²⁶² अपने भाई हारून से कहा

اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٢﴾ وَلَمَّا جَاءَ

मेरी कौम पर मेरे नाइब रहना और इस्लाह करना और फ़सादियों की राह को दख़ल न देना (उन के रास्ते पर न चलना) और जब मूसा हमारे

254 : और उन की इबादत करते थे । इब्ने जुरैज ने कहा कि यह बुत गाय की शकल के थे, इन को देख कर बनी इसराईल 255 : कि इतनी

निशानियां देख कर भी न समझे कि अल्लाह वाहिद "لَا شَرِيكَ لَهُ" है, उस के सिवा कोई मुस्तहिके इबादत नहीं और किसी की इबादत जाइज़

नहीं । 256 : बुत परस्त 257 : या'नी खुदा वोह नहीं होता जो तलाश कर के बना लिया जाए बल्कि खुदा वोह है जिस ने तुम्हें फ़ज़ीलत दी

क्यू कि वोह फ़ज़लो एहसान पर कादिर है तो वोही इबादत का मुस्तहिक है । 258 : या'नी जब उस ने तुम पर ऐसी अज़ीम ने'मतें फ़रमाई तो

तुम्हें कब शायान है कि तुम उस के सिवा और की इबादत करो । 259 : तौरैत अ़ता फ़रमाने के लिये माहे जुल का'दह की 260 : ज़िल हिज्जा

की 261 : हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का बनी इसराईल से वा'दा था कि जब अल्लाह तआला उन के दुश्मन फ़िरऔन को हलाक फ़रमा दे तो

वोह उन के पास अल्लाह तआला की जानिब से एक किताब लाएंगे जिस में हलाल और ह़राम का बयान होगा, जब अल्लाह तआला ने

फ़िरऔन को हलाक किया तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने रब से उस किताब के नाज़िल फ़रमाने की दरख्वास्त की । हुक्म हुवा कि तीस

रोज़े रखें, जब वोह रोज़े पूरे कर चुके तो आप को अपने दहन मुबारक में एक तरह की बू मा'लूम हुई । आप ने मिस्वाक की मलाएका ने अज़

किया कि हमें आप के दहने मुबारक से बड़ी महबूब ख़ुशबू आया करती थी आप ने मिस्वाक कर के उस को ख़त्म कर दिया । अल्लाह तआला

ने हुक्म फ़रमाया कि माह ज़िल हिज्जा में दस रोज़े और रखें और फ़रमाया कि ऐ मूसा ! क्या तुम्हें मा'लूम नहीं कि रोज़ेदार के मुंह की ख़ुशबू

मेरे नज़दीक ख़ुशबूए मुश्क से ज़ियादा अत्यब (पसन्द) है । 262 : पहाड़ पर मुनाज़ात के लिये जाते वक़्त ।

مُوسَى لِسِيْقَاتِنَا وَكَلِمَةُ رَبِّهِ ۗ قَالَ رَبِّ اَرِنِي اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۗ قَالَ لَنْ

वादे पर हाज़िर हुवा और उस से उस के रब ने कलाम फ़रमाया²⁶³ अर्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे अपना दीदार दिखा कि मैं तुझे देखूँ फ़रमाया तू मुझे हरगिज़ न

تَرِنِي ۗ وَلَكِنْ اَنْظُرْ اِلَى الْجَبَلِ فَاِنْ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرِنِي ۗ

देख सकेगा²⁶⁴ हां इस पहाड़ की तरफ़ देख यह अगर अपनी जगह पर ठहरा रहा तो अन्करीब तू मुझे देख लेगा²⁶⁵

فَلَمَّا تَجَلَّى رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَى صَعِقًا ۗ فَلَمَّا اَفَاقَ

फिर जब उस के रब ने पहाड़ पर अपना नूर चमकाया उसे पाश पाश कर दिया और मूसा गिरा बेहोश फिर जब होश हुवा

قَالَ سُبْحٰنَكَ تَبَّتْ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۱۳۳ قَالَ يُمُوْسَىٰ

बोला पाकी है तुझे मैं तेरी तरफ़ रूजूअ लाया और मैं सब से पहला मुसल्मान हूँ²⁶⁶ फ़रमाया ऐ मूसा

اِنِّىْ اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلَتِيْ وَبِجَلٰمِىْ ۗ فَخُذْ مَا اَتَيْتُكَ وَكُنْ

मैं ने तुझे लोगों से चुन लिया अपनी रिसालतों और अपने कलाम से तो ले जो मैं ने तुझे अता फ़रमाया और

مِّنَ الشُّكْرِيْنَ ۝۱۳۴ وَكَتَبْنَا لَهُ فِى الْاَلْوٰحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّ

शुक्र वालों में हो और हम ने उस के लिये तख़्तियों में²⁶⁷ लिख दी हर चीज़ की नसीहत और

263 : आयत से साबित हुवा कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** से कलाम फ़रमाया, इस पर हमारा ईमान है और हमारी क्या हकीकत है कि हम उस कलाम की हकीकत से बहस कर सकें, अख़बार (रिवायतों) में वारिद है कि जब हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** कलाम सुनने के लिये हाज़िर हुए तो आप ने तहारत की और पाकीज़ा लिबास पहना और रोज़ा रख कर तूरे सीना में हाज़िर हुए। **अल्लाह** तआला ने एक अब्र नाज़िल फ़रमाया जिस ने पहाड़ को हर तरफ़ से ब क़दर चार फ़रसंग के ढक लिया। शयातीन और ज़मीन के जानवर हत्ता कि साथ रहने वाले फिरिश्ते तक वहां से अलाहदा कर दिये गए और आप के लिये आस्मान खोल दिया गया तो आप ने मलाएक़ा को मुलाहज़ा फ़रमाया कि हवा में खड़े हैं और आप ने अर्शें इलाही को साफ़ देखा यहां तक कि अल्वाह पर कलमों की आवाज़ सुनी और **अल्लाह** तआला ने आप से कलाम फ़रमाया। आप ने उस की बारगाह में अपने मा'रूज़ात पेश किये। उस ने अपना कलामे करीम सुना कर नवाज़ा। हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** आप के साथ थे लेकिन जो **अल्लाह** तआला ने हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** से फ़रमाया वोह उन्होंने ने कुछ न सुना। हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को कलामे रब्बानी की लज़ज़त ने उस के दीदार का आरजू मन्द बनाया। **264 :** इन आंखों से, सुवाल कर के। बल्कि दीदारे इलाही बिगैर सुवाल के महज़ उस की अता व फ़ज़ल से हासिल होगा वोह भी इस फ़ानी आंख से नहीं बल्कि बाकी आंख से या'नी कोई बशर मुझे दुन्या में देखने की ताक़त नहीं रखता। **अल्लाह** तआला ने येह नहीं फ़रमाया कि मेरा देखना मुम्किन नहीं। इस से साबित हुवा कि दीदारे इलाही मुम्किन है अगचे दुन्या में न हो क्यूं कि सहीह हदीसों में है कि रोज़े क़ियामत मोमिनीन अपने रब **عَزَّوَجَلَّ** के दीदार से फ़ैज़याब किये जाएंगे इलावा बरीं येह कि हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** आरिफ़ बिल्लाह हैं अगर दीदारे इलाही मुम्किन न होता तो आप हरगिज़ सुवाल न फ़रमाते। **265 :** और पहाड़ का साबित रहना अग्रे मुम्किन है क्यूं कि इस की निस्बत फ़रमाया : "جَعَلَهُ دَكًّا" उस को पाश पाश कर दिया तो जो चीज़ **अल्लाह** तआला की मज्ज़ल (बनाई हुई) हो और जिस को वोह मौजूद फ़रमाए, मुम्किन है कि वोह न मौजूद हो अगर उस को न मौजूद करे क्यूं कि वोह अपने फ़ै'ल में मुख्तार है, इस से साबित हुवा कि पहाड़ का इस्तिक़ार अग्रे मुम्किन है मुहाल नहीं और जो चीज़ अग्रे मुम्किन पर मुअल्लक़ की जाए वोह भी मुम्किन ही होती है मुहाल नहीं होती लिहाज़ा दीदारे इलाही जिस को पहाड़ के साबित रहने पर मुअल्लक़ फ़रमाया गया वोह मुम्किन हुवा तो उन का कौल बातिल है जो **अल्लाह** तआला का दीदार मुहाल बताते हैं। **266 :** बनी इसराईल में से। **267 :** तौरैत की जो सात या दस थीं ज़बर जद की या जुमुर्द की।

تَقْصِيلاً لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخَذَهَا بِقُوَّةٍ وَأَمْرُكُمْ يَأْخُذُ وَإِنَّا حَسَنَاهَا ۗ

हर चीज़ की तफ़्सील और फ़रमाया ऐ मूसा इसे मज़बूती से ले और अपनी क़ौम को हुक्म दे कि इस की अच्छी बातें इख़्तियार करें²⁶⁸

سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ ۝ سَأَصْرِفُ عَنْ آيَتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ

अन्क़रीब मैं तुम्हें दिखाऊंगा बे हुक्मों का घर²⁶⁹ और मैं अपनी आयतों से उन्हें फेर दूंगा जो ज़मीन में

فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ وَإِن يَرَوْا كَلَّآئَةً لَا يُؤْمِنُؤْ بِهَا ۗ وَإِن يَرَوْا

नाहक अपनी बड़ाई चाहते हैं²⁷⁰ और अगर सब निशानियां देखें उन पर ईमान न लाएं और अगर हिदायत

سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ۗ وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الغَىِّ يَتَّخِذُوهُ

की राह देखें उस में चलना पसन्द न करें²⁷¹ और गुमराही का रास्ता नज़र पड़े तो उस में चलने को

سَبِيلًا ۗ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ۝ وَالَّذِينَ

मौजूद हो जाएं यह इस लिये कि उन्होंने ने हमारी आयतें झुटलाई और उन से बे ख़बर बने और जिन्हों ने

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ۗ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا

हमारी आयतें और आख़िरत के दरबार (आख़िरत की हाज़िरी) को झुटलाया उन का सब किया धरा अकारत गया उन्हें क्या बदला मिलेगा मगर वोही

كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا

जो करते थे और मूसा के²⁷² बा'द उस की क़ौम अपने ज़ेवरों से²⁷³ एक बछड़ा बना बैठी

جَسَدًا آلَهُ خَوَاسِرٌ ۗ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يَكْفِيهِمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا ۗ

बेजान का धड़²⁷⁴ गाय की तरह आवाज़ करता क्या न देखा कि वोह उन से न बात करता है और न उन्हें कुछ राह बताए²⁷⁵

268 : इस के अहकाम पर आमिल हों । 269 : जो आख़िरत में उन का ठिकाना है । हसन व अता ने कहा कि बे हुक्मों के घर से जहन्नम

मुराद है । क़तादा का कौल है कि मा'ना येह हैं कि मैं तुम्हें शाम में दाख़िल करूंगा और गुज़री हुई उम्मतों के मनाज़िल दिखाऊंगा जिन्हों ने

अल्ब़ाह की मुख़ालफ़त की ताकि तुम्हें उस से इब्रत हासिल हो । अतिय्या औफी का कौल है कि " دَارُ الْفَاسِقِينَ " से फ़िरऔन और उस की

क़ौम के मकानात मुराद हैं जो मिस्र में हैं । सुदी का कौल है कि इस से मनाज़िले कुफ़्फ़र मुराद हैं । कल्बी ने कहा कि अ़ाद व समूद और हलाक

शुदा उम्मतों के मनाज़िल मुराद हैं जिन पर अरब के लोग अपने सफ़रों में हो कर गुज़रा करते थे । 270 : जुन्नून ने फ़रमाया कि

अल्ब़ाह तआला हिक़मते कुरआन से अहले बातिल के कुलूब का इक़ाम नहीं फ़रमाता । हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : मुराद

येह है कि जो लोग मेरे बन्दों पर तजब्बुर (तकब्बुर व ज़ियादती की रविश इख़्तियार) करते हैं और मेरे औलिया से लड़ते हैं मैं उन्हें अपनी

आयतों के क़बूल और तस्दीक से फेर दूंगा ताकि वोह मुझ पर ईमान न लाएं, येह उन के इनाद (बुज़्ज व दुश्मनी) की सज़ा है कि उन्हें हिदायत

से महरूम किया गया । 271 : येही तकब्बुर का समरा मुतकब्बिर का अन्जाम है । 272 : तूर की तरफ़ अपने रब की मुनाजात के लिये जाने

के 273 : जो उन्होंने ने क़ौमे फ़िरऔन से अपनी ईद के लिये आरिख्यत लिये थे 274 : और उस के मुंह में हज़रते जिब्रील के घोड़े के कदम

के नीचे की ख़ाक डाली जिस के असर से वोह 275 : नाक़िस है, आज़िज़ है, जमाद है या हैवान, दोनों तकदीरों पर सलाहियत नहीं रखता

कि पूजा जाए ।

اِتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٢٧٨﴾ وَلَمَّا سَقَطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ

उसे लिया और वोह ज़ालिम थे²⁷⁶ और जब पचताए और समझे कि हम

ضَلُّوا قَالُوا لَئِن لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٢٧٩﴾

बहके बोले अगर हमारा रब हम पर मेहर (रहमो करम) न करे और हमें न बख़्शे तो हम तबाह हुए

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي

और जब मूसा²⁷⁷ अपनी कौम की तरफ़ पलटा गुस्से में भरा झुंजलाया हुवा²⁷⁸ कहा तुम ने क्या बुरी मेरी जा नशीनी की

مِنْ بَعْدِي ۚ أَعْجَلْتُمُ أَمْرًا رَبِّكُمْ ۖ وَأَلْقَى الْأُلُوحَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ

मेरे बा'द²⁷⁹ क्या तुम ने अपने रब के हुकम से जल्दी की²⁸⁰ और तख़्तियां डाल दीं²⁸¹ और अपने भाई के सर के बाल

أَخِيهِ يَجْرُهُ إِلَيْهِ ۗ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّونِي وَكَادُوا

पकड़ कर अपनी तरफ़ खींचने लगा²⁸² कहा ऐ मेरे मां जाए²⁸³ कौम ने मुझे कमजोर समझा और करीब था कि

يَقْتُلُونَنِي ۗ فَلَا تُشِبِّتْ بِي الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ

मुझे मार डालें तो मुझ पर दुश्मनों को न हंसा²⁸⁴ और मुझे ज़ालिमों

الظَّالِمِينَ ﴿١٥٠﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلَا تَجْعَلْ لِي خَلْفًا فِي رَحْمَتِكَ ۗ وَ

में न मिला²⁸⁵ अर्ज़ की ऐ रब मेरे मुझे और मेरे भाई को बख़्शा दे²⁸⁶ और हमें अपनी रहमत के अन्दर ले ले और

أَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿١٥١﴾ إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيِّئًا لَهُمْ غَضَبٌ

तू सब मेहर (रहम करने) वालों से बढ़ कर मेहर वाला बेशक वोह जो बछड़ा ले बैठे अन्करीब उन्हें उन के रब

مِّنْ رَبِّهِمْ وَذَلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ ﴿١٥٢﴾

का ग़ज़ब और ज़िल्लत पहुंचना है दुन्या की ज़िन्दगी में और हम ऐसा ही बदला देते हैं बोहतान हायों (बोहतान बांधने वालों) को

276 : कि उन्होंने ने **اعلوا** तआला की इबादत से ए'राज किया और ऐसे अज़िज़ो नाकिस बछड़े को पूजा । 277 : अपने रब की मुनाजात से मुशरफ़ हो कर तूर से 278 : इस लिये कि **اعلوا** तआला ने उन को ख़बर दे दी थी कि सामरी ने उन की कौम को गुमराह कर दिया ।

279 : कि लोगों को बछड़ा पूजने से न रोका । 280 : और मेरे तौरैत ले कर आने का इन्तिज़ार न किया । 281 : तौरैत की । हज़रते मूसा

282 : क्यूं कि हज़रते मूसा **عليه السلام** को अपनी कौम का ऐसी बद तरीन मा'सियत में मुब्तला होना निहायत शाक़ और गिरां हुवा तब हज़रते हारून **عليه السلام** ने हज़रते मूसा **عليه السلام** से 283 : मैं ने कौम को रोकने और उन को वा'जो नसीहत करने में कमी नहीं

की लेकिन 284 : और मेरे साथ ऐसा सुलूक न करो जिस से वोह खुश हों । 285 : हज़रते मूसा **عليه السلام** ने अपने भाई का उज़्र कबूल कर के बारगाहे इलाही में 286 : अगर हम में से किसी से कोई इफ़रात या तफ़रीत (कमी या बेशी) हो गई । येह दुआ आप ने भाई को राज़ी करने और आ'दा की शमातत रफ़अ (दुश्मन के खुश होने को दूर) करने के लिये फ़रमाई ।

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ

और जिन्होंने ने बुराइयां कीं और उन के बाद तौबा की और ईमान लाए तो इस के बाद

بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٥٢﴾ وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضِبُ أَخَذَ

तुम्हारा रब बख्शने वाला मेहरबान है²⁸⁷ और जब मूसा का गुस्सा थमा (दूर हुआ) तख़ियारों

الْأُلُوحِ ۗ وَفِي نُسُخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ ﴿١٥٣﴾

उठा लीं और उन की तहरीर में हिदायत और रहमत है उन के लिये जो अपने रब से डरते हैं

وَاخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا لِمِيقَاتِنَا ۖ فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ

और मूसा ने अपनी कौम से सत्तर मर्द हमारे वादे के लिये चुने²⁸⁸ फिर जब उन्हें

الرَّجْفَةَ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِيَّايَ ۗ أَتُهْلِكُنَا

जलजले ने लिया²⁸⁹ मूसा ने अर्ज की ऐ रब मेरे तू चाहता तो पहले ही उन्हें और मुझे हलाक कर देता²⁹⁰ क्या तू हमें उस काम

بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا ۗ إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ ۗ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَاءُ وَ

पर हलाक फ़रमाएगा जो हमारे बे अक़लों ने किया²⁹¹ वोह नहीं मगर तेरा आज्माना तू उस से बहकाए जिसे चाहे और

تَهْدِي مَنْ تَشَاءُ ۗ أَنْتَ وَلِيٌّ غَافِرٌ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ

राह दिखाए जिसे चाहे तू हमारा मौला है तो हमें बख़्शा दे और हम पर मेहर (रहमो करम) कर और तू सब से बेहतर

الْغَافِرِينَ ﴿١٥٥﴾ وَكَتَبْنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً ۗ وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدُنَا

बख़्शने वाला है और हमारे लिये इस दुनिया में भलाई लिख²⁹² और आख़िरत में बेशक हम तेरी तरफ़

إِلَيْكَ ۗ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ ۗ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ

रुजूअ लाए फ़रमाया²⁹³ मेरा अज़ाब मैं जिसे चाहूँ दूँ²⁹⁴ और मेरी रहमत हर चीज़ को

287 मस्अला : इस आयत से साबित हुआ कि गुनाह ख़्वाह सगीरा हों या कबीरा जब बन्दा उन से तौबा करता है तो **अल्लाह** तबारक व तआला अपने फ़ज़्लो रहमत से उन सब को मुआफ़ फ़रमाता है। **288 :** कि वोह हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَامُ** के साथ **अल्लाह** के हुजूर में हाज़िर हो कर कौम की गौसाला परस्ती की उज़्र ख़्वाही करें चुनान्चे हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَامُ** उन्हें ले कर हाज़िर हुए। **289 :** हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا** ने फ़रमाया कि जलजले में मुब्तला होने का सबब येह था कि कौम ने जब बछड़ा काइम किया था येह उन से जुदा न हुए थे। **290 (ग़ारन) :** या'नी मीकात में हाज़िर होने से पहले ताकि बनी इसराईल उन सब की हलाकत अपनी आंखों से देख लेते और उन्हें मुज़ पर क़त्ल की तोहमत लगाने का मौक़अ न मिलता। **291 :** या'नी हमें हलाक न कर और अपना लुत्फ़ो करम फ़रमा। **292 :** और हमें तौफ़ीके ताअत मर्हमत फ़रमा। **293 :** **अल्लाह** तआला ने हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَامُ** से **294 :** मुझे इख़्तियार है सब मेरे मम्लूक और बन्दे हैं किसी को मजाले ए'तिराज़ नहीं।

شَيْءٌ ۖ فَسَاكُنْتُمْهَا الَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُمْ

घरे है²⁹⁵ तो अन्करीब मैं²⁹⁶ ने'मतों को उन के लिये लिख दूंगा जो डरते और जकात देते हैं और वोह

بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي

हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं वोह जो गुलामी करेंगे उस रसूल बे पढ़े गैब की खबरें देने वाले की²⁹⁷ जिसे

يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ يَأْمُرُهُمْ

लिखा हुवा पाएंगे अपने पास तौरैत और इन्जील में²⁹⁸ वोह उन्हें भलाई

295 : दुनिया में नेक और बद सब को पहुंचती है। **296 :** आखिरत की **297 :** यहां रसूल से ब इज्माए मुफस्सरीन सथ्यिदे आलम मुहम्मद मुस्तफा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुराद हैं, आप का जिक्र वस्फे रि सालत से फरमाया गया क्यूं कि आप **अल्लाह** और उस की मख्लूक के दरमियान वासिता हैं, फराइजे रि सालत अदा फरमाते हैं, **अल्लाह** तआला के अवामिर व नहय व शराएअ व अहकाम उस के बन्दों को पहुंचाते हैं, इस के बा'द आप की तौसीफ में नबी फरमाया गया, इस का तरजमा हजरते मुतर्जिम سُؤهُ ने "गैब की खबरें देने वाले" किया है और येह निहायत ही सहीह तरजमा है क्यूं कि "नबा" (उस) खबर को कहते हैं जो मुफ़ीदे इल्म हो और शाइबए किञ्च से खाली हो। कुरआने करीम में येह लफज़ इस मा'ना में ब कसरत मुस्ता'मल हुवा है, एक जगह इशाद हुवा : "فَلْهُوَ نَبِيٌّ عَظِيمٌ" (तुम फरमाओ वोह बड़ी खबर है), एक जगह फरमाया : "تِلْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ" (येह गैब की खबरें हम तुम्हारी तरफ वहय करते हैं), एक जगह फरमाया : "فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَاءِهِمْ" (जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये) और ब कसरत आयत में येह लफज़ इस मा'ना में वारिद हुवा है, फिर येह लफज़ या फाइल के मा'ना में होगा या मफ़रूल के मा'ना में, पहली सूत में इस के मा'ना गैब की खबरें देने वाले और दूसरी सूत में इस के मा'ना होंगे गैब की खबरें दिये हुए और दोनों मा'ना को कुरआने करीम से ताईद पहुंचती है, पहले मा'ना की ताईद इस आयत से होती है : "بَنِيَّ عَادِي" (खबर दो मेरे बन्दों को)", दूसरी आयत में फरमाया : "فَلْأُوْتِيْنُكُمْ" (तुम फरमाओ ! क्या मैं तुम्हें खबर दूं) और इसी कबील से है हजरते मसीह عَلَيْهِ السَّلَامُ का इशाद जो कुरआन में वारिद हुवा : "أَنْبِئْكُمْ بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدْخِرُونَ" (और तुम्हें बताता हूं जो तुम खाते और जो जम्अ कर रखते हो) और दूसरी सूत की ताईद इस आयत से होती है : "بَنِيَّ الْعَالَمِينَ الْخَبِير" (मुझे इल्म वाले खबरदार ने बताया) और हकीकत में अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَامُ गैब की खबरें देने वाले ही होते हैं। तफ्सीरी ख़ाजिन में है कि आप के वस्फ में नबी फरमाया क्यूं कि नबी होना आ'ला और अशरफ मरातिब में से है और येह इस पर दलालत करता है कि आप **अल्लाह** के नज्दीक बहुत बुलन्द दरजे रखने वाले और उस की तरफ से खबर देने वाले हैं। "अम्मी" का तरजमा हजरते मुतर्जिम سُؤهُ ने (बे पढ़े) फरमाया, येह तरजमा बिल्कुल हजरते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا के इशाद के मुताबिक है और यकीनन "उम्मी" होना आप के मो'जिजात में से एक मो'जिजा है कि दुनिया में किसी से पढ़े नहीं और किताब वोह लाए जिस में अब्वलीन व आखिरीन और गैबों के उलूम हैं। (गारन)

خَاكِي وَبِرَاجِ عَرْشِ مَنْزِلِ أُمِّي وَكِتَابِ خَانِهِ دَرْدَلِ
बशर ऐसे कि अर्श की बुलन्दियों पर आप का मक़ाम है उम्मी ऐसे कि तमाम उलूम का ख़ज़ाना आप के दिल में है

دِيْكَرِ أُمِّي وَدَقِيْقَةِ دَانَ عَالَمِ بِي سَايِهِ وَسَانِبَانَ عَالَمِ

उम्मी हैं मगर दकीका दाने जहां हैं बे साया हैं लेकिन साएबाने जहां हैं (صلوة الله عليه وسلامه)

298 : या'नी तौरैत व इन्जील में आप की ना'त व सिफत व नुबुव्वत लिखी पाएंगे। **हदीस :** हजरते अता इब्ने यसार ने हजरते अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से सथ्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के वोह औसाफ दरयाफ्त किये जो तौरैत में मज्कूर हैं, उन्होंने ने फरमाया कि हुजूर के जो औसाफ कुरआने करीम में आए हैं उन्हीं में से बा'ज औसाफ तौरैत में मज्कूर हैं, इस के बा'द उन्हीं ने पढ़ना शुरू किया ऐ नबी ! हम ने तुम्हें भेजा शाहिद व मुबशिशर और नजीर और उम्मियों का निगहवां बना कर, तुम मेरे बन्दे और मेरे रसूल हो, मैं ने तुम्हारा नाम मुतवक्किल रखा, न बद खुल्क हो न सख़्त मिजाज, न बाजारों में आवाज़ बुलन्द करने वाले, न बुराई से बुराई को दफ़अ करो, लेकिन ख़ताकारों को मुआफ़ करते हो और उन पर एहसान फरमाते हो, **अल्लाह** तआला तुम्हें न उठाएगा जब तक कि तुम्हारी बरकत से गैर मुस्तक़ीम मिल्लत (सीधे रास्ते से भटके हुए लोगों) को इस तरह रास्त (राहे हक़ पर) न फरमा दे कि लोग सिद्की यकीन के साथ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَّسُولُ اللَّهِ पुकारने लंगें और तुम्हारी बदौलत अन्धी आंखें "बीना" और बहरे कान "शिन्वा" (सुनने वाले) और पर्दों में लिपटे हुए दिल "कुशादा" हो जाएं और हजरते का'ब अह्बार से हुजूर की सिफ़त में तौरैत शरीफ़ का येह मज्मून भी मन्कूल है कि **अल्लाह** तआला ने आप की सिफ़त में फरमाया कि मैं उन्हे हर ख़ूबी के काबिल करूंगा और हर खुल्के करीम अता फरमाऊंगा और इत्मीनाने क़ल्ब व वकार को उन का लिबास बनाऊंगा

بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَهُمُ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ

का हुक्म देगा और बुराई से मन्अ फरमाएगा और सुथरी चीजें उन के लिये हलाल फरमाएगा और गन्दी चीजें

عَلَيْهِمُ الْخَبِيثَاتِ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ ط

उन पर हराम करेगा और उन पर से वोह बोझ²⁹⁹ और गले के फन्दे³⁰⁰ जो उन पर थे उतारेगा

فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ

तो वोह जो उस पर³⁰¹ ईमान लाएं और उस की ता'ज़ीम करें और उसे मदद दें और उस नूर की पैरवी करें जो उस के

और ता'आत व एहसान को उन का शिआर करूंगा और तक्वे को उन का ज़मीर और हिकमत को उन का राज और सिद्क़ो वफ़ा को उन की तबीअत और अफ़्फ़ो करम को उन की आदत और अदल को उन की सीरत और इज़्हारे हक़ को उन की शरीअत और हिदायत को उन का इमाम और इस्लाम को उन की मिल्लत बनाऊंगा। अहमद उन का नाम है, ख़ल्क़ को उन के सदके में गुमराही के बा'द हिदायत और जहालत के बा'द इल्मो मा'रिफ़त और गुमनामी के बा'द रिफ़अतो मन्जिलत अता करूंगा और उन्हीं की बरकत से क़िल्लत के बा'द कसरत और फ़क्क के बा'द दौलत और तफ़िफ़के के बा'द महबबत इनायत करूंगा, उन्हीं की बदौलत मुख़्तलिफ़ क़बाइल, ग़ैर मुज्तमअ ख़्वाहिशों और इख़्तिलाफ़ रखने वाले दिलों में उल्फ़त पैदा करूंगा और उन की उम्मत को तमाम उम्मतों से बेहतर करूंगा। एक और हदीस में तौरैत शरीफ़ से हुजूर के येह औसाफ़ मन्कूल हैं : मेरे बन्दे अहमदे मुख़्तार, उन का जाए विलादत मक्कए मुकर्रमा और जाए हिजरत मदीनए तय्यिबा है, उन की उम्मत हर हाल में **अब्बास** की कसीर हम्द करने वाली है। येह चन्द नुकूल अहादीस से पेश किये गए। कुतुबे इलाहिय्यह हुजूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की ना'त व सिफ़त से भरी हुई थीं, अहले किताब हर कर्न (जमाने) में अपनी किताबों में तराश ख़राश करते रहे और उन की बड़ी कोशिश इस पर मुसल्लत रही की हुजूर का चिफ़्र अपनी किताबों में नाम को न छोड़ें। तौरैत इन्जील वग़ैरा उन के हाथ में थीं इस लिये उन्हें इस में कुछ दुश्वारी न थी, लेकिन हज़ारों तब्दीलियां करने के बा'द भी मौजूदा ज़माने की बाईबल में हुजूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की बिशारत का कुछ न कुछ निशान बाकी रह ही गया, चुनान्वे ब्रिटिश एन्ड फ़ोरन बाईबल सोसायटी लाहोर 1931 सि.ई. की छपी हुई बाईबल में यूहन्ना की इन्जील के बाब चौदह की सोलहवीं आयत में है : "और मैं बाप से दरख़्वास्त करूंगा तो वोह तुम्हें दूसरा मददगार बख़्ख़ेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे।" लफ़ज़ "मददगार" पर हाशिया है उस में इस के मा'ने वकील या शफ़ीअ लिखे (हैं) तो अब हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَامُ** के बा'द ऐसा आने वाला जो शफ़ीअ हो और अबद तक रहे या'नी उस का दीन कभी मन्सूख़ न हो बजुज सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के कौन है ? फिर उन्तीसवीं तीसवीं आयत में है : "और अब मैं ने तुम से उस के होने से पहले कह दिया है ताकि जब हो जाए तो तुम यकीन करो इस के बा'द मैं तुम से बहुत सी बातें न करूंगा क्यूं कि दुन्या का सरदार आता है और मुज़ में उस का कुछ नहीं।" कैसी साफ़ बिशारत है और हज़रते मसीह **عَلَيْهِ السَّلَامُ** ने अपनी उम्मत को हुजूर की विलादत का कैसा मुन्तज़ि़र बनाया और शौक़ दिलाया है और दुन्या का सरदार ख़ास सय्यिदे आलम का तरजमा है और येह फ़रमाना कि मुज़ में उस का कुछ नहीं हुजूर की अज़मत का इज़्हार और इस के हुजूर अपना कमाले अदब व इन्किसार है फिर इसी किताब के बाब सोलह की सातवीं आयत में है : "लेकिन मैं तुम से सच कहता हूं कि मेरा जाना तुम्हारे लिये फ़ाएदे मन्द है क्यूं कि अगर मैं न जाऊं तो वोह मददगार तुम्हारे पास न आएगा लेकिन अगर जाऊंगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।" इस में हुजूर की बिशारत के साथ इस का भी साफ़ इज़्हार है कि हुजूर ख़ातमुल अम्बिया हैं आप का जुहूर जब ही होगा जब हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَامُ** भी तशरीफ़ ले जाएं। इस की तेरहवीं आयत में है : "लेकिन जब वोह या'नी सच्चाई का रूह आएगा तो तुम को तमाम सच्चाई की राह दिखाएगा इस लिये कि वोह अपनी तरफ़ से न कहेगा लेकिन जो कुछ सुनेगा वोही कहेगा और तुम्हें आयिन्दा की ख़बरे देगा।" इस आयत में बताया गया कि सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** की आमद पर दीने इलाही की तक्मील हो जाएगी और आप सच्चाई की राह या'नी दीने हक़ को मुकम्मल कर देंगे इस से येही नतीजा निकलता है कि उन के बा'द कोई नबी न होगा और येह कलिमे कि अपनी तरफ़ से न कहेगा जो कुछ सुनेगा वोही कहेगा ख़ास "مَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۗ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ" का तरजमा है और येह जुम्ला कि तुम्हें आयिन्दा की ख़बरे देगा इस में साफ़ बयान है कि वोह नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ग़ैबी उलूम ता'लीम फ़रमाएंगे जैसा कि कुरआने करीम में फ़रमाया : "يَعْلَمُكُمْ مَا تَكُونُوا مَعْلَمُونَ" (और तुम्हें वोह ता'लीम फ़रमाता है जिस का तुम्हें इल्म न था) और "مَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ" (येह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं) 299 : या'नी सख़्त तक्लीफ़ जैसे कि तौबा में अपने आप को क़त्ल करना और जिन आ'ज़ा से गुनाह सादिर हों उन को काट डालना। 300 : या'नी अहकामे शाक्क़ा (वोह अहकाम जिन पर अमल करना दुश्वार हो) जैसे कि बदन और कपड़े के जिस मक़ाम को नजासत लगे उस को कैंची से काट डालना और ग़नीमतों को जलाना और गुनाहों का मकानों के दरवाज़ों पर जाहिर होना वग़ैरा। 301 : या'नी मुहम्मद मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर।

مَعَهُ ۗ اُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٥٤﴾ قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اٰنِى رَاسُوْلُ اللّٰهِ

साथ उतरा³⁰² वोही बा मुराद हुए तुम फ़रमाओ ऐ लोगो मैं तुम सब की तरफ़ उस

اِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِى لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ

अल्लाह का रसूल हूँ³⁰³ कि आस्मान व ज़मीन की बादशाही उसी को है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं

يُحْيِ وَيُمِيتُ ۗ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَاسُوْلِهِ النَّبِىِّ الْاُمِّىِّ الَّذِى يُؤْمِنُ

जिलाए और मारे (ज़िन्दगी और मौत दे) तो ईमान लाओ अल्लाह और उस के रसूल बे पढ़े ग़ैब बताने वाले पर कि अल्लाह और उस की

بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهِ وَاَتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٥٥﴾ وَمِنْ قَوْمِ مُوسٰى اُمَّةٌ

बातों पर ईमान लाते हैं और उन की गुलामी करो कि तुम राह पाओ और मूसा की क़ौम से एक गुरौह है

يَهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْذِبُوْنَ ﴿١٥٦﴾ وَقَطَعْنٰهُمْ اِثْنَيْ عَشَرَ اَسْبَاطًا

कि हक़ की राह बताता और उसी से³⁰⁴ इन्साफ़ करता और हम ने उन्हें बांट दिया बारह क़बीले

اُمَمًا ۗ وَاَوْحَيْنَا اِلٰى مُوسٰى اِذَا سَتَقِفُّهُ قَوْمُهٗ اَنْ اَضْرِبَ بِعَصَاكَ

गुरौह गुरौह और हम ने वहुय भेजी मूसा को जब उस से उस की क़ौम ने³⁰⁵ पानी मांगा कि इस पथर पर अपना

الْحَجَرَ ۗ فَاَنْبَجَسَتْ مِنْهُ اِثْنَا عَشَرَ عَيِّنًا ۗ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ

असा मारो तो उस में से बारह चश्मे फूट निकले³⁰⁶ हर गुरौह ने अपना घाट

مَشْرَبَهُمْ ۗ وَظَلَلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّٰ وَ

पहचान लिया और हम ने उन पर अब्र साएबान किया³⁰⁷ और उन पर मन्न व सल्वा

السَّلٰوٰى ۗ كُلُّوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۗ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْا

उतारा खाओ हमारी दी हुई पाक चीज़ें और उन्होंने ने³⁰⁸ हमारा कुछ नुक़सान न किया लेकिन अपनी ही

302 : इस नूर से कुरआन शरीफ़ मुराद है जिस से मोमिन का दिल रोशन होता है और शक व जहालत की तारीकियां दूर होती हैं और इल्मो यकीन की ज़िया फैलती है। 303 : यह आयत सय्यिदे आलम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के उमूमे रिसालत की दलील है कि आप तमाम ख़ल्क के रसूल हैं और कुल जहां आप की उम्मत। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है : हुज़ूर फ़रमाते हैं : पांच चीज़ें मुझे ऐसी अता हुई जो मुझ से पहले किसी को न मिलीं : (1) हर नबी खास क़ौम की तरफ़ मब़रस होता था और मैं सुख़ व सियाह की तरफ़ मब़रस फ़रमाया गया। (2) मेरे लिये ग़नीमतें हलाल की गईं और मुझ से पहले किसी के लिये नहीं हुई थीं। (3) मेरे लिये ज़मीन पाक और पाक करने वाली (क़बिले तयम्मम) और मस्जिद की गईं, जिस किसी को कहीं नमाज़ का वक़्त आए वहाँ पढ़ ले। (4) दुश्मन पर एक माह की मसाफ़त तक मेरा रो'ब डाल कर मेरी मदद फ़रमाई गई। (5) और मुझे शफ़ाअत इनायत की गई। मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में यह भी है कि मैं तमाम ख़ल्क की तरफ़ रसूल बनाया गया और मेरे साथ अम्बिया ख़तम किये गए। 304 : या'नी हक़ से 305 : तीह में 306 : हर गुरौह के लिये एक चश्मा। 307 : ताकि धूप से अमन में रहें। 308 : ना शुक्री कर के।

أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٢٠﴾ وَإِذْ قِيلَ لَهُمْ اسْكُنُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا

जानों का बुरा करते थे और याद करो जब उन³⁰⁹ से फ़रमाया गया उस शहर में बसो³¹⁰ और उस में

مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ

जो चाहो खाओ और कहो गुनाह उतरे (ऐ **اللَّهُ** हमारे गुनाह बख़्श दे) और दरवाज़े में सज्दा करते दाख़िल हो हम तुम्हारे गुनाह

خَطِيئَتِكُمْ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٢١﴾ فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا

बख़्श देंगे अन्क़रीब नेकों को ज़ियादा अ़ता फ़रमाएंगे तो उन में के ज़ालिमों ने बात बदल दी

غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا

उस के ख़िलाफ़ जिस का उन्हें हुक़्म था³¹¹ तो हम ने उन पर आस्मान से अज़ाब भेजा बदला उन के

يَظْلِمُونَ ﴿١٢٢﴾ وَسَأَلَهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاصِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ

जुलम का³¹² और उन से हाल पूछो उस बस्ती का कि दरिया किनारे थी³¹³ जब

يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيَتَانِهِمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَعًا وَيَوْمَ لَا

वोह हफ़्ते के बारे में हद से बढ़ते³¹⁴ जब हफ़्ते के दिन उन की मछलियां पानी पर तैरती उन के सामने आतीं और जो दिन

309 : बनी इसराईल 310 : या'नी बैतुल मक्दिस में 311 : या'नी हुक़्म तो यह था कि "حِطَّةٌ" कहते हुए दरवाज़े में दाख़िल हों "حِطَّةٌ"

तौबा और इस्तिफ़ार का कलिमा है लेकिन वोह बजाए इस के बराहे तमस्ख़र "حِطَّةٌ فِي شَعِيرَةٍ" कहते हुए दाख़िल हुए। 312 : या'नी

अज़ाब भेजने का सबब उन का जुलम और हुक़्मे इलाही की मुख़ालफ़त करना है। 313 : हज़रत नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ को ख़िताब है

कि आप अपने क़रीब रहने वाले यहूद से तौबीख़न (मलामत करते हुए) उस बस्ती वालों का हाल दरयाफ़त फ़रमाएं, मक्सूद इस सुवाल से

येह था कि कुफ़्फ़ार पर ज़ाहिर कर दिया जाए कि कुफ़्फ़ो मा'सियत इन का क़दीमी दस्तूर है, सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की नुबुव्वत और हज़ूर

के मो'जिज़ात का इन्कार करना येह उन के लिये कोई नई बात नहीं है इन के पहले भी कुफ़्फ़ पर मुसिर रहे हैं। इस के बा'द उन के अस्लाफ़

का हाल बयान फ़रमाया कि वोह हुक़्मे इलाही की मुख़ालफ़त के सबब बन्दरों और सुअरों की शक़ल में मस्ख़ कर दिये गए, उस बस्ती में

इख़िलाफ़ है कि वोह कौन सी थी? हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह एक क़र्या मिस्र व मदीने के दरमियान है। एक क़ौल

है कि मद्यन व तूर के दरमियान। ज़ोहरी ने कहा कि वोह क़र्या त़बरिया शाम है और हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا की एक रिवायत में है

कि वोह मद्यन है। बा'ज ने कहा : ऐला है। 314 : कि बा वुजूद मुमानअत के हफ़्ते के रोज़ शिकार करते, उस बस्ती के लोग

तीन गुरौह में मुन्क़सिम हो गए थे एक तिहाई ऐसे लोग थे जो शिकार से बाज़ रहे और शिकार करने वालों को मन्अ करते थे और एक तिहाई

ख़ामोश थे दूसरों को मन्अ न करते थे और मन्अ करने वालों से कहते थे ऐसी क़ौम को क्यूं नसीहत करते हो जिन्हें **اللَّهُ** हलाक करने

वाला है, और एक गुरौह वोह ख़ताकार लोग थे जिन्होंने ने हुक़्मे इलाही की मुख़ालफ़त की और शिकार किया और खाया और बेचा और जब

वोह इस मा'सियत से बाज़ न आए तो मन्अ करने वाले गुरौह ने कहा कि हम तुम्हारे साथ बूदो बाश (रहना सहना इकठ्ठा) न रखेंगे और गाउं

को तक्सीम कर के दरमियान में एक दीवार खींच दी। मन्अ करने वालों का एक दरवाज़ा अलग था जिस से आते जाते थे। हज़रते दावूद

عَلَيْهِ السَّلَام ने ख़ताकारों पर ला'नत की। एक रोज़ मन्अ करने वालों ने देखा कि ख़ताकारों में से कोई नहीं निकला तो उन्होंने ख़याल किया

कि शायद आज शराब के नशे में मदहोश हो गए होंगे, उन्हें देखने के लिये दीवार पर चढ़े तो देखा कि वोह बन्दरों की सूतों में मस्ख़ हो गए

थे। अब येह लोग दरवाज़ा खोल कर दाख़िल हुए तो वोह बन्दर अपने रिश्तेदारों को पहचानते थे और उन के पास आ कर उन के कपड़े सूंघते

थे और येह लोग उन बन्दर हो जाने वालों को नहीं पहचानते थे उन लोगों ने उन से कहा क्या हम लोगों ने तुम को मन्अ नहीं किया था! उन्होंने

ने सर के इशारे से कहा : हां। और वोह सब हलाक हो गए और मन्अ करने वाले सलामत रहे।

يَسْتُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذَلِكَ نَبَلُوهُم بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٣٢﴾ وَإِذْ

हफ्ते का न होता न आतीं इस तरह हम उन्हें आजमाते थे उन की बे हुक्मी के सबब और जब

قَالَتْ أُمَّةٌ مِنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا

उन में से एक गुरौह ने कहा क्यूं नसीहत करते हो उन लोगों को जिन्हें **ALLAH** हलाक करने वाला है या उन्हें सख्त अज़ाब

شَدِيدًا ۖ قَالُوا مَعذِرَةٌ أَلَىٰ رَبِّكَ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٣٣﴾ فَلَمَّا نَسُوا

देने वाला बोले तुम्हारे रब के हुजूर मा'जिरत को³¹⁵ और शायद उन्हें डर हो³¹⁶ फिर जब वोह भुला बैठे

مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ

जो नसीहत उन्हें हुई थी हम ने बचा लिये वोह जो बुराई से मन्अ करते थे और ज़ालिमों को

ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بِيْسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿١٣٥﴾ فَلَمَّا عَتَا عَن مَّا نُهَوُّا

बुरे अज़ाब में पकड़ा बदला उन की ना फ़रमानी का फिर जब उन्होंने ने मुमानअत के हुक्म से सरकशी की

عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿١٣٦﴾ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لِيُبْعَثَنَّ

हम ने उन से फ़रमाया हो जाओ बन्दर दुत्कारे (धुत्कारे) हुए³¹⁷ और जब तुम्हारे रब ने हुक्म सुना दिया कि ज़रूर

عَلَيْهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ يَسُوفُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ ۖ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ

क्रियामत के दिन तक उन³¹⁸ पर ऐसे को भेजता रहूंगा जो उन्हें बुरी मार चखाए³¹⁹ बेशक तुम्हारा रब ज़रूर जल्द

الْعِقَابِ ۗ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٣٧﴾ وَقَطَّعْنَهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَّمًا مِنْهُمْ

अज़ाब वाला है³²⁰ और बेशक वोह बख़्शने वाला मेहरबान है³²¹ और उन्हें हम ने ज़मीन में मुतफ़रिक् कर दिया गुरौह गुरौह उन में कुछ

الصَّالِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَبَلَوْنَهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ

नेक हैं³²² और कुछ और तरह के³²³ और हम ने उन्हें भलाइयों और बुराइयों से आजमाया कि कहीं

يَرْجِعُونَ ﴿١٣٨﴾ فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ

वोह रुजूअ लाए³²⁴ फिर उन की जगह उन के बा'द वोह³²⁵ ना ख़लफ़ आए कि किताब के वारिस हुए³²⁶ इस दुन्या

315 : ताकि हम पर "नही अनिल मुन्कर" तर्क करने का इल्ज़ाम न रहे। 316 : और वोह नसीहत से नफ़अ उठा सकें। 317 : वोह बन्दर हो गए और तीन

रोज़ इसी हाल में मुब्तला रह कर हलाक हो गए। 318 : यहूद 319 : चुनान्चे उन पर **ALLAH** तअाला ने बुख़्ते नस्सर और सिन्जारीब और शाहाने

रूम को भेजा जिन्होंने उन्हें सख्त ईज़ाएँ और तक्लीफ़ें दीं और क्रियामत तक के लिये उन पर जिज़्या और जिल्लत लाज़िम हुई। 320 : उन के लिये

जो कुफ़्र पर काइम रहें। इस आयत से साबित हुवा कि उन पर अज़ाब मुस्तमिर (हमेशा) रहेगा दुन्या में भी और आख़िरत में भी। 321 : उन को जो

ALLAH की इताअत करें और ईमान लाएँ। 322 : जो **ALLAH** और रसूल पर ईमान लाए और दीन पर साबित रहे। 323 : जिन्होंने ने ना फ़रमानी

عَرَضَ هَذَا الْأَدْنَى وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِن يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلَهُ

का माल लेते हैं³²⁷ और कहते अब हमारी बख़्शिश होगी³²⁸ और अगर वैसा ही माल उन के पास और आए

يَأْخُذُوهُ ۖ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِيثَاقُ الْكِتَابِ أَن لَّا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ

तो ले लें³²⁹ क्या उन पर किताब में अहद न लिया गया कि **अल्लाह** की तर्फ़ निस्वत न करें

إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ ۗ وَاللَّذَّارُ الْأَخْرَةُ خَيْرٌ لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ ۗ

मगर हक़ और उन्होंने ने उसे पढ़ा³³⁰ और बेशक पिछला घर (आखिरत) बेहतर है परहेज़ गारों को³³¹

أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾ وَالَّذِينَ يُسْكِنُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۗ إِنَّا

तो क्या तुम्हें अक़ल नहीं और वोह जो किताब को मज़बूत थामते हैं³³² और उन्होंने ने नमाज़ काइम रखी हम

لَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾ وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَ

नेकों का नेग (सवाब) नहीं गंवाते (जाएअ नहीं करते) और जब हम ने पहाड़ उन पर उठाया गया वोह साएबान है और

ظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ ۗ خُذُوا مَا آتَيْنَكُم بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ

समझे कि वोह उन पर गिर पड़ेगा³³³ लो जो हम ने तुम्हें दिया जोर से³³⁴ और याद करो जो उस में है कि कहीं

की और जिन्हों ने कुफ़्र किया और दीन को बदला और मुतगय्यर किया। 324 : भलाइयों से ने'मतो राहत और बुराइयों से शिहतो तकलीफ़ मुराद है। 325 : जिन को दो किसमें बयान फ़रमाई गई। 326 : या'नी तौरैत के, जो उन्होंने ने अपने अस्लाफ़ से पाई और उस के अवामिर व नवाही और तहलील व तहरीम वगैरा मज़ामीन पर मुत्तलअ हुए। मदारिक में है कि येह वोह लोग हैं जो रसूले करीम **صلی اللہ علیہ وسلم** के ज़माने में थे उन की हालत येह है कि 327 : बतौर रिश्वत के अहकाम की तब्दील और कलाम की तग़यीर पर और वोह जानते भी हैं कि येह ह़राम है लेकिन फिर भी इस गुनाहे अज़ीम पर मुसिर हैं। 328 : और इन गुनाहों पर हम से कुछ मुआख़ज़ा न होगा। 329 : और आयिन्दा भी गुनाह करते चले जाएं। सुद्दी ने कहा कि बनी इसराईल में कोई काज़ी ऐसा न होता था जो रिश्वत न ले, जब उस से कहा जाता था कि तुम रिश्वत लेते हो तो कहता था कि येह गुनाह बख़्शा दिया जाएगा। उस के ज़माने में दूसरे उस पर ता'न करते थे लेकिन जब वोह मर जाता या मा'जूल कर दिया जाता और वोही ता'न करने वाले उस की जगह हाक़िम व काज़ी होते तो वोह भी इसी तरह रिश्वत लेते। 330 : लेकिन बा वुजूद इस के उन्होंने ने उस के खिलाफ़ किया। तौरैत में गुनाह पर इसरार करने वाले के लिये मग़िफ़रत का वा'दा न था तो उन का गुनाह किये जाना तौबा न करना और इस पर येह कहना कि हम से मुआख़ज़ा न होगा येह **अल्लाह** पर इफ़ितरा है। 331 : जो **अल्लाह** के अज़ाब से डरें और रिश्वत व ह़राम से बचें और उस की फ़रमां बरदारी करें 332 : और उस के मुताबिक़ अमल करते हैं और उस के तमाम अहक़ाम को मानते हैं और उस में तग़यीर व तब्दील रवा (जाइज़) नहीं रखते। शाने नुज़ूल : येह आयत अहले किताब में से हज़रते अब्दुल्लाह बिन सलाम वगैरा ऐसे अस्हाब के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हों ने पहली किताब का इत्तिबाअ किया उस की तहरीफ़ न की, उस के मज़ामीन को न छुपाया और उस किताब के इत्तिबाअ की बदीलत उन्हें कुरआने पाक पर ईमान नसीब हुवा। (ख़ान दरारक) 333 : जब बनी इसराईल ने तकालीफ़े शाक़्का की वजह से अहक़ामे तौरैत को क़बूल करने से इन्कार किया तो हज़रते जिब्रील ने ब हुक्मे इलाही एक पहाड़ जिस की मिक्दार उन के लश्कर के बराबर एक फ़रसंग तवील एक फ़रसंग अरीज़ थी उठा कर साएबान की तरह उन के सरों के क़रीब कर दिया और उन से कहा गया कि अहक़ामे तौरैत क़बूल करो वरना येह तुम पर गिरा दिया जाएगा, पहाड़ को सरों पर देख कर सब के सब सज्दे में गिर गए मगर इस तरह कि बायां रुख़सारा व अब्रू तो उन्होंने ने सज्दे में रख दी और दाहनी आंख से पहाड़ को देखते रहे कि कहीं गिर न पड़े चुनान्वे अब तक यहूदियों के सज्दे की शान येही है। 334 : अज़म व कोशिश से।

تَتَّقُونَ ﴿١٤١﴾ وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِي آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَ

तुम परहेज गार हो और ऐ महबूब याद करो जब तुम्हारे रब ने औलादे आदम की पुशत से उन की नस्तल निकाली और

أَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۗ شَهِدْنَا ۗ أَنْ تَقُولُوا

उन्हें खुद उन पर गवाह किया क्या मैं तुम्हारा रब नहीं³³⁵ सब बोले क्यूं नहीं हम गवाह हुए³³⁶ कि कहीं

يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ ﴿١٤٢﴾ أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ

क़ियामत के दिन कहो कि हमें इस की खबर न थी³³⁷ या कहो कि शिर्क तो पहले

آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ ۗ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْ بَعْدِهِمْ ۗ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ

हमारे बाप दादा ने किया और हम उन के बा'द बच्चे हुए³³⁸ तो क्या तू हमें उस पर हलाक फरमाएगा जो

الْمُبْطِلُونَ ﴿١٤٣﴾ وَكَذَلِكَ نَقُصُّ الْأَيَّاتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٤٣﴾ وَآتِلْ

अहले बातिल ने किया³³⁹ और हम इसी तरह आयतें रंग रंग (तफ़्सील) से बयान करते हैं³⁴⁰ और इस लिये कि कहीं वोह फिर आए³⁴¹ और ऐ महबूब

عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ آيَاتِنَا فَاسْلَخَ مِنْهَا فَأَتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ

उन्हें उस का अहवाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं³⁴² तो वोह उन से साफ़ निकल गया³⁴³ तो शैतान उस के पीछे लगा तो

335 : हदीस शरीफ़ में है कि **اللَّهُ** तआला ने हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** की पुशत से उन की ज़ुरियत निकाली और उन से अहद लिया । आयात व हदीस दोनों पर नज़र करने से येह मा'लूम होता है कि ज़ुरियत का निकालना उस सिल्लिले के साथ था जिस तरह कि दुन्या में एक दूसरे से पैदा होंगे और उन के लिये रबूबियत और वहदानियत के दलाइल काइम फरमा कर और अक़ल दे कर उन से अपनी रबूबियत की शहादत तलब फरमाई **336** : अपने ऊपर और हम ने तेरी रबूबियत और वहदानियत का इक्कार किया । येह शाहिद करना इस लिये है **337** : हमें कोई तम्बीह नहीं की गई थी । **338** : जैसा उन्हें देखा उन के इत्तिबाअ व इक़िदा में वैसा ही करते रहे । **339** : येह उज़्र करने का मौक़अ न रहा जब कि उन से अहद ले लिया गया और उन के पास रसूल आए और उन्होंने ने उस अहद को याद दिलाया और तौहीद पर दलाइल काइम हुए । **340** : ताकि बन्दे तदब्बुर व तफ़क्कुर कर के हक़ व ईमान कबूल करें **341** : शिको कुफ़्र से तौहीदो ईमान की तरफ़ और नबी साहिबे मो'जिज़ात के बताने से अपने अहदे मौसाक़ को याद करें और उस के मुताबिक़ अमल करें । **342** : या'नी बल्अम बाऊर जिस का वाक़िआ मुफ़स्सिरान ने इस तरह बयान किया है कि जब हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने जब्बारीन से जंग का क़स्द किया और सर ज़मीने शाम में नुज़ूल फरमाया तो बल्अम बाऊर की क़ौम उस के पास आई और उस से कहने लगी कि हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** बहुत तेज़ मिज़ाज हैं और उन के साथ कसीर लश्कर है वोह यहां आए हैं, हमें हमारे बिलाद से निकालेंगे और क़त्ल करेंगे और बजाए हमारे बनी इसराइल को इस सर ज़मीन में आबाद करेंगे, तेरे पास इस्मे आ'जम है और तेरी दुआ कबूल होती है तू निकल और **اللَّهُ** तआला से दुआ कर कि **اللَّهُ** तआला उन्हें यहां से हटा दे । बल्अम बाऊर ने कहा : तुम्हारा बुरा हो हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** नबी हैं और उन के साथ फ़िरिश्ते हैं और ईमानदार लोग हैं मैं कैसे उन पर दुआ करूं, मैं जानता हूँ जो **اللَّهُ** तआला के नज़दीक उन का मर्तबा है, अगर मैं ऐसा करूं तो मेरी दुन्या व आख़िरत बरबाद हो जाएगी, मगर क़ौम उस से इसरार करती रही और बहुत इल्हाहो ज़ारी (रोने पीटने) के साथ उन्होंने ने अपना येह सुवाल जारी रखा तो बल्अम बाऊर ने कहा कि मैं अपने रब की मरज़ी मा'लूम कर लूँ और इस का येही तरीक़ा था कि जब कभी कोई दुआ करता पहले मरज़िये इलाही मा'लूम कर लेता और ख़्वाब में उस का जवाब मिल जाता, चुनान्चे इस मरतबा भी उस को येही जवाब मिला कि हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** और उन के हमराहियों के ख़िलाफ़ दुआ न करना उस ने क़ौम से कह दिया कि मैं ने अपने रब से इजाज़त चाही थी मगर मेरे रब ने उन पर दुआ करने की मुमानअत फ़रमा दी, तब क़ौम ने उस को हदिये और नज़राने दिये जो उस ने कबूल किये और क़ौम ने अपना सुवाल जारी रखा तो फिर दूसरी मरतबा बल्अम बाऊर ने रब तबारक व तआला से इजाज़त चाही उस का कुछ जवाब न मिला उस ने क़ौम से कह दिया कि मुझे इस मरतबा कुछ जवाब ही न मिला तो क़ौम के लोग कहने लगे कि अगर **اللَّهُ** को मन्ज़ूर न होता तो वोह पहले की तरह दोबारा

مِنَ الْغَوِينِ ﴿٤٥﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهَا وَلَكِنَّهَا أَخْلَدَتْ إِلَى الْأَرْضِ وَ

गुमराहों में हो गया और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते³⁴⁴ मगर वोह तो ज़मीन पकड़ गया³⁴⁵ और

اتَّبَعَ هَوَاهُ فَشَلَّهُ كَمَا شَلَ الْكَلْبُ إِن تَحِبُّ عَلَيْهِ يُلَهْتُ أَوْ تَشْرِكُهُ

अपनी स्वाहिश का ताबेअ हुवा तो उस का हाल कुत्ते की तरह है तू उस पर ह्म्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो

يُلَهْتُ ۚ ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَاقْصِصْ

ज़बान निकाले³⁴⁶ यह हाल है उन का जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाई तो तुम नसीहत

الْقِصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾ سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا

सुनाओ कि कहीं वोह ध्यान करें क्या बुरी कहावत है उन की जिन्हों ने हमारी आयतें

بِآيَاتِنَا وَأَنْفُسَهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿٤٧﴾ مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيٌّ وَ

झुटलाई और अपनी ही जान का बुरा करते थे जिसे **अल्लाह** राह दिखाए तो वोही राह पर है और

مَنْ يُضِلِّ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿٤٨﴾ وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ

जिसे गुमराह करे तो वोही नुकसान में रहे और बेशक हम ने जहन्नम के लिये पैदा किये बहुत

الْجِنِّ وَالْإِنْسِ لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ

जिन और आदमी³⁴⁷ वोह दिल रखते हैं जिन में समझ नहीं³⁴⁸ और वोह आंखें जिन से देखते नहीं³⁴⁹

بِهَا وَلَهُمْ أَذَانٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ

और वोह कान जिन से सुनते नहीं³⁵⁰ वोह चौपायों की तरह हैं³⁵¹ बल्कि उन से बढ़ कर गुमराह³⁵²

भी मन्अ फ़रमाता और क़ौम का इल्हाह व इसरार और भी ज़ियादा हुवा, हत्ता कि उन्हों ने उस को फ़ितने में डाल दिया और आख़िर कार वोह बद दुआ करने के लिये पहाड़ पर चढ़ा तो जो बद दुआ करता था **अल्लाह** तआला उस की ज़बान को उस की क़ौम की तरफ़ फेर देता था और अपनी क़ौम के लिये जो दुआए ख़ैर करता था बजाए क़ौम के बनी इसराईल का नाम उस की ज़बान पर आता था। क़ौम ने कहा : ऐ बलअम ! येह क्या कर रहा है ? बनी इसराईल के लिये दुआ करता है हमारे लिये बद दुआ। कहा : येह मेरे इख़्तियार की बात नहीं, मेरी ज़बान मेरे कब्जे में नहीं है और उस की ज़बान बाहर निकल पड़ी तो उस ने अपनी क़ौम से कहा : मेरी दुन्या व आख़िरत दोनों बरबाद हो गई। इस आयत में इस का बयान है। 343 : और उन का इत्तिबाअ न किया। 344 : और बुलन्द दरजा अता फ़रमा कर अबरार (फ़रमां बरदारों) की मनाज़िल में पहुंचाते 345 : और दुन्या का मफ़्तू हो गया 346 : येह एक ज़लील जानवर के साथ तश्बीह है कि दुन्या की हिंस रखने वाला अगर उस को नसीहत करो तो मुफ़ीद नहीं, मुब्तलाए हिंस रहता है, छोड़ दो तो उसी हिंस का गिरिफ़्तार। जिस तरह ज़बान निकालना कुत्ते की लाज़िमी तबीअत है ऐसी ही हिंस उन के लिये लाज़िम हो गई है। 347 : या'नी कुफ़्फ़ार जो आयाते इलाहिह्यह में तदब्बुर से ए'राज़ करते हैं और उन का काफ़िर होना **अल्लाह** के इल्मे अज़ली में है। 348 : या'नी हक़ से ए'राज़ कर के आयाते इलाहिह्यह में तदब्बुर करने से महरूम हो गए और येही दिल का ख़ास काम था। 349 : राहे हक़ व हिदायत और आयाते इलाहिह्यह और दलाइले तौहीद। 350 : मौइज़त व नसीहत को बग़ोश (वा'ज़ नसीहत को ग़ौर व तवज्जोह से सुन कर) क़बूल और वा वुजूद क़ल्बो ह्वास रखने के वोह उमूरे दीन में उन से नफ़अ नहीं उठाते लिहाज़ा 351 : कि अपने क़ल्बो ह्वास से मदारिके इल्मिया व मआरिफ़े रब्बानिया का इदराक नहीं करते हैं। खाने पीने के दुन्यवी कामों में तमाम ह्वानात भी अपने ह्वास से काम लेते हैं, इन्सान भी इतना ही करता रहा तो इस को बहाइम पर क्या फ़ज़ीलत।

أُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٤٩﴾ وَ لِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا ۚ وَذُرُّوهُ

वोही गुफ़लत में पड़े हैं और **अल्लाह** ही के हैं बहुत अच्छे नाम³⁵³ तो उसे उन से पुकारो और उन्हें छोड़ दो

الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ ۖ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٥٠﴾ وَ

जो उस के नामों में हक़ से निकलते हैं³⁵⁴ वोह जल्द अपना किया पाएंगे और

مِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةً يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ ﴿١٥١﴾ وَالَّذِينَ كَذَّبُوا

हमारे बनाए हुआओं में एक गुरौह वोह है कि हक़ बताएं और उस पर इन्साफ़ करें³⁵⁵ और जिन्हों ने हमारी आयतें

بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٥٢﴾ وَأُمْلِي لَهُمْ ۚ إِنَّ

झुटलाई जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता³⁵⁶ अज़ाब की तरफ़ ले जाएंगे जहां से उन्हें ख़बर न होगी और मैं उन्हें ढील दूंगा³⁵⁷ बेशक

كَيْدِي مُتَيِّنٌ ﴿١٥٣﴾ أَوْلَمْ يَتَفَكَّرُوا ۚ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِنْ جِنَّةٍ ۖ إِنُّ هُوَ

मेरी ख़ुफ़या तदबीर बहुत पक्की है³⁵⁸ क्या सोचते नहीं कि उन के साहिब को जुनून से कुछ अलाका (तअल्लुक) नहीं वोह तो साफ़

الْإِنذِيرُ مُبِينٌ ﴿١٥٤﴾ أَوْلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا

डर सुनाने वाले हैं³⁵⁹ क्या उन्होंने ने निगाह न की आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत में और जो जो

352 : क्यूं कि चौपाया भी अपने नफ़् की तरफ़ बढ़ता है और ज़र्र से बचता और उस से पीछे हटता है और काफ़िर जहन्नम की राह चल कर अपना ज़र्र इख़्तियार करता है तो इस से बदतर हुवा । आदमी रूहानी, शहवानी, समावी, अर्जी है जब इस की रूह शहवात पर ग़ालिब हो जाती है तो मलाएका से फ़ाइक हो जाता है और जब शहवात रूह पर ग़लबा पा जाती हैं तो ज़मीन के जानवरों से बदतर हो जाता है ।

353 : हदीस शरीफ़ में है **अल्लाह** तआला के निनानव⁹⁹ नाम जिस किसी ने याद कर लिये जन्ती हुवा । उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि अस्माए इलाहियह निनानवे में मुहसर नहीं हैं, हदीस का मक़सूद सिर्फ़ येह है कि इतने नामों के याद करने से इन्सान जन्ती हो जाता है ।

शाने नुज़ूल : अबू जहल ने कहा था कि मुहम्मद (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) का दा'वा तो येह है कि वोह एक परवर्दगार की इबादत करते हैं फिर वोह **अल्लाह** और रहमान दो को क्यूं पुकारते हैं ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और उस जाहिले बे ख़िरद (बे अक़ल) को बताया गया कि मा'बूद तो एक ही है नाम उस के बहुत हैं । **354 :** उस के नामों में हक़ व इस्तिकामत से निकलना कई तरह पर है । **मसाइल :** एक तो येह कि उस के नामों को कुछ बिगाड़ कर ग़ैरों पर इत्लाक़ करना जैसा कि मुश्रीकान ने "इलाह" का "लात" और "अजीज" का "उज़्ज़ा" और "मन्नान" का "मनात" कर के अपने बुतों के नाम रखे थे, येह नामों में हक़ से तजावुज़ और ना जाइज़ है । दूसरे येह कि **अल्लाह** तआला के लिये ऐसा नाम मुकरर किया जाए जो कुरआन व हदीस में न आया हो येह भी जाइज़ नहीं, जैसे कि सखी या रफ़ीक़ कहना क्यूं कि **अल्लाह** तआला के अस्माए तौकीफ़िया (या'नी शरीअत से ही मा'लूम हो सकते) हैं । तीसरे हुस्ने अदब की रिआयत करना, तो फ़क़त **يا صَاحِبُ يَمانع يا مَعْطَى يا خَالِقُ الخَلْق** कहना जाइज़ नहीं बल्कि दूसरे अस्मा के साथ मिला कर कहा जाएगा **يا مَعْطَى يا مَعْطَى يا خَالِقُ الخَلْق** । चौथे येह कि **अल्लाह** तआला के लिये कोई ऐसा नाम मुकरर किया जाए जिस के मा'ना फ़ासिद हों, येह भी बहुत सख़्त ना जाइज़ है जैसे कि लफ़्ज़ "राम" और "परमात्मा" वग़ैरा । **पन्जुम** ऐसे अस्मा का इत्लाक़ जिन के मा'ना मा'लूम नहीं हैं और येह नहीं जाना जा सकता कि वोह जलाले इलाही के लाइक़ हैं या नहीं **355 :** येह गुरौह हक़ पजोह (अहले हक़) उलमा और हादियाने दीन का है । इस आयत से येह मस्अला साबित हुवा कि हर ज़माने के अहले हक़ का इज्माअ हुज्जत है और येह भी साबित हुवा कि कोई ज़माना हक़ परस्तों और दीन के हादियों से ख़ाली न होगा जैसा कि हदीस शरीफ़ में है कि एक गुरौह मेरी उम्मत का ता कियामत दीने हक़ पर काइम रहेगा, उस को किसी की अदावत व मुख़ालफ़त ज़र्र न पहुंचा सकेगी । **356 :** या'नी तदरीजी **357 :** उन की उम्रें दराज़ कर के **358 :** और मेरी गिरिफ़्त सख़्त । **359** **शाने नुज़ूल :** जब नबिव्ये करीम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने कोहे सफ़ा पर चढ़ कर शब के वक़्त कबीले कबीले को पुकारा और फ़रमाया कि मैं तुम्हें अज़ाबे इलाही से डराने वाला हूं और आप ने उन्हें **अल्लाह** का ख़ौफ़ दिलाया और पेश आने वाले हवादिस का ज़िक़्र किया तो उन में से किसी ने आप की तरफ़ जुनून की निस्वत की इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया क्या उन्होंने ने फ़िक़्रो तअम्मूल से काम न लिया

خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ۗ وَأَنْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ۚ

चीज् **अल्लाह** ने बनाई³⁶⁰ और यह कि शायद उन का वा'दा नज़दीक आ गया हो³⁶¹

فِي آيٍ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ۝ (١٨٥) مَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ ۗ وَ

तो इस के बा'द और कौन सी बात पर यकीन लाएंगे³⁶² जिसे **अल्लाह** गुमराह करे उसे कोई राह दिखाने वाला नहीं और

يَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ (١٨٦) يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ

उन्हें छोड़ता है कि अपनी सरकशी में भटका करें तुम से क़ियामत को पूछते हैं³⁶³ कि वोह कब को ठहरी है

مُرْسُهَا ۗ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّي ۚ لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ۗ ثَقُلَتْ

(कब आएगी) तुम फ़रमाओ उस का इल्म तो मेरे रब के पास है उसे वोही उस के वक़्त पर ज़ाहिर करेगा³⁶⁴ भारी पड़ रही है

فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۗ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ

आस्मानों और ज़मीन में तुम पर न आएगी मगर अचानक तुम से ऐसा पूछते हैं गोया तुम ने उसे ख़ूब तहक़ीक

عَنْهَا ۗ قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ (١٨٧) قُلْ

कर रखा है तुम फ़रमाओ उस का इल्म तो **अल्लाह** ही के पास है लेकिन बहुत लोग जानते नहीं³⁶⁵ तुम फ़रमाओ

لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۗ وَلَوْ كُنْتَ أَعْلَمُ

मैं अपनी जान के भले बुरे का खुद मुख्तार नहीं³⁶⁶ मगर जो **अल्लाह** चाहे³⁶⁷ और अगर मैं ग़ैब जान

और आक़िबत अन्देशी व दूरबीनी बिल्कुल बालाए ताक़ रख दी और यह देख कर कि सथियदुल अम्बिया **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** अक़वाल व अफ़आल में उन के मुखालिफ़ हैं और दुन्या और इस की लज़्ज़तों से आप ने मुंह फेर लिया है, आख़िरत की तरफ़ मुतवज्जेह हैं और **अल्लाह** तआला की तरफ़ दा'वत देने और उस का ख़ौफ़ दिलाने में शबो रोज़ मशगूल हैं, उन लोगों ने आप की तरफ़ जुनून की निस्बत कर दी, यह उन की ग़लती है। **360** : उन सब में उस की वहदानियत और कमाले हिकमतो कुदरत की रोशन दलीलें हैं। **361** : और वोह कुफ़्र पर मर जाएं और हमेशा के लिये जहन्मनी हो जाएं, ऐसे हाल में आक़िल पर ज़रूरी है कि वोह सोचे समझे दलाइल पर नज़र करे। **362** : या'नी कुरआने पाक के बा'द और कोई किताब और सथियदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** के बा'द और कोई रसूल आने वाला नहीं जिस का इन्तिज़ार हो क्यूं कि आप ख़ातमुल अम्बिया हैं। **363** शाने नुज़ूल : हज़रते इब्ने अब्बास **رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا** से मरवी है कि यहूदियों ने नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** से कहा था कि अगर आप नबी हैं तो हमें बताइये कि क़ियामत कब काइम होगी ? क्यूं कि हमें इस का वक़्त मा'लूम है, इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। **364** : क़ियामत के वक़्त का बताना रिसालत के लवाज़िम से नहीं है जैसा कि तुम ने क़रार दिया और ऐ यहूद ! तुम ने जो इस का वक़्त जानने का दा'वा किया यह भी ग़लत है, **अल्लाह** तआला ने इस को मख़फ़ी किया है और इस में उस की हिकमत है। **365** : इस के इख़फ़ा की हिकमत तफ़सीरे रूहुल बयान में है कि बा'ज मशाइख़ इस तरफ़ गए हैं कि नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** को ब ए'लामे इलाही (**अल्लाह** तआला की अता से) वक़ते क़ियामत का इल्म है और यह हस्स आयत के मुनाफ़ी नहीं। **366** शाने नुज़ूल : ग़ज़्वए बनी मुस्तलिफ़ से वापसी के वक़्त राह में तेज़ हवा चली चौपाए भागे तो नबिय्ये करीम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने ख़बर दी कि मदीनए तथियबा में रिफ़ाआ का इन्तिकाल हो गया और यह भी फ़रमाया कि देखो मेरा नाक़ा कहाँ है, अब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ अपनी क़ौम से कहने लगा इन का कैसा अजीब हाल है कि मदीने में मरने वाले की तो ख़बर दे रहे हैं और अपनी नाक़ा मा'लूम ही नहीं कि कहां है, सथियदे आलम **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** पर उस का यह क़ौल भी मख़फ़ी न रहा, हुज़ूर ने फ़रमाया मुनाफ़िक़ लोग ऐसा ऐसा कहते हैं और मेरा नाक़ा उस घाटी में है उस की नकेल एक दरख़्त में उलझ गई है। चुनान्चे जैसा फ़रमाया था उसी शान से वोह नाक़ा पाया गया इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। **367** : वोह मालिके हक़ीक़ी है जो कुछ है उस की

الْغَيْبَ لَا سَتَكْثُرَتْ مِنَ الْخَيْرِ ۗ وَمَا سَنِي السُّوءِ ۗ إِنَّ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ

लिया करता तो यूँ होता कि मैं ने बहुत भलाई जम्भ कर ली और मुझे कोई बुराई न पहुँची³⁶⁸ मैं तो येही डर³⁶⁹

وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۙ هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَ

और खुशी सुनाने वाला हूँ उन्हें जो ईमान रखते हैं वोही है जिस ने तुम्हें एक जान से पैदा किया³⁷⁰ और

جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَبَلٌ خَفِيفًا

उसी में से उस का जोड़ा बनाया³⁷¹ कि उस से चैन (आराम) पाए फिर जब मर्द उस पर छाया उसे एक हलका सा पेट रह गया³⁷² तो उसे लिये

فَمَرَّتْ بِهِ ۚ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ دَعَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَنُكَوِّنَنَّ

फिरा की (चलती फिरती रही) फिर जब बोझल पड़ी दोनों ने अपने रब **الله** से दुआ की ज़रूर अगर तू हमें जैसा चाहिये बच्चा देगा तो बेशक हम

مِنَ الشَّاكِرِينَ ۙ فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلْنَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيهَا ۖ أَتَاهُمَا

शुक्र गुज़ार होंगे फिर जब उस ने उन्हें जैसा चाहिये बच्चा अता फ़रमाया उन्होंने ने उस की अता में उस के साझी (शरीक) ठहराए

فَتَعَلَى اللَّهِ عَسَىٰ يُشْرِكُونَ ۙ أَيُّشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ

तो **الله** को बरतरी है उन के शिर्क से³⁷³ क्या उसे शरीक करते हैं जो कुछ न बनाए³⁷⁴ और वोह

अता से है। **368** : येह कलाम बराहे अदब व तवाजोअ है, मा'ना येह है कि मैं अपनी ज़ात से ग़ैब नहीं जानता जो जानता हूँ वोह **الله**

तआला की इत्तिआअ और उस की अता से। (عَارُونَ) हज़रते मुर्तजिम **فُؤَادُ سُرَّةُ** ने फ़रमाया भलाई जम्भ करना और बुराई न पहुँचना उसी के

इख़्तियार में हो सकता है जो ज़ाती कुदरत रखे और ज़ाती कुदरत वोही रखेगा जिस का इल्म भी ज़ाती हो क्यूँ कि जिस की एक सिफ़त ज़ाती

है उस के तमाम सिफ़त ज़ाती, तो मा'ना येह हुए कि अगर मुझे ग़ैब का इल्म ज़ाती होता तो कुदरत भी ज़ाती होती और मैं भलाई जम्भ कर

लेता और बुराई न पहुँचने देता, भलाई से मुराद राहतेँ और काम्याबियाँ और दुश्मनों पर ग़लबा है और बुराइयों से तंगी व तक्लीफ़ और दुश्मनों

का ग़ालिब आना है। येह भी हो सकता है कि भलाई से मुराद सरकशों का मुतीअ और ना फ़रमानों का फ़रमाँ बरदार और काफ़िरोँ का मोमिन

कर लेना हो और बुराई से बद बख़्त लोगों का बा वुजूद दा'वत के महरूम रह जाना, तो हासिले कलाम येह होगा कि अगर मैं नफ़अ व ज़र

का ज़ाती इख़्तियार रखता तो ऐ मुनाफ़िक्कीन व काफ़िरीन ! तुम्हें सब को मोमिन कर डालता और तुम्हारी कुफ़्री हालत देखने की तक्लीफ़ मुझे

न पहुँचती। **369** : सुनाने वाला हूँ काफ़िरोँ को **370** : इकिरमा का क़ौल है कि इस आयत में ख़िताब आम है हर एक शख़्स को और मा'ना

येह है कि **الله** वोही है जिस ने तुम में से हर एक को एक जान से या'नी उस के बाप से पैदा किया और उस की जिन्स से उस की बीबी

को बनाया फिर जब वोह दोनों जम्भ हुए और हम्ल जाहिर हुवा और उन दोनों ने तन्दुरुस्त बच्चे की दुआ की और ऐसा बच्चा मिलने पर

अदाए शुक्र का अहद किया फिर **الله** तआला ने उन्हें वैसा ही बच्चा इनायत फ़रमाया। उन की हालत येह हुई कि कभी तो वोह उस बच्चे

को तबाएअ की तरफ़ निस्बत करते हैं जैसे दहरियों का हाल है, कभी सितारों की तरफ़ जैसा कवाकिब परस्तों का तरीका है, कभी बुतों की तरफ़

जैसा बुत परस्तों का दस्तूर है **الله** तआला ने फ़रमाया कि वोह उन के इस शिर्क से बरतर है। (يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ يُشْرِكُوْنَ) **371** : या'नी उस के बाप की जिन्स

से उस की बीबी बनाई। **372** : मर्द का छना किनाया है जिमाअ करने से और हलका सा पेट रहना इब्तिदाए हम्ल की हालत का बयान है।

373 : बा'ज मुफ़सिरीन का क़ौल है कि इस आयत में कुरैश को ख़िताब है जो कुसय की औलाद हैं उन से फ़रमाया गया कि तुम्हें एक शख़्स

कुसय से पैदा किया और उस की बीबी उसी की जिन्स से अरबी कुरशी की ताकि उस से चैन व आराम पाए फिर जब उन की दरख़्वास्त के

मुताबिक् उन्हें तन्दुरुस्त बच्चा इनायत किया तो उन्होंने ने **الله** की इस अता में दूसरों को शरीक बनाया और अपने चारों बेटों का नाम अब्दे

मनाफ़, अब्दुल उज़्ज़ा, अब्दे कुसय और अब्दुद्दार रखा। **374** : या'नी बुतों को जिन्हों ने कुछ नहीं बनाया।

يُخْلَقُونَ ١٩١ وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنْفُسُهُمْ يَنْصُرُونَ ١٩٢ وَإِنْ

खुद बनाए हुए हैं और न वोह उन को कोई मदद पहुंचा सके और न अपनी जानों की मदद करे³⁷⁵ और अगर

تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءَ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنْتُمْ

तुम उन्हें³⁷⁶ राह की तरफ बुलाओ तो तुम्हारे पीछे न आए³⁷⁷ तुम पर एक सा है चाहे उन्हें पुकारो या

صَامِتُونَ ١٩٣ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادًا أَمْثَلِكُمْ فَادْعُوهُمْ

चुप रहो³⁷⁸ बेशक वोह जिन को तुम **अल्लाह** के सिवा पूजते हो तुम्हारी तरह बन्दे हैं³⁷⁹ तो उन्हें पुकारो

فَلَيْسَتْ جِيبُوكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ١٩٤ أَلَمْ لَهُمْ آرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا

फिर वोह तुम्हें जवाब दें अगर तुम सच्चे हो क्या उन के पाउं हैं जिन से चले

أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبِطِشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ

या उन के हाथ हैं जिन से गिरिफ्त करें या उन के आंखें हैं जिन से देखें या उन के

أَذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا قُلْ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُوا فَلَا تَنْظُرُونَ ١٩٥

कान हैं जिन से सुने³⁸⁰ तुम फरमाओ कि अपने शरीकों को पुकारो और मुझ पर दाउं चलो और मुझे मोहलत न दो³⁸¹

إِنَّ وَلِيَ اللَّهِ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۗ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ١٩٦ وَالَّذِينَ

बेशक मेरा वाली **अल्लाह** है जिस ने किताब उतारी³⁸² और वोह नेकों को दोस्त रखता है³⁸³ और जिन्हें

375 : इस में बुतों की बे कद्री और बुल्लाने शिर्क का बयान और मुशिरकीन के कमाले जहल का इज़हार है और बताया गया है कि इबादत का मुस्तहिक वोही हो सकता है जो आबिद को नफ़ पहुंचाने और उस का ज़र दफ़ करने की कुदरत रखता हो। मुशिरकीन जिन बुतों को पूजते हैं उन की बे कुदरती इस दरजे की है कि वोह किसी चीज़ के बनाने वाले नहीं किसी चीज़ के बनाने वाले तो क्या होते खुद अपनी जात में दूसरे से बे नियाज़ नहीं, आप मख़्लूक हैं, बनाने वाले के मोहताज हैं, इस से बढ़ कर बे इख़्तियारी येह है कि वोह किसी की मदद नहीं कर सकते और किसी की क्या मदद करें खुद उन्हें ज़र पहुंचे तो दफ़ नहीं कर सकते, कोई उन्हें तोड़ दे, गिरा दे, जो चाहे करे, वोह उस से अपनी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते ऐसे मजबूर बे इख़्तियार को पूजना इन्तिहा दरजे का जहल है। **376** : या'नी बुतों को **377** : क्यूं कि वोह न सुन सकते हैं न समझ सकते हैं **378** : वोह बहर हाल आजिज़ हैं, ऐसे को पूजना और मा'बूद बनाना बड़ी बे ख़िरदी (बे अक्ली) है **379** : और **अल्लाह** के मम्लूक व मख़्लूक, किसी तरह पूजने के काबिल नहीं, इस पर भी अगर तुम उन्हें मा'बूद कहते हो **380** : येह कुछ भी नहीं, तो फिर अपने से कमतर को पूज कर क्यूं ज़लील होते हो। **381** शाने नुज़ूल : सथ्यदे आलम **سَلَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** ने जब बुत परस्ती की मजम्मत की और बुतों की आजिजी और बे इख़्तियारी का बयान फ़रमाया तो मुशिरकीन ने धम्काया और कहा कि बुतों को बुरा कहने वाले तबाह हो जाते हैं, बरबाद हो जाते हैं, येह बुत उन्हें हलाक कर देते हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई कि अगर बुतों में कुछ कुदरत समझते हो तो उन्हें पुकारो ! और मेरी नुक्सान रसानी में उन से मदद लो और तुम भी जो मक्रो फ़रेब कर सकते हो वोह मेरे मुक़ाबले में करो और इस में देर न करो, मुझे तुम्हारी और तुम्हारे मा'बूदों की कुछ भी परवाह नहीं और तुम सब मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। **382** : और मेरी तरफ़ वह्य भेजी और मेरी इज़्ज़त की। **383** : और उन का हाफ़िज़ो नासिर है, उस पर भरोसा रखने वालों को मुशिरकीन वगैरा का क्या अन्देशा तुम और तुम्हारे मा'बूद मुझे कुछ नुक्सान नहीं पहुंचा सकते।

تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُ لَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَصُرُونَ ﴿١٩٤﴾ وَ

उस के सिवा पूजते हो वोह तुम्हारी मदद नहीं कर सकते और न खुद अपनी मदद करें³⁸⁴ और

إِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَسْمَعُوا وَتَرَاهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ

अगर उन्हें राह की तरफ बुलाओ तो न सुनें और तू उन्हें देखे कि वोह तेरी तरफ देख रहे हैं³⁸⁵ और उन्हें

لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٥﴾ خذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ ﴿١٩٩﴾

कुछ भी नहीं सूझता ऐ महबूब मुआफ़ करना इख्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠٠﴾

और ऐ सुनने वाले अगर शैतान तुझे कोई कोंचा दे (किसी बुरे काम पर उक्साए)³⁸⁶ तो **اللَّهُ** की पनाह मांग बेशक वोही सुनता जानता है

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَئِفٌ مِنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ

बेशक वोह जो डर वाले हैं जब उन्हें किसी शैतानी खयाल की ठेस लगती है होशियार हो जाते हैं उसी वक़्त उन की

مُبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾ وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّوْنَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾ وَإِذَا

आंखें खुल जाती हैं³⁸⁷ और वोह जो शैतानों के भाई हैं³⁸⁸ शैतान उन्हें गुमराही में खींचते हैं फिर गई (कोताही) नहीं करते और ऐ महबूब

لَمَّا تَأْتِيهِمْ بَايَةٌ قَالُوا الْوَلَا اجْتَبَيْتَهَا قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِنْ

जब तुम उन के पास कोई आयत न लाओ तो कहते हैं तुम ने दिल से क्यूं न बनाई तुम फ़रमाओ मैं तो उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ मेरे रब से

رَبِّي ۚ هَذَا بَصَائِرٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠٣﴾ وَ

वह्य होती है यह तुम्हारे रब की तरफ़ से आंखें खोलना है और हिदायत और रहमत मुसलमानों के लिये और

إِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ وَانصِتُوا الْعَلَمَ تَرْحَمُونَ ﴿٢٠٤﴾ وَإِذَا كُر

जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे कान लगा कर सुनो और खामोश रहो कि तुम पर रहम हो³⁸⁹ और अपने रब

384 : तो मेरा क्या बिगाड़ सकेंगे । **385** : क्यूं कि बुतों की तस्वीरें इस शकल की बनाई जाती थीं जैसे कोई देख रहा है । **386** : कोई वस्वसा डाले **387** : और वोह उस वस्वसे को दूर कर देते हैं और **اللَّهُ** तआला की तरफ़ रुजूअ करते हैं । **388** : या'नी कुपफ़ार । **389** मस्अला : इस आयत से साबित हुवा कि जिस वक़्त कुरआने करीम पढ़ा जाए ख़ाह नमाज़ में या ख़ारिजे नमाज़ उस वक़्त सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब है, जुम्हूर सहाबा **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ** इस तरफ़ हैं कि येह आयत मुक़तदी के सुनने और ख़ामोश रहने के बाब में है और एक कौल येह है कि इस में खुल्वा सुनने के लिये गोश बर आवाज़ होने (खुल्वा बग़ौर सुनने) और ख़ामोश रहने का हुक्म है और एक कौल येह है कि इस से नमाज़ व खुल्वा दोनों में बग़ौर सुनना और ख़ामोश रहना वाजिब साबित होता है । हज़ुरते इब्ने मस्ऊद **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ** की हदीस में है आप ने कुछ लोगों को सुना कि वोह नमाज़ में इमाम के साथ क़िराअत करते हैं तो नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर फ़रमाया क्या अभी वक़्त नहीं आया कि तुम इस आयत के मा'ना समझो । ग़रज़ इस आयत से क़िराअत खल्फ़ुल इमाम (नमाज़े बा जमाअत में इमाम के पीछे क़िराअत) की मुमानअत साबित होती है और कोई हदीस ऐसी नहीं है जिस को इस के मुक़ाबिल हुज्जत क़रार दिया जा सके । क़िराअत खल्फ़ुल इमाम की ताईद में सब से ज़ियादा

رَبِّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرَّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ

को अपने दिल में याद करो³⁹⁰ जारी (आजिजी) और डर से और बे आवाज निकले ज़बान से सुब्

وَالْأَصَالِ وَلَا تَكُنْ مِنَ الْغَفِيلِينَ ﴿٢٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا

और शाम³⁹¹ और गाफ़िलों में न होना बेशक वोह जो तेरे रब के पास हैं³⁹²

يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ ﴿٢٦﴾

उस की इबादत से तकब्बुर नहीं करते और उस की पाकी बोलते और उसी को सज्दा करते हैं³⁹³

﴿ آيَاتُهَا ٤٥ ﴾ ﴿ سُورَةُ الْأَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ ٨٨ ﴾ ﴿ رُكُوعَاتُهَا ١٠ ﴾

सूरए अन्फ़ाल मदनिय्या है, इस में पछतर आयतें और दस रूकूअ हैं¹

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ जो बहुत मेहरबान रहम वाला

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ ۗ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَ

ऐ महबूब तुम से ग़नीमतों को पूछते हैं² तुम फ़रमाओ ग़नीमतों के मालिक अल्लाह व रसूल हैं³ तो अल्लाह से डरो⁴ और

ए'तिमाद जिस हदीस पर किया जाता है वोह येह है : "لَا صَلَوةَ إِلَّا بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ" मगर इस हदीस से क़िराअत खल्फुल इमाम का वजुब तो

साबित नहीं होता सिफ़ इतना साबित होता है कि बिगैर फ़ातिहा के नमाज़ कामिल नहीं होती तो जब कि हदीस : "قِرَاءَةُ الْإِمَامِ لَهُ قِرَاءَةٌ" से

साबित है कि इमाम का क़िराअत करना ही मुक़तदी का क़िराअत करना है तो जब इमाम ने क़िराअत की और मुक़तदी साकित रहा तो उस की

क़िराअत हुक्मिया हुई उस की नमाज़ बे क़िराअत कहां रही, येह क़िराअत हुक्मिया है तो इमाम के पीछे क़िराअत न करने से कुरआन व हदीस

दोनों पर अमल हो जाता है और क़िराअत करने से आयत का इत्तिबाअ तर्क होता है, लिहाज़ा ज़रूरी है कि इमाम के पीछे फ़ातिहा वगैरा कुछ

न पढ़े । 390 : ऊपर की आयत के बा'द इस आयत के देखने से मा'लूम होता है कि कुरआन शरीफ़ सुनने वाले को ख़ामोश रहना और बे

आवाज़ निकाले दिल में ज़िक्र करना या'नी अज़मतो जलाले इलाही का इस्तिहज़ार (मौजूद होना) लाज़िम है كَذَافِي تَفْسِيرِ ابْنِ جُرَيْرٍ । इस से

इमाम के पीछे बुलन्द या पस्त आवाज़ से क़िराअत की मुमानअत साबित होती है और दिल में अज़मतो जलाले हक़ का इस्तिहज़ार ज़िक्रे क़ल्बी

है । मस्अला : ज़िक्र बिल जह्र और ज़िक्र बिल इख़फ़ा दोनों में नुसस वारिद हैं जिस शख्स को जिस किस्म के ज़िक्र में ज़ौको शौके ताम व

इख़लासे कामिल मुयस्सर हो उस के लिये वोही अफ़ज़ल है, كَرَانِي رَوَاهُ ، वगैरा । 391 : शाम अस् व मग़रिब के दरमियान का वक़्त है, इन

दोनों वक़्तों में ज़िक्र अफ़ज़ल है क्यूं कि नमाज़े फ़ज़्र के बा'द तुलूए आफ़ताब तक और इसी तरह नमाज़े अस् के बा'द गुरुबे आफ़ताब तक

नमाज़ मम्नूअ है इस लिये इन वक़्तों में ज़िक्र मुस्तहब हुवा ताकि बन्दे के तमाम अवक़ात कुरबत व ताअत में मशगूल रहें । 392 : या'नी मलाइकए

मुकर्बबीन 393 : येह आयत आयाते सज्दा में से है, इन के पढ़ने और सुनने वाले दोनों पर सज्दा लाज़िम हो जाता है । मुस्लिम शरीफ़ की हदीस

में है : जब आदमी आयते सज्दा पढ़ कर सज्दा करता है तो शैतान रोता है और कहता है अफ़सोस बनी आदम को सज्दे का हुक्म दिया गया

वोह सज्दा कर के जन्नती हुवा और मुझे सज्दे का हुक्म दिया गया तो मैं इन्कार कर के जहन्नमी हो गया । 1 : येह सूरत मदनी है बजुज़ सात

आयतों के जो मक्कए मुकर्मा में नाज़िल हुई और "إِذْ يَنْكُرُ بِكَ الَّذِينَ" से शुरूअ होती हैं, इस में पछतर आयतें और एक हज़ार पछतर कलिमे

और पांच हज़ार अस्सी हुरूफ़ हैं । 2 शाने नुज़ूल : हज़रते उ़बादा बिन सामित رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : उन्होंने ने फ़रमाया कि येह आयत

हम अहले बद के हक़ में नाज़िल हुई जब ग़नीमत के मुआमले में हमारे दरमियान इख़िलाफ़ पैदा हुवा और बद मजगी की नौबत आ गई तो

अल्लाह तआला ने मुआमला हमारे हाथ से निकाल कर अपने रसूल صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ के सिपुर्द किया । आप ने वोह माल बराबर तक्सीम कर

दिया । 3 : जैसे चाहे तक्सीम फ़रमाएं । 4 : और बाहम इख़िलाफ़ न करो ।

الْمَزْلُ الثَّانِي ﴿ 2 ﴾